सँझवत

भोजपुरी साहित्यिकी

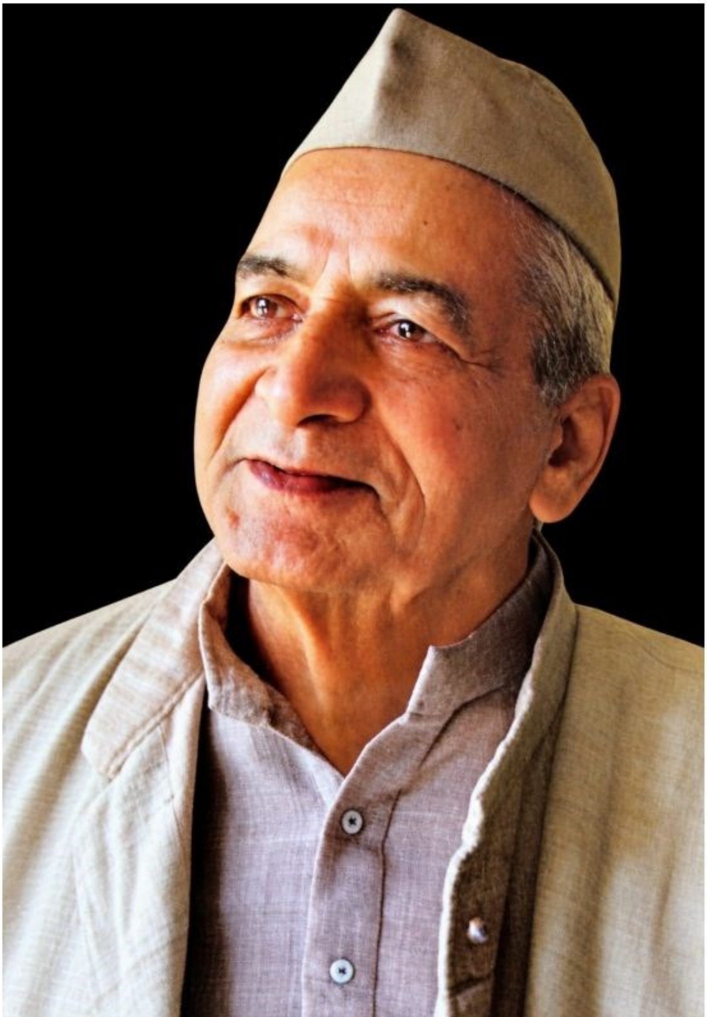

डॉ. नंदकिशोर तिवारी विशेषांक

10

संपादक : डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

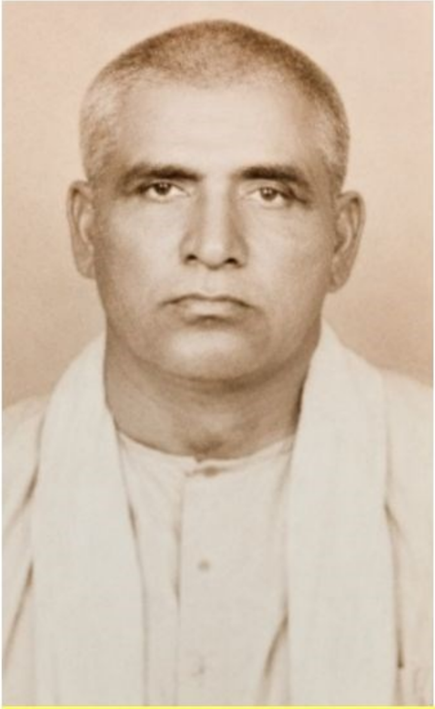

पिताजी स्व. राधाप्रसाद तिवारी	माताजी स्व. प्राणपति देवी

नीचे- डॉ. नंदकिशोर तिवारी

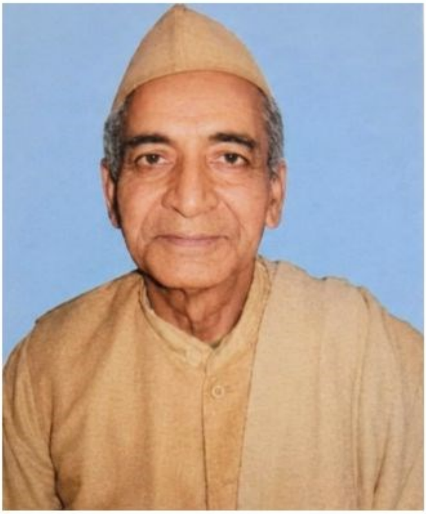

सँझवत
भोजपुरी साहित्यिकी

अंक 10
अप्रैल, 2026

परामर्श मंडल
डॉ. नंदकिशोर तिवारी
डॉ. नर्वदेश्वर राय
डॉ. ब्रजभूषण मिश्र
श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी
डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'
डॉ. नीरज सिंह
डॉ. दिवाकर पांडेय
डॉ. जयकांत सिंह 'जय'
डॉ. विष्णुदेव तिवारी

संरक्षक
श्री कृष्ण कुमार
श्री श्रीभगवान पांडेय

संपादक
डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

सह संपादक : सीमा मिश्र

मीडिया : अँजोरिया

चित्र/पेंटिंग : पंकज तिवारी

संपर्क : देवनगर, निकट- पिपरा प्राइमरी गवर्नमेंट स्कूल, पोल नं. 28, पो.- मनोहरपुर कछुआरा, पटना-800030
मो. 9831649817

ई मेल :
sampadaksanjhavat@gmail.com

सहयोग : 100 रुपया

प्रकाशित रचनन का विचारन से पत्रिका-परिवार के सहमति जरूरी नइखे। अपना रचना खातिर लेखक खुदे जिम्मेदार होइहें। विवाद का स्थिति में न्यायक्षेत्र पटना होई। स्वत्वाधिकारी रामरक्षा मिश्र विमल द्वारा संपादित, अक्षर संयोजन अउर प्रकाशित। अव्यावसायिक प्रकाशन।

अनुक्रम

पृष्ठ सं. विषय

2. संपादकीय- भोजपुरी गौरव डॉ. नंदकिशोर तिवारी
9. डॉ. नंदकिशोर तिवारी : सारस्वत परिचय एवं कृतित्व
16. पत्थल के मेहरारू : बाँग्ला से अनूदित नाट्यकृति में भोजपुरियत के रंग- भगवती प्रसाद द्विवेदी
22. निरगुनिया संतों का माया-दर्शन... -डॉ. दिवाकर पाण्डेय
25. भोजपुरी निबंध आ नंदकिशोर तिवारी- बलभद्र
31. ललित निबंध- गाँती- डॉ. नंदकिशोर तिवारी
36. प्रो. (डॉ.) नन्दकिशोर तिवारी द्वारा कइल-करावल शोध-कार्य- डॉ. अरुण मोहन भारवि
40. डॉ. नंदकिशोर तिवारी के पत्रकारिता... - डॉ. विमल
45. भास के महत्व आउर बिसेसता- डॉ. नंदकिशोर तिवारी
49. भास रचित नाटक 'अभिषेक' के...-डॉ. ब्रज भूषण मिश्र
52. भोजपुरी में उल्थन के मसला... - दिनेश पाण्डेय
57. डॉ. नंदकिशोर तिवारी द्वारा अनुवादित...-डॉ. नन्दजी दूबे
60. 'उरुभंग' अनुवाद के औचित्य- डॉ. दिवाकर पाण्डेय
63. 'सपन सुनरी' हमरा नजर में- उमेश कुमार पाठक 'रवि'
67. मध्यम व्यायोग : संस्कृत का शास्त्रीयता अउर भोजपुरी का लोक-संवेदना के सुंदर संगम- डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल
70. दूतवाक्यम, भोजपुरी भासा अउरी... - पंकज तिवारी
74. डॉ. नंदकिशोर तिवारी आ ...काव्यानुवाद -रामेन्द्र मिश्र
76. डॉ. नंदकिशोर तिवारी के संपादन कौशल- डॉ. विमल
80. 'सुरसती' का प्रवेशांक के सम्पादकीय- डॉ. नंदकिशोर तिवारी
83. 'सुरसती' के संपादक डॉ. नंदकिशोर तिवारी- सीमा मिश्र
86. संस्मरण- भगवान नंदकिशोर जी के उमर देस- डॉ. शिववंश पाण्डेय
88. संस्मरण- साधक-सिद्ध-सुजान... - श्रीभगवान पाण्डेय
93. संस्मरण- गुरु गोविंद सम...-डॉ. अयोध्या प्र. उपाध्याय
96. संस्मरण- प्रो. नंदकिशोर तिवारी...डॉ. इन्द्र नारायण सिंह
100. संस्मरण- डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी : एगो महान स्तंभ - विद्या शंकर विद्यार्थी
102. संस्मरण- इयादि के ऊ पल- कन्हैया सिंह 'सदय'
105. संस्मरण- हमार गुरुदेव- रामरक्षा मिश्र विमल
112-124. साक्षात्कार-
कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे चाहीं
स्तंभ : सोस्ती सिरी पत्री लिखी... 21, 24, 35, 39
चलत-चलत एगो प्रस्ताव- 69

भोजपुरी गौरव डॉ. नंदकिशोर तिवारी

प्रोफेसर (डॉ.) नंदकिशोर तिवारी भाषा आ साहित्य के अप्रतिम विद्वान हईं। लेखक, आलोचक, संपादक आ भाषा वैज्ञानिक का रूप में हिंदी आ भोजपुरी साहित्य के उहाँ के योगदान रेखांकित करे लाएक बा। हमार अनुभव त ई कहता कि उहाँ अइसन विद्वान अब दुर्लभ बाड़े, जेकरा भीरी गइला पर भाषा, साहित्य, संस्कृति आ धर्मशास्त्र पर कइसनो प्रश्न कइल जाउ त ओकर उपयुक्त, व्यावहारिक आ प्रामाणिक उत्तर तत्काल मिल जाउ। विभिन्न पुस्तकन आ पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित जीवन वृत्त आ साक्षात्कार से डॉ. तिवारी का व्यक्तित्व के एगो अद्भुत छवि बनऽता।

कवनो समाज का सांस्कृतिक ऊँचाई के माप ओकर भवन, बाजार भा संस्थान से कम आ ओकरा विद्वान लोग का जीवन-मूल्य से ज्यादा कइल जाला। हर युग में कुछ अइसन लोग होले, जे अपना कृतित्व से अधिक अपना जीवन का कारन स्मरणीय बन जाले। ऊ खाली किताबे ना लिखेले, बलुक विचार का परंपरा के निर्माण करेले; खाली विद्यार्थी ना पढ़ावेले, बलुक मनुष्य बनावे के संस्कार देले; खाली भाषा के उपयोग ना करेले, बलुक ओकरा संभावना के विस्तार देले। डॉ. (प्रो.) नन्दकिशोर तिवारी एही श्रेणी के विरल साहित्य-साधक हईं। उनुका व्यक्तित्व के पहचान अध्यापक, आलोचक, संपादक, अनुवादक, भाषा वैज्ञानिक भा अध्यात्म-चिन्तक जइसन अलग-अलग परिचयन से पूरा ना हो सके। ई सभ मिलके भी उनका व्यक्तित्व के ओह समग्रता के पूरा व्यक्त नइखे कर पावत, जवना के आधार उनुकर जीवन-साधना बा।

जन्म आ नामकरण

डॉ. तिवारी के जन्म सन् 1938 में चैत्र शुक्ल एकादशी के भइल रहे, जवन नेट पर 10 अप्रैल, 1938 मिलऽता। चउथा क्लास में नामांकन का समय शिक्षक लोग घटा के सीधा-सीधा जनवरी, 1941 कइ दिहल, जवन औपचारिक रूप में आगा का पढ़ाई से नौकरी तक में अंकित होत गइल। उहाँके पैतृक गाँव 'बेरुकहीं' हटे, बाकिर उहाँके जन्म मामा के गाँव 'खरेन्दा' में भइल रहे। ई दूनों गाँव बिहार का कैमूर जिला (पुरान जिला 'शाहाबाद,' बाद में 'रोहतास') में अवस्थित बा। वर्तमान में तिवारी जी के मुख्य निवास सासाराम में बाटे। तिवारी जी का जन्म खातिर घर में जऽगि भइल रहे, एहसे नाम 'जगनारायण' रखाइल। बाद में उहाँके प्राथमिक शिक्षक पं० देवनारायण मिश्र जी 'नंदकिशोर' नामकरण कइलीं। उहाँका पिताजी के नाँव पं. राधाप्रसाद तिवारी

आ माताजी के नाँव प्राणपति देवी रहे।

प्रो. नन्दकिशोर तिवारी के बाबा (पितामह) पं. देवनारायण तिवारी विद्वान आ कर्मकांडी पंडित रहलीं। उनुकर बाबूजी पं. राधाप्रसाद तिवारी अत्यन्त धार्मिक, स्वाभिमानी, कर्मनिष्ठ आ परोपकारी स्वभाव के व्यक्ति रहीं। बाबूजी हमेशा भगवान राम आ काली माई के पूजा करत रहीं। घर में गाय के सेवा, तुलसी चौरा, कबीर आ तुलसी के पद गावल आ रोजाना मानस अउर गीता के पाठ कइल पारिवारिक जीवन के अंग रहे। बाबूजी का जीवन में बहुते अभाव आइल, बाकिर उहाँका कबहूँ हिम्मत ना हरलीं। चार गो बेटियन के बाद बहुत मनौती आ जऽगि के बाद प्रोफेसर साहेब के जनम भइल। बाबूजी अपना लइकन के उच्च शिक्षा देबे खातिर हर तरह के कष्ट सहलीं आ ई चाहत रहलीं कि लइका लोग संस्कारी आ शिक्षित बनसु।

शिक्षा

उहाँके प्राथमिक शिक्षा गाँव बेरुकहीं में भइल आ चउथा क्लास से मैट्रिक तक शंकर विद्यालय, तकिया में पढ़लीं। उहाँका आइ.ए. से बी.ए. ऑनर्स तक के पढ़ाई शान्ति प्रसाद जैन महाविद्यालय, सहसराम से कइलीं। बी०ए० तक के पढ़ाई खातिर घरहीं से साइकिल से आवे-जाए के परे। गाँव में पढ़ाई के साथ-साथ गृहस्थी, ढोर-डाङर के देख-रेख, खेत के सिंचाई आ दवनी में काम करे के परत रहे। पढ़ाई खातिर अलग से समय कम मिलत रहे, एही से खेत-खलिहान में चाहे रस्ते में किताब पढ़ के पाठ याद करे के परे। मास्टर साहेब के मार का डर से पाठ याद कइल जरूरी रहे। सातवाँ क्लास में साइकिल मिलला से बहुत आराम भइल। बाबूजी पुरोहिती आ कर्मकांड के श्लोक रटवा देत रहीं। एही बीच मइया के इच्छा पूरा करे खातिर उहाँ के बियाह जल्दी कर दिहल गइल।

विद्यार्थी जीवन में तिवारी जी निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता आ खेल-कूद में हमेशा पहिला नंबर पर रहत रहीं। तुलसी जयंती पर उनुका भाषण के बहुते प्रशंसा होत रहे। स्लो साइकिल रेस में पूरा शहर में प्रथम आइल रहीं। अतने ना, एसीसी कैडेट का रूप में कोशी बाँध निर्माण शिविर में भाग ले के पुरस्कार प्राप्त कइले रहीं। क्लास में तिवारी जी के गिनती हमेशा प्रथम श्रेणी का छात्रन में होत रहे।

तिवारी जी पटना विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) का सङ्हीं पी-एच.डी. आ डी. लिट्. कइलीं। इहाँका यू०जी०सी० का कनिष्ठ अउर वरिष्ठ फेलोशिप का अंतर्गत हिंदी आ संस्कृत में क्रमशः 'हिंदी काव्य शिल्प के विकास में महाकवि निराला की मनीषा और कला' अउर 'विशिष्ट वैदिक शब्दावली का अर्थानुशीलन' पर पोस्ट-डॉक्टरेट खातिर शोध कइलीं।

चरित्र निर्माण, शिक्षा-व्यवस्था आ अध्यापन

गया कॉलेज, गया से डॉ. तिवारी के अध्यापन कार्य शुरू भइल। शान्तिप्रसाद जैन महाविद्यालय, सहसराम का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के बहुत दिन तक अध्यक्ष

रहीं आ एकरा बाद में उहाँका जनवरी 1999 में बीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के आचार्य अउर हिंदी विभागाध्यक्ष का पद से अवकाश ग्रहण कइलीं।

अपना अध्यापन काल में आ ओकरा अलावे सेवानिवृत्ति का बादो डॉ. तिवारी के पढ़े-लिखे आ शोध निर्देशन से संतोष नइखे भइल, ऊ आजुओ चल रहल बा। उहाँका निर्देशन में शताधिक विद्वानन के हिन्दी, संस्कृत, दर्शन, भाषा विज्ञान, भोजपुरी अउर अन्य विषयन में डॉक्टरेट के उपाधि प्राप्त भइल बा।

तिवारी जी मानींले कि परिवारे मनुष्य के पहिल पाठशाला हटे। सत्य पर अडिग रहल, विपत्ति में धैर्य राखल आ परोपकार कइल ऊ अपना बाबूजी आ माई से सिखले। बाहर के वातावरण अनुकूल होखे चाहे ना, बाकिर पारिवारिक संस्कार मजबूत बा त आदमी राक्षसो का देश में विभीषण नियन सही रास्ता पर रह सकत बा। चरित्रे के निर्माण शिक्षा के असली उद्देश्य हटे, पैसा कमाइल साध्य ना हऽ, ऊ त साधन हटे।

बचपने से तिवारी जी के मास्टर बने के आ पढ़े-पढ़ावे के मन रहे। कॉलेज में प्राध्यापक बने के लालसा बचपने से रहे। ऊ अपना प्राध्यापकीय जीवन से शत-प्रतिशत संतुष्ट बाड़न। ऊ विद्यार्थी लोग के अपना लइका नियन मानि के उनुकर चिंता कइले, रात-रात भर जागि के शोधकर्ता छात्रन खातिर सामग्री जुटवले। ऊ मानेलन कि छात्रन के अपार प्रेम आ संतोषे उनुका जीवन के सबसे बड़ कमाई हटे।

लेखन का बारे में तिवारी जी के मान्यता बा कि लेखन स्वार्थ, पैसा चाहे पद खातिर ना होखे के चाहीं, बल्कि ई अंतरात्मा के पुकार आ साधना हटे। अध्यापन करत-करत विषय का गहराई में उतरला आ आलोचनात्मक प्रज्ञा से ही सही लेखन संभव होला।

उहाँका अध्यापन का सङे-सङे सामाजिक कार्य, संत-महात्मा लोगन का प्रवचन के संपादन आ प्रकाशन, पत्रिका ('हृदय संदेश', 'प्रत्याभिता', 'सुरसती') के नियमित संपादन आ डाक वितरण के काम करत रहीं। उहाँका हिंदी भाषा आ साहित्य का सङ्हीं दर्शनशास्त्र, इतिहास, संस्कृत, भाषाविज्ञान, भोजपुरी आदि अनेक विषयन का शोध छात्रन के भी मार्गदर्शन कइलीं। तिवारी जी कई गो शिक्षण संस्थान आ कॉलेज का स्थापना में भी आपन योगदान देले बानी।

साहित्य सृजन

डॉ. तिवारी लगभग पाँच दशक से शोध, आलोचना अउर साहित्य का विविध विधन में रचनारत बानी। डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी द्वारा भोजपुरी में संस्कृत कवि-नाटककार भास का तेरह नाटकन के काव्यानुवाद स्वतंत्र पुस्तक का रूप में प्रकाशित भइल बा। अनुवाद खातिर उहाँ के 'अनुवाद-श्री' पुरस्कार मिलल बाटे। उहाँका चर्चित कृतियन में 'भोजपुरी में चार सौ वैदिक शब्दों के स्रोतों का अर्थानुशीलन' भी शामिल बा। इहाँके भोजपुरी ललित निबंध संग्रह 'बतकही' दू भाग में प्रकाशित बा। एकरा अलावे देश भर का भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकन में उहाँके शताधिक रचना प्रकाशित बाड़ी सन। आकाशवाणी का पटना, सहसराम अउर अन्य केंद्रन से सन् 1980 से अब तक

उहाँके दर्जनों वार्ता प्रसारित भइल बाड़ी सन।

डॉ. तिवारी के सृजन खातिर प्रिय साहित्यिक विधा शुरू में कविता रहे, बाकिर बाद में उहाँ के मन निबंध आ आलोचना में रम गइल। अब त गद्य आ नाटक का अनुवाद में विशेष आनंद आवेला। रामचरितमानस के बार-बार गुनगुना के नया अर्थ प्राप्त कइल उनुकर नित्य साधना हटे। तिवारी जी अपना अधिकांश लेख आ संपादकीय यात्रा का दौरान ट्रेन का साधारन डिब्बा में बइठ के लिखले बानी। उहाँ के मान्यता बा कि भीड़ में एकांत के अनुभव होला आ अंतश्चेतना जागृत हो जाले। यात्रा से किताबी ज्ञान व्यावहारिक अनुभव में बदल जाला। तिवारी जी का जीवन पर संतन में कबीर, दादू, दरिया साहिब अउर भक्तन में गोस्वामी तुलसीदास आ आधुनिक युग में भारतेन्दु, रत्नाकर, निराला, महादेवी वर्मा, महात्मा गांधी, विनोबा भावे आ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी के प्रभाव बाटे।

डॉ. तिवारी अनेक साहित्यिक संस्था आ शिक्षण संस्थानन के संचालन अउर निर्माण कइले बानी। वर्तमान में उहाँका रोहतास हिन्दी साहित्य सम्मेलन अउर स्वामी शिवानन्द शोध संस्थान के संचालन कर रहल बानी। भोजपुरी शब्दन का व्युत्पत्ति पर इहाँके जवन प्रकाशित आ अप्रकाशित काम बाटे, ऊ भोजपुरी भाषा का गौरवबोध खातिर धरोहर मानल जाए त ढेर ना कहाई। ओइसहीं, डॉ. तिवारी का भोजपुरी निबंधन के देखिके एक साथ रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी का सङहीं विद्यानिवास मिश्र जी के स्मरण हो आवता। अब तक उहाँके अठारह गो से अधिका किताब प्रकाशित बाड़ी सन-

महाकवि भास का संस्कृत नाटकन के भोजपुरी अनुवाद

1. उरुभंग 2. प्रतिज्ञा यौंगधरायण 3. बालचरित
4. दूत घटोत्कच 5. दूत वाक्य 6. पंचरात्र
7. मध्यम व्यायोग 8. चारुदत्त
9. स्वप्नवासवदत्तम् 10. अभिषेक
11. प्रतिमा 12. कर्णभारम् 13. अविमारक

मौलिक कृति

13. भोजपुरी के चार सौ शब्दों का वैदिक स्रोत एवं वैज्ञानिक अनुशीलन
14. 'निरगुनिया संतों का मार्गदर्शन
15. बतकही- भाग-1 (भोजपुरी वैयक्तिक निबन्ध संग्रह)
16. बतकही- भाग-2 (भोजपुरी वैयक्तिक निबन्ध संग्रह)
17. नाटक रतनमाला (सात गो संस्कृत नाटकन के भोजपुरी गद्यानुवाद)
18. पत्थल के मेहरारू (नाटक भोजपुरी में)

संपादन कला, पत्रिका-संचालन आ भाषाई साधना

तिवारी जी के एक दर्जन शोध अउर डेढ़ दर्जन संपादित पुस्तक प्रकाशित भइल बाड़ी सन। उहाँका संपादन में अनेक शोध पत्रिकन- इयत्ता, अस्मिता, स्थापना,

अभिनव शोध सार का सङ्हीं 'प्रत्याभिता' (त्रैमासिक), हृदय-संदेश (मासिक) आ 'सुरसती' (भोजपुरी त्रैमासिक) पत्रिका के भी प्रकाशन लंबा समय तक चलल। उहाँके कहनाम बा कि संपादक के एके सङे कवि, लेखक, आ शोधकर्ता के व्यापक ज्ञान होखे के चाहीं। ओकरा में ई क्षमता होखे के चाहीं कि रचना के मौलिकता आ भाषा-शैली के पहचान सको। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के आदर्श मान के अवांछित आ असाहित्यिक सामग्री के फटक के ना देवे के चाहीं। नीर-क्षीर विवेक ही संपादन के प्राण हटे।

संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार भास का तेरह नाटकन के काव्यानुवाद से तिवारी जी के नाटक का सङे-सङे अनुवाद प्रेम भी जगजाहिर बा। एह बावत उहाँ के कहनाम बा कि अनुवाद भाषिक आ सांस्कृतिक पुल के काम करेला। एक भाषा के विचार आ ज्ञान जब दोसरा भाषा में जाला, त देश के अंतःसूत्र मजबूत होला आ राष्ट्रीय एकता के बल मिलेला।

पत्रिका का सङे-सङे तिवारी जी हिंदी आ भोजपुरी पुस्तकन के भी संपादन कइले बानी। उहाँके द्वारा संपादित भोजपुरी पुस्तकन में 'कुंजन रामायण', 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उद्भव अउर विकास', स्वामी शिवानंद जी द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के भोजपुरी काव्यानुवाद, 'अलमस्त जी के अलाप' अउर सतबादी हरिश्चन्द्र प्रमुख बाटे। तिवारी जी द्वारा संपादित हिंदी ग्रंथन में हिन्दी शोक गीति, निराला का निबन्ध साहित्य, संत जयराम दास, रोहतास गढ़ (हिन्दी काव्य), सद्गुरु शरणागति, स्वामी शिवानंद वचनावली (१५ भागों में) आदि अनेक ग्रंथ उल्लेखनीय बाड़े सन। ओह पुस्तकन का संपादकीय में डॉ० तिवारी का उच्च कोटि के संपादन कला का सङ्हीं जवना भाषा-बोध, समीक्षात्मक दृष्टि अउरी शोध-परक चेतना के दरसन होता, ऊ सचमुच अद्भुत बा।

तिवारी जी के ठहाका

तिवारी जी का एगो विशेष ठहाका के हम त अतना कायल रहीं कि अपना अंदर भी ऊ गुन विकसित होखे लागल बाकिर अनुकूल वातावरण ना मिलला का कारन पोढ़ ना भइल। गुरुदेव डॉ. तिवारी के मान्यता रहे कि जेकर मन निष्छल, निष्कपट आ पारदर्शी होला, ओही के हँसी मुक्त होला। स्वामी शिवानन्द जी आ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी भी अइसहीं खुलिके हँसत रहीं। हँसी मन के सारा अवसाद आ विषाद के बाहर निकाल देले।

वक्तव्य, पुस्तक संग्रह, यात्रा आ आध्यात्मिक विचार

तिवारी जी जब साहित्य आ संस्कृति पर धाराप्रवाह सुचिंतित वक्तव्य दिहींले त सभागार में सन्नाटा छा जाला। उहाँका मानींले कि एकर प्रेरणा गोस्वामी तुलसीदास,सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आ पूज्य स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन आ दर्शन से मिलल। संस्कृति आ साहित्य कवनो बाहिरी देखावा ना हटे। ई अंतरात्मा के प्रवहमान धारा ह, जेकरा के सुचिन्तन आ मौन साधना से ही समझल जा सकऽता।

तिवारी जी के व्यक्तिगत पुस्तकालय कवनो संपन्न कॉलेज का विभाग से बीस परी। उहाँका पुस्तकालय में एक से एक दुर्लभ पुस्तकन आ पत्र-पत्रिकन के संग्रह मिलेला। उहाँका एह शौक के चर्चा कइला पर पता चलेला कि तिवारी जी राहुल सांकृत्यायन जी के अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा आ श्रम से बहुत प्रभावित रहलीं। उहाँका सेवा के मुख्य क्षेत्र सासाराम रहे। ओह घरी सासाराम (रोहतास) में कवनो बड़ पुस्तकालय ना रहे। शोध छात्रन के मदद खातिर उहाँका काशी आ प्रयाग जा-जा के कबाड़ी से लेके प्रकाशकन तक से किताब इकट्ठा कइलीं। भूखे-पियासे पैदल घूम के उहाँका सभ दुर्लभ ग्रंथ बटोरलीं।

तिवारी जी एह बात के माने खातिर बिल्कुल तइयार नइखीं कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पएसार से पुस्तक-संस्कृति खत्म हो जाई। उहाँके स्पष्ट मत बा कि दृश्य-श्रव्य माध्यम क्षणिक उत्तेजना दे सकत बा, बाकिर जवन गंभीर शांति, चिंतन आ ज्ञान पुस्तक पढ़ला से मिलेला, ऊ स्क्रीन पर ना मिल सके। पुस्तक संस्कृति कबहूँ खत्म ना होई, काहेंकि विचार के असली आधार किताबे हटे।

पठन-पाठन में पूर्ण निष्ठा के साथ निरंतर आलस्यरहित श्रम आ चिंतन करेवाला डॉ. तिवारी आधुनिक समय का पठन-पाठन अउर नैतिक मूल्यन के लेके चिंतित बानी। उहाँ के कहनाम बा कि आजु का युग में चरित्र, त्याग आ साधना में बहुत कमी आइल बा। लोग पैसा आ छद्म प्रतिष्ठा का पीछा भाग रहल बा। शिक्षा संस्था कोचिंग आ व्यापार बन गइल बिया। एही संकट के दूर करे खातिर पुरान ऋषि-परंपरा आ नैतिक मूल्यन के पुनर्जागरण जरूरी बा। आजु के युवा पीढ़ी आ नया लेखकन से बहुत आश्वस्त नइखीं तिवारी जी। उहाँके कहनाम बा कि आजु का पीढ़ी में साधना आ धैर्य के कमी बा। ऊ लोग बिना तपस्या के सफलता चाहत बा। युवा पीढ़ी के चाहीं कि ऊ अपना भाषा, राष्ट्र आ संस्कृति से जुड़ के गंभीर अध्ययन करे आ प्रचार-प्रसार के पीछे जनि भागे।

डॉ. तिवारी अपना आवास के नाम 'निराला साहित्य मन्दिर' रखले बानी। ई सकारण बाटे। निराला जी के व्यक्तित्व आ कविता इहाँ के अत्यन्त प्रिय रहे। इलाहाबाद जा के उहाँका दारागंज में निराला जी का घर के दर्शन करत रहींलें। निराला जी का प्रति अगाध श्रद्धा के कारन अपना घर के नाम 'निराला निलय' आ बाद में 'निराला साहित्य मन्दिर' रखलीं, जवन साहित्यिक गोष्ठी आ लेखकन के आश्रय-स्थल बनल।

डॉ. तिवारी का संपादन में लगभग चार दशक तक 'हृदय संदेश' (आध्यात्मिक पत्र) प्रकाशित भइल। उहाँ खातिर ई काम अत्यंत, सहज, स्वाभाविक आ सुखदायक रहे। उहाँ के ई अनुभव तहियावे लाएक बा कि अध्यात्म कवनो संसार छोड़े के नाम ना ह, बलुक संसार में रह के शांति आ संतोष से जिए के कला हटे। संत शिवानन्द जी के वाणी सुन के तिवारी जी उनुका उपदेशन के संपादन आ प्रकाशन 'हृदय संदेश' पत्रिका का माध्यम से शुरू कइलीं, जे लगातार चालीस बरिस तक चलल।

अन्याय ना सहल आ केहूँ के दुख देख के तुरंत ओकरा मदद खातिर खड़ा हो गइल तिवारी जी के सुभाव ह। एही चक्कर में कई बार ऊ ठगा भी गइलन, बाकिर

ओकर कवनो मलाल नइखे। सच्चा गुरु के तलाश के ना कइल चाहे? तिवारियो जी एह जोगाड़ में रजनीश आश्रम, देवराहा बाबा, पांडिचेरी आश्रम आ पुरी का शंकराचार्य जी भीरी गइलीं। अंत में स्वामी शिवानन्द जी 'तीर्थ' महाराज का रूप में उहाँके सच्चा गुरु मिलले, जेकरा शरण में उहाँ का मन के पूर्ण शांति आ दिशा प्राप्त भइल।

बहुत दिन से मन रहे गुरुदेव डॉ. तिवारी पर 'सँझवत' के एगो विशेषांक निकाले के। जइसन चहलीं, ओइसन त ना हो पावल काहेंकि उहाँके ढेर किताबि मिलबे ना कइली सन। कुछ अपरिहार्य कारन से हम निकट में सासाराम भी ना जा सकलीं। कवनो बात ना, बादो में पूरक का रूप में उहाँ पर लिखात आ छपत रही। आजु एहू रूप में पत्रिका का पूर्णता के देखिके मन बहुत खुश बा। निराला साहित्य मंदिर, बिजली शहीद, सहसराम, जिला- रोहतास पिन- 821115 (बिहार)- गुरुदेव तिवारी जी के वर्तमान शैक्षिक आ साहित्यिक तपोभूमि बा, जहाँ आजुओ उहाँके साहित्य साधना अपना गति में बा। भोजपुरी गौरव डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी अपना अनवरत साहित्यिक सक्रियता का सङे शतायु होखीं- विनम्र भाव से ईहे हमार शुभकामना बा।

पत्रिका का संपादन में कुछ अजीबोगरीब कठिनाई अइली सन, जवन हमरा उमेदि से बाहर रहे। एगो तथाकथित विद्वान महीनों तक हमरा के घुमवले आ अंत में कहले कि हम अपना पत्रिका में व्यस्त बानी, हइसन बुकलेट पर कुछ ना लिखीं। बात एहिजे पूरा ना भइल, ऊ ओह भोजपुरी काव्यानुवाद के अपना पत्रिका में छापि दिहले, जबकि ऊ किताबि उनुका के भेंजल गइल रहे ओह पर एगो लेख लिखे खातिर। एगो विद्वान त महीनों अपना घर का लाइब्रेरी में खोजते रहि गइलन आ हर बार ईहे जबाब मिलल कि "रउआँ हमरा के भेंजले बानी?" ऊ त ई कहीं कि हम पहिलहीं ओह किताबन के फोटो ले लेले रहीं आ ओकरा से पीडीएफ बनाके किताब का आकार में प्रिंट कराके दोसरा विद्वान लोग से लिखवा लिहलीं। कुछ विद्वान त नया किताबि लिखे में अतना व्यस्त रहन कि लिखे से साफा नकार गइलन। तब हमरा एहसास भइल कि अपना मौलिक लेखन के छोड़िके बहेङ्वा वाला काम उठावल सही में बुद्धिमानी नइखे, बाकिर अपना पागलपन के का कहीं, हमरा एही में संतोष बा। हम सभे लेखक लोगन का प्रति आभार प्रकट कइल चाहतानी, काहेंकि हमरा एके आग्रह पर सभके स्नेह मिल गइल। तबो विशेष रूप से डॉ. दिवाकर पांडेय जी के धन्यवाद ना देबि त मन असांते रहि जाई। जब एगो लेखक देवता फोने उठावल बन्न क दिहलीं त पांडेय जी हमरा आग्रह के मान रखलीं आ समय से ओहू किताब पर आपन लेख भेंज दिहलीं।

त फाइनली अंक तेयार हो गइल, अब रउआँ सभ मूल्यांकन करीं कि हमार श्रम सुफल भइल बा कि ना। कमी कतनो मिले, आशीर्वाद दिहल ना भुलाए के चाहीं।

रामरक्षा मिश्र विमल

डॉ० नंदकिशोर तिवारी

सारस्वत परिचय एवं कृतित्व विवरण

१. विभिन्न संस्थाओं में किए गए कार्य

क्र०	संस्था का नाम	पद
१	रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन	प्रधान सचिव
२	संस्कृत विद्वन्मंडलीय सम्मेलन	प्रधान सचिव
३	रोहतास पुरातत्व गवेषिणी समिति	प्रधान सचिव
४	स्वामी शिवानन्द शोध संस्थान	अध्यक्ष
५	रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद्	अध्यक्ष
६	श्री यक्षिणी भोजपुरी परिषद् भलुनीधाम	पूर्व अध्यक्ष
७	स्वामी शिवानन्दजी तीर्थ महाविद्यालय, सासाराम	पूर्व संस्थापक, सचिव
८	इन्दिरा गाँधी महिला महाविद्यालय, सासाराम	पूर्व संस्थापक, सचिव
९	कवि कुंजन स्मृति संस्थान, गढ़नोखा	अध्यक्ष
१०	गंगाधर स्मृति संस्थान, गायघाट, वाराणसी	पूर्व अध्यक्ष
११	स्व० श्यामनन्दन प्रसाद सिंह स्मृति शोध संस्थान, गया	अध्यक्ष
१२	हिन्दी परिषद्, प्रयाग	सदस्य
१३	भोजपुरी अकादमी, पटना	पूर्व सदस्य (दो बार)
१४	बिहार राज्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना	सदस्य
१५	बिहार राष्ट्रभाषा (शोध समिति) पटना	पूर्व सदस्य
१६	बिहार संस्कृत संजीवन समाज, पटना	सदस्य
१७	हिन्दी साहित्य संगम, बोकारो स्टील सिटी	सदस्य
१८	लॉ कॉलेज सासाराम	संस्थापक सदस्य

२. शोध एवं शोधपरक ग्रंथ तथा संपादित ग्रंथ

शोध एवं शोधपरक प्रस्थापन ग्रन्थ

1. मध्ययुग के भक्तिकाव्य में माया — शोध साहित्य प्रकाशन, ५७७ शाहगंज, इलाहाबाद
2. तुलसी साहित्य में माया — रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सासाराम
3. नीलकंठ निराला एक अनुशीलन
4. प्रबन्ध मंजूषा सौन्दर्य और समीक्षा
5. ब्रजवेणु सौन्दर्य और समीक्षा

6. भाषा विज्ञान
7. रोहतास के संत और साहित्यकार
8. चलो मन पावन गीताघाट

संपादित ग्रंथ

1. हिन्दी शोक गीति
2. निराला का निबन्ध साहित्य
3. संत जयराम दास
4. कुंजन रामायन (भोजपुरी) काव्य
5. सतबादी हरिश्चन्द्र (भोजपुरी) काव्य
6. रोहतास गढ़ (हिन्दी में) काव्य
7. भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उद्भव आउर विकास

३. संपादित पत्र-पत्रिकाएँ एवं स्मारिकाएँ

संपादित शोध-पत्रिकाओं का विवरण

1. सद्गुरु शरणगति
2. स्वामी शिवानंद वचनावली (१५ भागों में)

क्र०	पत्रिका	विवरण
१	इयत्ता	कला और साहित्य के नूतन मानदंड की शोध पत्रिका (१९७४)
२	अस्मिता	शांति प्रसाद जैन महाविद्यालय की मुख पत्रिका (१९७३-७४)
३	स्थापना	रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन की शोध पत्रिका (१९८१)
४	अभिनव शोधसार	उपाधिप्राप्त शोधों का सार तथा शोध-प्रक्रिया और उसके मानदण्डों की विवेचनापूर्ण पत्रिका, अभिनव भारती इलाहाबाद
५	प्रत्याभिता	(त्रैमासिक) शोध एवं आलोचना, रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुखपत्र
६	हृदय-संदेश	(मासिक) ४२ वर्षों से अनवरत प्रकाशित आध्यात्मिक पत्र
७	औद्योगिक पत्रिका	लघु उद्योगों पर आधारित (वार्षिक पत्र)
८	सुरसती	त्रैमासिक, भोजपुरी में (१७ वर्षों से प्रकाशित)

अन्य सम्पादित पत्र-पत्रिकाओं के अंक एवं स्मारिकाएँ

1. अणिमाः हास्य व्यंग्य प्रधान अनियतकालिक
2. सुरसरिताः हिन्दी भोजपुरी में ललित तथा समीक्षात्मक रचनाओं की पत्रिका
3. जनविक्रान्तः (साप्ताहिक) रोहतास अंक १९७७ ई०
4. कलमकारः तुलसी विशेषांक, वर्ष-१, अंक-१०
5. माई के बोलीः भोजपुरी भाषा में प्रकाशित ललित समीक्षात्मक तथा शोधपूर्ण रचनाओं से समन्वित पत्रिका (केवल १० अंक)
6. स्मारिकाः कुंजन स्मृति अंक १९९५

7. स्मारिकाः कलापरिषद, १९७५
8. अबः २ तथा ३ का निर्देशन-संपादन
9. रामचरितमानसः रामचरितमानस संघ की पत्रिका, मानस अंक, २०० पृष्ठों की, १९९०
10. भरतखण्डः शोध अर्द्धवार्षिक (प्रथम खंड)
11. रोहतास जिला रजत जयंती अंकः रोहतास भू-क्षेत्र का सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषण १९९६
12. अभीः अनियतकालिक पत्रिका

४. प्रकाशित-अप्रकाशित कृतियाँ एवं निबन्ध

महाकवि भास के संस्कृत नाटकों का हिन्दी और भोजपुरी अनुवाद

1. उरूभंग
2. बालचरित
3. दूत काव्य
4. मध्यम व्यायोग
5. स्वप्नवासवदत्तम्
6. प्रतिमा

1. प्रतिज्ञा यौंगधरायण
2. दूत घटोत्कच
3. पंचरात्र
4. चारूदत्त
5. अभिषेक
6. कर्णभारम्

अन्य अनूदित एवं मौलिक कृतियाँ

1. भोजपुरी के चार सौ शब्दों का वैदिक स्रोत एवं वैज्ञानिक अनुशीलन
2. बतकही (वैयक्तिक निबन्ध संग्रह) जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. नाटक रतनमाला (संस्कृत नाटकों का भोजपुरी गद्यानुवाद) किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी
4. पत्थल के महरारू (मौलिक नाटक भोजपुरी में)

सन्दर्भ आलेख (चयनित)

क्र०	शीर्षक	पत्रिका / स्रोत
१	महाकवि निराला और आचार्य गंगाधर शास्त्री	सरस्वती, फरवरी १९७३
२	सूर साहित्य में माया	सूर साहित्य संदर्भ, बिजनौर (उ० प्र०)
३	तुलसी साहित्य में माया	तुलसी मानस संदर्भ बिजनौर (उ० प्र०)
४	खड़ी बोली की स्फटिक मंजूषा में तुलसी रामायण	अस्मिता १९७४
५	मानस में प्रतिपादित भक्ति और आज की तर्क प्रतिष्ठित भक्ति-भावना	कलमकार तुलसी विशेषांक
६	सत्संग परमोधनम्	परम ज्ञान प्रकाश, वर्ष १३, अंक २,३
७	महिमा गरीयसी, सन्ते बसन्ते	परम ज्ञान प्रकाश, वर्ष १२, अंक २
८	वाल्लभ मत में माया का स्वरूप	श्रीमद्वल्लभाचार्यः व्यक्तित्व, सिद्धान्त और सन्देश
९	हरदिल अजीज राजा साहब	राजा राधिकारमण अभिनन्दन ग्रन्थ १९६९
१०	मलूकदास और उनका माया-दर्शन	आश्रम सन्देश अप्रैल १९७४

क्र०	शीर्षक	पत्रिका / स्रोत
११	सरस्वती पूजा रहस्य	आश्रम सन्देश फरवरी १९७७
१२	भ्रष्टाचार या सदाचार	आश्रम सन्देश फरवरी १९७७
१३	मानस की अर्न्तकथाओं का स्रोत एवं स्वरूप	आश्रम सन्देश मार्च १९७४
१४	वियोगी होगा पहला कवि	दैनिक हिन्दुस्तान १९९०
१५	हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण	अभिव्यक्ति १९९०
१६	शरीर का पारमार्थिक स्वरूप	प्रेम सन्देश, मई १९७६

विद्वानों की परिषदों में पठित शोध निबन्ध (अप्रकाशित)

1. गोस्वामी तुलसीदास की सार्वदेशिकता — तुलसी जयन्ती पर पठित निबन्ध
2. आचार्य शुक्ल और पाश्चात्य साहित्यिक आवधारणाएँ — शुक्ल शताब्दी गोष्ठी में पठित
3. शैली विज्ञान और आधुनिक हिन्दी चिन्तक — हिन्दी विभाग सेमिनार में
4. आचार्य शुक्ल की समीक्षा कला — शुक्ल शताब्दी गोष्ठी में
5. हिन्दी गजल और निराला — निराला जयंती पर पठित निबन्ध
6. भोजपुरी में प्रचिलत शब्दों का वैदिक पृष्ठाधार — भोजपुरी जिला साहित्य परिषद्, आरा
7. सप्तकों का भाषा शिल्प — विभिन्न परिषदों एवं गोष्ठियों में
8. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का संत साहित्य विषयक अनुवाद कार्य — विभिन्न परिषदों में
9. साहित्य और संस्कृति के विकास में संत साहित्य का योगदान — विभिन्न गोष्ठियों में
10. पुष्टि सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण का स्वरूप — विभिन्न परिषदों एवं गोष्ठियों में

५. डॉ० नंदकिशोर तिवारी के निर्देशन में संपन्न शोध कार्य

पीएच० डी० शोध निबन्ध (मगध विश्वविद्यालय, बोधगया)

क्र०	शोधकर्त्ता	विषय	वर्ष
१	श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय	हिन्दी काव्य रूपकों के विकास की पृष्ठभूमि में महाकवि दिनकर की उर्वशी का अध्ययन	१९८०
२	लीला रानी दत्त	महाकवि निराला के भक्त्यात्मक गीत	१९९०
३	शिववंश पाण्डेय	हिन्दी में लौकिक न्यायो का स्वरूपात्मक तथा विश्लेषणात्मक परिशीलन	१९९१
४	रघुनाथ प्रसाद चतुर्वेदी	मध्युगीन काव्य में गुरु का स्वरूप (पुरस्कृत)	१९९२
५	अरुण मोहन प्रसाद	भोजपुरी उपन्यास उद्भव और विकास	१९८३
६	प्रेम दुलार पाण्डेय	रामचरितमानस की अन्तर्कथाओं का स्रोत एवं स्वरूप	१९८५
७	सियाराम सिंह	उर्वशी काव्य परम्परा और उसका सौन्दर्य दर्शन	१९८५
८	दीनानाथ पाण्डेय	निराला साहित्य में ग्राम जीवन की मीमांसा	१९८६
९	विजेन्द्र पाठक	सूर सागर में वर्णित हिन्दू संस्कारों का अध्ययन	१९८८

क्र०	शोधकर्त्ता	विषय	वर्ष
१०	राज नारायण पाठक	मानस में मंगल-तत्व	१९८८
११	इन्द्रनारायण सिंह	हिन्दी गजल : उद्भव और विकास	१९८८
१२	राम रक्षा मिश्र	रामचरितमानस की रचना प्रक्रिया	१९८८
१३	केशव चन्द्र तिवारी	संत साहित्याध्ययन की भूमिका में आचार्य पं० चतुर्वेदी का योगदान	१९८९
१४	गौरी शंकर पाण्डेय	गोस्वामी तुलसीदास की कृतियों में प्रयुक्त लौकिक न्यायों का परिशीलन	१९८९
१५	विजय शंकर तिवारी	केशव के काव्य में कवि समय	१९९०
१६	अयोध्या प्र० उपाध्याय	भोजपुर और रोहतास जिले की कृषि शब्दावली एवं व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली का अनुशीलन	१९९०
१७	देवदास टेम्भरे	हिन्दी और मराठी ललित निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन	१९९०
१८	वीणा पाण्डेय	नाना-पुराण निगमागम और तुलसी की नारी विषयक अवधारणा	१९९०
१९	शिव शंकर पाण्डेय	दिनकर का आलोचना साहित्य	१९९०
२०	सुदामा पाण्डेय	दिनकर का उत्तरवर्ती काव्य	१९९१
२१	रामाशंकर ओझा	संत साहित्य में माया	१९९२
२२	कृष्णा श्रीवास्तव	हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में मिश्रबंधुओं का योगदान	१९९२
२३	पद्मा रानी	संत काव्य में षट्संपत्ति साधन का स्वरूप	१९९२
२४	उषा कुमारी (संस्कृत)	प्राचीन संस्कृत साहित्य में वनस्पतियाँ	१९८८
२५	शोभा पाण्डेय (संस्कृत)	कृष्णाश्रित संस्कृत नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन	२०००

डी० लिट् उपाधि प्राप्त शोध कार्य

क्र०	शोधकर्त्ता	विषय	वर्ष
२६	डॉ० वशिष्ठ सिंह	मध्ययुगीन भक्ति काव्य में लोक चेतना का विकास (म०वि०)	१९९०
२७	डॉ० बद्रीनाथ तिवारी	छायावादी कवियों की काव्यभाषा का शैली वैज्ञानिक अध्ययन (म०वि०)	१९९८
२८	डॉ० इन्द्र नारायण सिंह	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गजलों का शास्त्रीय अध्ययन (वी० के०)	२००१
२९	डॉ० प्रेमशंकर मिश्र	लौकिक न्यायों का ऐतिहासिक स्वरूप तथा भाषा और साहित्य में उसका संप्रयोग (वी० के०)	२०१०
३०	डॉ० देवदास टेम्भरे	हिन्दी साहित्य में दलित की अवधारणा का स्वरूप (वी० के०)	२०१०
३१	डॉ० उर्मिला सिंह	छायावादी काव्य में भक्तिभावना (म० वि०)	

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त

क्र०	शोधकर्त्ता	विषय	वर्ष
३२	हरिनारायण पाण्डेय	मध्युगीन भक्तिकाव्य में नियतिवाद	१९९५
३३	अरूण कुमार मिश्र	हिन्दी समीक्षा में भावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	१९९५
३४	नीलू तिवारी	रावीन्द्रिक प्रभाव की पृष्ठभूमि में छायायुगीन कवियों का अध्ययन	१९९५
३५	मनोज कुमार	बक्सर जिले के स्थान नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	१९९५
३६	कविता कुमारी	रसिक रसाल एवं काव्य सरोज ग्रन्थों का काव्यशास्त्रीय तुलनात्मक अनुशीलन	१९९६
३७	नरेन्द्र कुमार पाण्डेय	प्रसाद काव्य में मानवतावाद	१९९८
३८	विजय प्रकाश सिन्हा	महादेवी के साहित्य में सामाजिक चेतना	१९९९
३९	सत्य नारायण शुक्ल	स्वामी शिवानन्द तीर्थ और उनकी साहित्य साधना	२०००
४०	सुरेंद्र प्रसाद	प्राचीन भोजपुरी जिले का भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में योगदान	२०००
४१	रंजीत कुमार	प्रसाद के नाटकों में मानवतावाद	२०००
४२	कुमारी किरण	गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में कविसमय का अनुशीलन	२०००
४३	पुष्पा कुमारी	शील निरूपण के संदर्भ में सूर काव्य का अध्ययन	२०००
४४	बाँके बिहारी सिंह	रामचरितमानस के बालकाण्ड के स्रोत	२०००
४५	राजनारायण सिंह	निराला काव्य के प्रेरणा स्रोत	२०००
४६	अशोक कुमार तिवारी	अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के जीवन आउर साहित्य (भोजपुरी में)	२००१
४७	संयुक्ता कुमारी सिंह	छायावादी कवियों की निबंध साधना और निराला	२००१
४८	विजेन्द्र शर्मा	रामचरित मानस की संवाद योजना	२००१
४९	नीलम पाण्डेय	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में सांस्कृतिक चेतना	२००१
५०	रमेश कुमार	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में नारी की सामाजिक स्थिति का अनुशीलन	२००२
५१	धीरेन्द्र मोहन मिश्र	पं० जगन्नाथ राय शर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व	२०००
५२	सुषमा जायसवाल	तुलसीदास के मानस में लौकिक जीवन सम्बन्धी शब्दावली	

प्रो० नन्द किशोर तिवारी की साहित्य साधना पर किए गए शोध कार्य (M.Phil / Ph.D.)

क्र०	शोध का विषय	शोधकर्त्ता / उपाधि	वर्ष
१	प्रो० नन्द किशोर तिवारी की निबन्ध साधना	विकास यादव (एम० फिल०)	२०००
२	प्रो० नन्द किशोर तिवारी की सम्पादन कला	(एम० फिल०)	२०००
३	सारस्वत साधक प्रो० नन्द किशोर तिवारी	डॉ० रीभा कुमारी (पी- एच० डी०)	२०१५
४	प्रो० नन्द किशोर तिवारी प्रतिप्रश्नों के आईनें में	डॉ० रीभा कुमारी	२०१५

क्र०	शोध का विषय	शोधकर्त्ता / उपाधि	वर्ष
५	प्रो० नन्द किशोर तिवारी के भोजपुरी निबन्ध	डॉ० विद्यावती	२०१७

'विद्वत्ता के कीर्ति स्तंभ डॉ. नंदकिशोर तिवारी'- डॉ. श्याम सुंदर तिवारी,
'अभिनंदन ग्रंथ- प्रो. नंदकिशोर तिवारी' से साभार

ओह भोजपुरी साहित्यकारन के विनम्र श्रद्धासुमन,
जे असमये हमनी का बीच से विदा हो गइलें आ
भोजपुरी साहित्य-जगत के अपना अमूल्य योगदान से
समृद्ध कइ के हमेशा-हमेशा खातिर अमर हो गइलें।

सँझवत परिवार

भगवती प्रसाद द्विवेदी

पत्थल के मेहरारू : बाँग्ला से अनूदित नाट्यकृति में भोजपुरियत के रंग

धोती, कुरता, बंडी, टोपी जइसन सुंदर-सुभेख भारतीय पहिरावा से सुसज्जित शख्सियत। लमहर कद-काठी, छरहर काया, गोर मुखमंडल, वाचाल नयन, ओंठ से फूटत झरना-अस हँसी आ लिलार से छिटकत तेजस्विता के दिव्य आभा। ई सारस्वत व्यक्तित्व ह डॉ. नंदकिशोर जी तिवारी के। बसीकरन के अइसन जादुई मंतर बा एह शख्सियत में कि पहिलके भेंट-मुलाकात में अगिला सम्मोहित होके चुंबक नियर खिंचात चलि जाई। बोली-बानी अइसन जइसे स्वत:स्फूर्त निर्झरणी प्रवाहित होत होखे। मौलिक चिंतन, अनुशीलन से लैस विद्वता अइसन कि कवनो विषय प बोलल शुरू करीं, त सुननिहारन के लागे जइसे जबान से अमरित रस के रसबुनिया टपकत होखे आ ओकर मन-परान जियतार हो गइल होंगे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इयादि आवत बाड़न :

जामें रस कछु होत है, ताहि सुनत सब कोय।
भाव अनूठो चाहिए, भाषा काहू होय।।

देवबानी संस्कृत, जन-मन के भाषा हिन्दी आ मातृभाषा भोजपुरी के त्रिवेणी जेकरा भीतर लगातार बहत होखे आ जबान पर सुरसती के बास होखे, उहे नू अपना विद्वता आ मौलिक चिंतन के गहिर छाप छोड़ सकेला! बाकिर मौजूदा दौर के ए.आई.नियर ना! कतहीं कृत्रिमता भा बनावटीपन ना।एकदम सहज, सुरुचि आ सादगी से भरल भोजपुरिया व्यक्तित्व। तनिकियो ओढ़ल गम्भीरता भा आडम्बर ना। एही से पहिलके चीन्हा-परिचे में अइसन बुझाई कि ना जाने दुकतना साल के जान-पहिचान आ गहिर सरोकार रहल होखे।

शोध अध्येता, ललित निबंधकार, भाषाविज्ञानी, वैयाकरण, समालोचक का रूप में डॉ. तिवारी जी जवना ऊँचाइयन के छुवले बानीं, ऊ अद्भुत बा। संस्कृत साहित्य के अनमोल धरोहरन

के मूल जइसन सरस सवाद देबेवाला अनुवादो उहाँ के लेखन के खाता में मौजूद बा।

महतारी भाषा भोजपुरी खातिर उहाँ के तहेदिल से लगाव आ राग-अनुराग खास तौर से रेघरियावे जोग रहल बा। उहाँ के ललित निबंध त अतना जियतार बाड़न स कि पूछीं मत। दू खंड में छपल ऊ किताब भोजपुरिया गाँव-गिराँव, लोक, संस्कृति, समाज के अतीत, वर्तमान आ भविस के अइसन ऐनक बा, जवना में हमनीं सभ आपन-आपन सूरत आ चेहरा निरेखि सकेंली जा। अतना रसगर, रोचक आ मनहर कि भीतर-बहरी हरियर बगइचा लहलहाए लागी।

डॉक्टर साहेब अपना बल-बूता प भोजपुरी पत्रिका 'सुरसती' के संपादन-प्रकाशन के बीड़ा उठवले रहनीं आ कई गो यादगार अंक निकलनीं। उहाँके 'सुरसती' में भोजपुरी के खाँटी-धराऊँ शब्दन, मुहावरन, लोकोक्तियन के प्रयोग पर विशेष बल देत नेही-छोही पाठकन के चकित क देले रहनीं। सँगें-सँगें, संस्कृत साहित्य के अमर कृतियन के धारावाहिक अनुवादो पत्रिका के खासियत रहे। बाकिर नवही, नवोदित आ नेही रचनाकारन के प्रोत्साहित करे का गरज से उहाँके रचना के स्तरीयता का सँगें समझौता करत संपादकीय दरियादिली के एहसासो करावत रहनीं। जब नया लोग जुड़ी, तबे नू भाषा आगा बढ़ी। अपना प्रियजन खातिर उहाँके आलोचकन के कोपभाजनो बनि जात रहनीं। बाकिर आलोचना-प्रत्यालोचना के परवाह कइल त उहाँके फितरत में रहबे ना कइल। नेह-नाता के मिठास के उहाँके कबो कड़ुआहट ना बने दिहनीं। विद्वता आ ज्ञान के मुक्तहस्त लुटावले त उहाँके सुभाव रहल बा। उहाँके 'सुरसती' के एगो गजलो विशेषांक निकलले रहनीं, जवना के अतिथि संपादन डॉ. आसिफ रोहतासवी जी कइले रहनीं आ फेरु ऊ किताबो के शकल में छपल रहे। ओमें हमरो किछु ग़ज़ल आइल रहली स।

भास के संस्कृत के तमाम (तेरहो) नाटकन के उहाँके भोजपुरी में भावप्रवण अनुवाद कइले रहनीं। पढ़त खा लगबे ना करे कि ऊ अनुवाद ह। अइसन जनात रहे कि ऊ मूल रूप से भोजपुरिए में लिखाइल होखे। एकरा जरि में रहे उहाँ के दूनों भाषा पर समान अधिकार आ सजग दृष्टिसम्पन्न सोच।

एकरा अगिला कड़ी का रूप में भोजपुरी के एगो अउर किताब आइल बिया- 'पत्थल के मेहरारू', जवना के प्रकाशन रोहतास जिला भोजपुरी परिषद, निराला साहित्य मंदिर, बिजली

शहीद,सहसराम (रोहतास) से भइल बा। ई बाँग्ला के मशहूर नाटककार द्विजेन्द्र बाबू के 'पाषाणी' नाटक के भावानुवाद बा। ई नाटक अहल्या के कथा पर केंद्रित बा। डॉ. तिवारी जी 'आपन बात' में विस्तार से चरचा कइले बानीं कि कवना परिस्थिति में एह अनूदित कृति के सिरिजना भइल। उहाँके लिखले बानीं कि जब एगो शोधी छात्र के भोजपुरी नाटकन प शोध करावे के रहे, त बहुते पापड़ बेले के परल, काहेंकि छपल भोजपुरी नाटक के अभाव रहे। हालाँकि भोजपुरी में त भिखारी ठाकुर से लेके आजुले नाट्य लेखन आ मंचन के एगो लमहर परिपाटी रहल बा आ आधुनिक नाटको लिखात-छपत आ रहल बाड़न स। तबो अउर विधा के बनिस्पत नाटक के सिरिजना कम भइल बा, ई सच्चाई बा।

बहरहाल, द्विजेन्द्र बाबू के नाटक के प्रशंसक रवियो बाबू रहल बानीं आ नाटककार के तारीफ में तिवारी जी आलोचक देवकुमार राय चौधरी के ई पाँती उद्धृत कइले बानीं- 'बंगाल में अइसन कवनो कवि ना भइलन जे हँसी के गीत में, नाट्य साहित्य में, व्यंग कविता में आउर जातीय भाव के जीवित करे में द्विजेन्द्र बाबू के बराबरी कर सके।' खुद तिवारी जी के कहनाम बा- 'द्विजेन्द्र बाबू के करीब एक दरजन से अधिका नाटक बा, जवना में इतिहासिक,पउरानिक नाटक भी बाड़े सन। ई नाटक पउरानिके ह। एकरा के हम भोजपुरी में नाँव देले बानीं -'पत्थल के मेहरारू'। आजु से नब्बे बरिस पहिले लिखाइल ई नाटक द्विजेन्द्र बाबू के आरम्भिक रचनन में एगो ह। लेकिन आजुओ पढ़ला प कवनो भाषा के नाटककारन के ई रचना पीछे छोड़ देले।'

नाटक के पहिले तिवारी जी ई विस्तृत चरचा कइल जरूरी बुझले बानीं कि अहल्या का बारे में वाल्मीकि रामायण में का अखियान बा, महाभारत में का अखियान बा आउर तुलसीकृत रामचरितमानस में अहल्या के प्रसंग कवना रूप में आइल बा।ई तीनों अखियान पुस्तक के अउर पठनीय बनावत बाड़न स।

'पत्थल के मेहरारू' के सिरिजना वाल्मीकि रामायण के आधार पर भइल बा, जवना में कल्पनो के भरपूर इस्तेमाल क के एकरा के तर्कसंगत आ पठनीय/मंचीय बनावल गइल बा। दरअसल ई एगो पद्य नाटक बा, जवना में पउरानिक चरित्र अहल्या, गौतम ऋषि, इन्द्र का सँगहीं चिरंजीव आ माधुरी नियर काल्पनिक चरित्रो के समावेश कइल गइल बा। सवाल उठत बा कि अनुवाद खातिर तिवारी जी बाँग्ला के एही किरदारन प केंद्रित नाटक के काहें चुननीं? एह तथ के खुलासा करत उहाँके खुदे लिखले बानीं- "ई नाटक

अहल्या के चरित्र के केन्द्र में रखिके लिखाइल बा। बाल्मीकि रामायन लेखा एह नटको में ईहे देखावल बा कि अहल्या अपना इच्छा से, जानि-बूझिके इन्द्र के साथे बेभिचार में प्रवृत्त भइल रही। कुछ पउरानिक कथन में ऊ इन्द्र के भरम में गउतम समुझ लेले रही। चरित्र भ्रष्ट होखे में भरम उत्तरदायी बनल। एह नाटक में राय जी (द्विजेन्द्र बाबू) कल्पना के भी खूबे इस्तेमाल कइले बानीं। एगो छोट कथा के नाटक के रूप दीहल बिना एकरा प्रयोग के बहुते कठिन रहे।

चिरंजीव आ माधुरी दूनों के दूनों बनौटी चरित्र हवन, लेकिन गौतम रिखि के चरित्र के महिमामंडित करे में ई पात्र बहुते सहायक बाड़न। जनक कहत बाड़न- 'ऊ चरित्र धन्य बा जेकरा छुअला भर के जादू से बेसवा सती हो जाले आ डाकू साधू बन जाला'। इन्द्र त बराबरे से कामुक आ लम्पट मानले बाड़न। एह नाटक में अहल्या के पछतावा, उनकर नारी चरित्र के मनोविग्यान हमरा के बहुते आकर्षित कइलस।

ओने गौतम के रिसि रूप, ब्राह्मणत्व आउर तपेसवा मिलिके अहल्यो के पत्थल बना दिहलस। पत्थल के मेहरारू पथले हो गइली। गौतम के छमा,दाया, उदारता उनुका शील के दियरी के प्रतिकूलता में भी बुझे नइखे देत। ऊ अपना सतुर इन्द्र के भी सेवा कइके जिआ देत बाड़न। कवनो बरदान उनुका केकरो से ना चाहीं। उनुकर सात्विक ब्राह्मणत्व विश्वामित्र के अचरज में डाल देता। एही से ब्राह्मणत्व के शाश्वत बुद्धि वैभव कहल जाला, जेकरा बल पर ऊ भूमा के सुख के साँचा अधिकारी मानल जाला।

"हमरा लागल कि अहल्या पछतावा के अगिनी के आँवा लेखा अपना माटी के शरीर के डालिके पाका के पाका घाड़ा लेखा बना देले बाड़ी आ रामजी के चरन के धूरि रूपी पारस के परभाव से ऊ खरा सोना बनिके अगिन परीच्छा में अव्वल होके पंच कन्यन में पहिलका अहथान के अधिकारी हो गइल बाड़ी। कतहीं के गिरल बेजाँय ना ह। अवसर, संस्कार, प्रकृति के जोर-जबरदस्ती, निगरह के अभाव कुल्ही चीझ अदिमी के गिरावहीं में मदद करेला। देवता लोग हर इन्द्री के झरोखा प बइठिके विसय-बयार के बहे खातिर रहता खोलिके खाड़ा हो जाला। ऊ लोग के बान काम करेला त मानुसे पर, राछसन पर ना। एह से अहल्या के भगवान के चरन धूरि मिलल जे रिसिओ के नसीब ना भइल।ऊ तपस्विनी बिबाहिता से कन्या बनि गइली। शतानंद के मतारी बनली आ ऊ जनक जी जइसन राजा के राज पुरोहित बनलन।"

ओइसे त एह नाटक के पुरुष पात्रन में महर्षि गौतम, राजर्षि जनक, ब्रह्मर्षि विश्वामित्र, महाराज दशरथ, गौतम ऋषि के पुत्र शतानंद, गौतम के शिष्य चिरंजीत का सँगहीं इन्द, मदन, श्रीराम, लक्ष्मण, वशिष्ठ, वसंत आ अउरी देवता, तपसी बालक, योगी, पुरवासी, पुरोहित, नौकर, दूत वगैरह आइल बाड़न आ स्त्री पात्र में गौतम ऋषि के पत्नी अहल्या, इन्द्र के पत्नी शची आउर मदन के पत्नी रति शामिल बाड़ी। काल्पनिक पात्र का रूप में सिरिजाइल गौतम के चेली माधुरी बाड़ी, जे चिरंजीव के मेहरारू हई।

नाटक में जगह-जगह गीतन के छटा एकरा पठनीयता आ मंच-प्रस्तुति में चार चान लगावत बा। तपोबन के भीतर तपसियन के लइका-लइकी गावत बाड़न स-

'हमनी तपसी रहीला एही बनवा में,
कबो कुछुओ ना आवे एहि मनवा में।

हरल-भरल फल-फूल खिलल बा,
परबत-घाटी सब लथरल बा,
अतना सुख कहाँ घर-मैदनवा में!
हमनी तपसी रहीला एही बनवा में।...'

अइसहीं चिरंजीवो के गावल एगो गीत जियतार बनि परल बा। ओकरो एगो बानगी देखीं :

'कतना रंगीन मजेदार बाटे दुनियाँ!
कतना संगीन समुझदार बिआ मुनियाँ!

दिन के पाछा रात घुमत बा, रात के पाछा दिन।
एक के ऊपर दू तब बारह एक आउर दू तीन।
दुनियाँ जरो आगी-काठी बजाइब हरमुनियाँ।।
कतना रंगीन मजेदार बाटे दुनियाँ।।...'

माधुरी आ चिरंजीव नाटक में बीच-बीच में आवत बाड़न आ गीत के मार्फत कबो जीवन-राग, कुदरती प्रेम, त कबो बिछुड़न आ जीवन दर्शन के गूढ़ सनेस देत पढ़निहारन के मन में नाटकीय ढंग से किसिम-किसिम के भाव जगावत बाड़न। इहे कारन बा कि अहल्या के आँतर के नारी सुलभ प्रणय, बिछुड़न के पीर आ पछतावा मोका-मोका प राग-अनुराग आ विराग के अथाह समुंदर में पँवरे, डूबे, उतराए खातिर अलचार क देत बा।

बाँग्ला के नाटक 'पाषाणी' भोजपुरी में 'पत्थल के मेहरारू'

का रूप में उतरिके अनुवादक के रचनात्मक कौशल से भोजपुरियत के रंग में रँगा गइल बा आ बाँग्ला के शब्द, बिंब, मुहविरा भोजपुरी में अलगे चमक-दमक पैदा करत बाड़न स। भोजपुरी में दोसरा भाषा के कालजयी कृतियन के अनुवाद के बहुत जरूरत बा, बाकिर ऊ अनुवाद 'पत्थल के मेहरारू' नियर होखे के चाहीं, जवना में मूल नियर सवाद मिले। एह खास अनूदित कृति खातिर डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के सिरिजनशीलता के नमन करत उहें के बात से एकर समापन करत बानीं- "पत्थल के मेहरारू' में भोजपुरी भाषा के सोच उतारल बा। गीतन में एकदमे भोजपुरिया रंग बा। एकरा से कई शैलियन के जनम होई। नया साहित्य-रूपन के सिरिजना होई, नया बिंब लेखकन के रचनन में उतरी। एह रचना से भोजपुरी के शब्द भंडार आ अभिव्यंजना सक्ती में बढ़ोत्तरी होई।

भोजपुरी में दोसरा भाषा के शब्दन से, वाक्यांश से, कहाउत आ मोहबिरा से ई भाषा समृद्ध होई। दोसरा भाषा के शब्द ग्रहण कइला से भाषा में लचीलापन आवेला, नया अर्थछाया आवेला,जीवंत सक्ती के परिचय प्राप्त होला आ संस्कृति संगम के मोका मिलला से बौधिक जागरन आ ग्यान प्रसारन होला। एहि कुल्हि बात के धियान में रखिके हम एकरा रचना में लगलीं। अब रउआ सभे पढ़ के देखीं आ हमरा बात प अखियान करीं।"

सर्जना, सृजनशील कालोनी, बिस्कुट फैक्ट्री रोड,
निकट मगध आईटीआई, नासरीगंज, दानापुर,
पटना-801503 (बिहार)

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...

साँझ के बेरा जब लोक-मंगल के कामना के खातिर दुआरी पर रोशनी फइलावल जाला त घर-परिवार में एगो सुखद आनंद के संचार हो जाला। 'सँझवत' के सहारे भोजपुरी के साहित्य का आकाश में रामरक्षा मिश्र विमल उजियारा फइलावत बानी। एह पत्रिका में लोक-बोध, संवेदना, भाषा के संतुलन, भाषा के विशिष्टता आ समीक्षा के साँचा में सराबोर रचनात्मकता के झलक नदिया के धारा नियन हिलोर मारत बा।

शशिभूषण मिश्र, बक्सर।

आज भोजपुरी भाषा की पत्रिका 'सँझवत' प्राप्त हुई। इसमें मेरा भी भोजपुरी एकांकी नाटक 'घुरवा के माई' प्रकाशित हुआ है। यह पत्रिका भोजपुरी भाषा और साहित्य की बेजोड़ पत्रिका है। यह आज भी भोजपुरी संस्कृति और सभ्यता को संरक्षित कर रही है।

बीरेन्द्र पाण्डेय, भटौली, बक्सर।

डॉ. दिवाकर पाण्डेय

निरगुनिया संतों का माया-दर्शन : एगो बिहंगम नजर

'निरगुनिया संतों का माया-दर्शन' प्रो०नंदकिशोर तिवारी जी के सोध ग्रंथ के स्वतंत्र अध्याय ह। एहबात के उहाँ के एगो पुस्तक के प्रस्तावना के पहिलके पाँति मेंलिख देले बानीं।आचार्य नलिनविलोचन शर्मा जी अपना प्रसिद्ध पुस्तक 'साहित्य का इतिहास दर्शन' में सोध के परिभासित करत कहत बानीं कि बिस्तार के खंड–खंड के बिबेचन-बिस्लेसन कइल सोध ह। सोध ग्रंथ आसमीक्षा ग्रंथ में काफी अंतर होला। सोध ग्रंथ में अपना बात के पुस्ट करे खातिर बाहर से बहुत सारा संदर्भ रखि दिहल जाला। कवनो-कवनो सोध ग्रंथ में अतना संदर्भ भरि दिहल गइल रहेला कि ओकरा बृस्टिछाया में शोधार्थी के मौलिकता छिपि जाला। सोधो एक तरह से समीक्षा ह। एह से समीक्षा के समीक्षा कइल अपने आप में एगो चुनवती बा। दूसरकी चुनवती ई बा कि जवन बिसय बा, ऊ बड़ा गम्हीर बा। भारतीय वाङमय में ब्रम्ह जीव आ माया के जवन त्रिकोन मिलेला, ओकरा के लेके ना जाने कतना पोथा लिखा चुकल बा आ आगे ना जाने कतना ले लिखात रही।

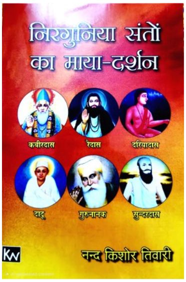

एह किताब के आमुख के पहिलके वाक्य में एह गम्हीर बिसय के अतना फरियाके कहल गइल बा कि निरगुनिया संत लोगन के मूल भावना परगट हो गइल बा- "निरगुनिया संत कवियों की मूल धारा एक है– मनुष्य का परमात्मा के अनुकूल आचरण करना और वैसा ही बन जाने की भावाभिलाषा सदा मन में रखना।'' ई पहिलका वाक्य अतना स्पस्ट आ सरल बा कि 'प्रवेशनिषेध' के पट्टी तूरिके 'स्वागतम' के स्वर गूँजा देत बा।

भारतीय मनीसा में माया के एगो बड़ा भकसावन रूप गढ़ल गइल बा। एकरा अचूक प्रभाव से केहू बचले नइखे। कबीरदास जी ठीके कहले बानी –''माया महाठगिनि हम जानी '' एह ठगिनी से ब्रम्हा, बिस्नु आ महेश तक नइखन बाचल त सामान्य जीव के का बिसात। बाक़िर ना, निरगुनिया संत लोग एकरा से बचे के उपाय ढूँढ़ि लेले रहे लोग। ओह लोगन के माया से बचे से

संबंधित जवन बिचार बा तवना के समेट के लेखक बड़ा आसान सब्द में समझावत बाड़न- "संतों ने माया के अंगों का विस्तार से वर्णन किया है। सुख-दुख का विस्तार उसी में माना और परमात्म-मार्ग में जाने के लिए उस माया के सभी अंगों से हर क्षण सावधान रहने को कहा। माया का रूप कंचन–कामिनी से अभिनिविष्ट हुआ। इनसे सावधानी बरतने में प्रभु की कृपा को सबसे बड़ा आश्रय माना। किताब के आमुख में तिवारी जी अपना सोध के सार-तत्व रखि देले बनीं। असथूल द्दस्टि से हमनी के जवन सगुन–निरगुन के विचारधारा में अंतर मानीं ला जा, ऊ सूक्ष्म द्दस्टि से देखला पर फरका ना लउकी। तिवारी जी साफ-साफ कहत बानीं- "सगुन-निरगुन मार्गी सब एक ही विचारधारा के पोषक हैं । वे दोनों भक्त हैं, परमात्मा की सन्निधि पाना इनका उद्देश्य है। ये अपने मत-प्रतिपादन में जो कट्टरता दिखाते हैं, वह अबोधों को ताड़ना देने के लिए। भीतर से वे स्निग्ध हैं।'' कहे के मतलब ई बा कि पूरा किताब में लेखक के बिचार के मथानी चलवला के बाद जवन लएनू निकलल बा, तवन पुस्तक का आमुख में रखि दिहल बा जवना के चलते ई दुर्बोध बिसय सुबोध लागे लागत बा।

ई पुस्तक कुल सात अध्याय में बिभाजित बा। पहिलका अध्याय में हिन्दी संत -काव्य के परिचय के साथ-साथ ओकरा युगनिर्माणक स्वरूप पर प्रकाश डालल गइल बा। लेखक के अनुसार "सामाजिक आदर्श की बात जिस भी रूप में संतों की रचनाओं में क्यों न आयी हो, उनका सब समय यही द्दष्टिकोण रहा है कि जितना भी भेदभाव है, जितना भी लड़ाई-झगड़ा है, उसके मूल में धर्म के मौलिक उद्देश्यों को नहीं समझना है।'' लेखक के ई आकलन आजो के जुग में सटीक लागत बा, धर्म के मर्म ना समझला के कारन आजुओ धार्मिक फसाद जारी बा। संत-साहित्य में माया के स्वीकृति आ ओकरा दार्शनिक परिप्रेक्ष पर विचार करत लेखक क़हत बाड़न कि संत लोग के अनुसार माया भक्त आ भगवान के बीच अंतर पैदा करेवाली सक्ति ह। जीव के भीतर अतना ना दुर्बुद्धि, कटुता भरि देले कि ओकरा हरिनाम लेबे के मवके ना मिले। ई अपना फंदा में पूरा संसार के फँसा लेले बिया। ई केहू के बस में ना आवे, बस खाली संत एकरा फंदा में ना फँसि पावे। अपना माया के स्वरूप के स्पष्ट करत लेखक एगो आसान वाक्य कहत बाड़न जवना में माया के वास्तविक स्वरूप दिखाई परि जात बा- "आध्यात्मिक उत्कर्ष के मार्ग में हर छोटी-बड़ी बाधा को संतों ने माया कहा है।''

निरगुनिया संतन के माया-दर्सन पर बिचार करत लेखक कहत बाड़न कि माया ब्रम्हा के सक्ति ह। एही सक्ति से संयुक्त होके निर्गुण ब्रम्ह सगुन हो जाला। वस्तुतः एकरे से संयुक्त हो के ब्रम्ह जगत् के उत्पति करेला। माया के एह अनोखा सक्ति के बरनन करत लेखक माया के एगो दूसर परिभासा गढ़त बाड़न- "इस जगत् के समस्त कार्य–व्यापारों की कारण–शक्तियों का सामूहिक रूप माया है।'' आगे कहत बाड़न कि माया परमेश्वर के बीज सक्ति ह। एह जगत् के रचना करे खातिर ईसवर माया पर अवलंबित बा। कहे के मतलब ई बा कि जवन माया जीव खातिर घातक बिया, बाधक बिया, उहे माया ईसवर खातिर एगो सर्जन सक्ति बिया। माया के बिना ईसवरो सर्जन में सक्षम नइखन।

एह बात के लेखक बड़ा आसान शब्दन में फरिया के बतावत बाड़न– “माया की दो शक्तियाँ मानी गयी हैं- आवरण और विक्षेप। आवरण अर्थात् वास्तविकता को छिपाना और विशेष उसके स्थान पर दूसरी वस्तु को रखना। इन्ही शक्तियों से माया ब्रम्ह के स्थान पर जीव को प्रपंच जगत के दर्शन करवाती है।’’ निरगुनिया संतन के माया-दर्सन के ना समझला के चलते सामान्यतः लोग एह मत के बेद-बिरोधी मानि लेबेला। एह भ्रांति के तूरत लेखक के कहनाम बा कि इहाँ बेद के बिरोध नइखे, बलुक बेद पढ़ियो के गँवार बनल पंडित लोगन के बिरोध बा। संत-काव्य वस्तुतः आचरन के काव्य ह। माने जवन बेद सास्तर में पढ़त बाड़ऽ ओकरा के आचरनो में उतारे के चाहीं । ई लोग कथनी-करनी में एकरूपता पर ध्यान देले बा।

निरगुनिया संतन के माया दर्सन के मूल भावना के समेटत लेखक कहत बाड़न - “माया की वृत्ति रचनात्मक और ध्वंसात्मक दोनों है। जीव में अहंता है। अतः यह भी माया के परिवार का एक सदस्य बन जाता है। भक्ति में उसका त्याग जरूरी है। माया का व्यापार सब जगह है। कोई भी इससे अछूता नहीं रहता। अतः परमात्मा या गुरु शरण में ही इससे मुक्ति पायी जा सकती है। संतों का यह सुचिंतित मत ज्ञान, वैराग्य और गृहस्थाश्रम में रह रहे सभी जनों को एक साथ शांति प्रदान करता है। माया से बचने के लिए जीव को हमेशा जाग्रत रहना है। जागते ही माया चेरी बनकर साथ रहने लगती है।’’

एह तरह से लेखक माया दर्सन, दर्सन के गूढ़ तत्व के सार तत्व बहुत आसान भासा में सामने राखत बाड़न। समझावे के भासा आ सैली दूनों बड़ा आसान बा। कठिन बिसय के सहज बनावे के कला बेजोड़ बा। संदर्भन के साथ-साथ मौलिक विबेचना के भावना प्रबल बा।

अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...

भोजपुरी पत्रिका 'सँझवत' (अंक -9) डाक द्वारा काल्ह प्राप्त भइल। पत्रिका, हम पहिलका बेर पढ़ रहल बानी आ एह अफ़सोस में बानी कि एकरा पहिले वाला अंक हम काहे ना पढ़ पवनी। खैर, अब मँगा के पढ़ लिहब। भोजपुरी भाषा साहित्य ला एगो ई अजगुत पत्रिका बा, जवना में आदरणीय विद्वान संपादक डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी अपना साहित्यिक सूझ-बूझ के अप्रतिम परिचय देले बानी। साँचहूँ, संपादन असहीं होखे के चाहीं कि पत्रिका में साहित्यिक गंध के भरपूर गमक होखो आ माई भाषा के सतत निःसृत उदगार। एह पत्रिका में हमरो एगो गजल के जगह मिलल बा।

डॉ. अनिल कुमार दुबे, सिवान (बिहार)

बलभद्र
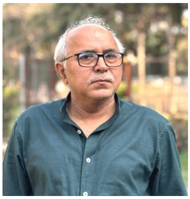

भोजपुरी निबंध आ नंदकिशोर तिवारी : कुछ बात

भोजपुरी निबंध के लेके जवन कुछ कहीं-कहीं सुने के मिलेला, कि भोजपुरी में निबंध के स्थिति ठीक नइखे, भोजपुरी पत्रिका, खासकर 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'पाती' आ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के पहिले के कुछ अंक के पलट के देखत कहल जा सकेला कि ई बात ठीक नइखे। भोजपुरी के एह पत्रिकन में निबंध छपत रहल बा। भोजपुरी निबंध के संग्रहो प्रकाशित भइल बा आ पत्रिकन में समय-समय प ओह किताबन प चरचो छपत रहल बा। ओकर नोटिस तनी कम लिहल गइल, भा लिहले ना गइल। इहो एगो तथ्य बा कि निबंध के कविता आ कहानी से तनी कम मान दिहल गइल बा। कविता आ कहानी केंद्रित अंक देखे के मिल जाई, निबंध-केंद्रित अंक साइते देखे के मिली। तबो 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' निबंध-प्रकाशन के लेके काफी गंभीर रहल बा। विवेकी राय जी त एह पत्रिका के विचार प्रधान निबंध के प्रोत्साहन के पत्रिका मनले बाड़न। उनकर किताब 'भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान' में निबंध केंद्रित उनकर चार गो लेख बा जेमे भोजपुरी-निबंध के स्थिति आ प्रगति पर विचार बा। निबंध-केंद्रित पत्रिका के रूप में 'पुरवइया' नाम के पत्रिका के उल्लेख विवेकी राय जी के एगो लेख में बा। राय जी लिखत बानी- "कुछ वर्ष पूर्व वाराणसी से स्व. डॉ. स्वामीनाथ सिंह, ईश्वरचंद्र सिन्हा और रामबली पांडेय के सहयोग से पुरवइया नामक निबंध-पत्रिका का इस भाषा में प्रकाशन शुरू हुआ। गुरुगंभीर आकार-प्रकार की इस शोधपरक वैचारिक पत्रिका के प्रवेशांक में बहुत दबीज-दबीज आठ निबंध आए। ये निबंध विविध विषयों की पृष्ठभूमि पर आधारित थे, जैसे- राजनैतिक, समालोचनात्मक, खोजपूर्ण और सिद्धांतचर्चामूलक आदि। कुछ ललित लेख भी थे। दूसरा अंक पहले से भी वजनदार निकला, ड्योढ़े निबंध और अधिक गंभीरता लेकर। लेकिन, पुरवइया बंद हो गई। यह बात सन 1968-69 की है।" (भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान, पृष्ठ 105).

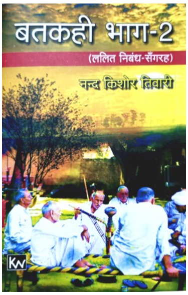

निबंध-प्रकाशन में 'भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' पत्रिका के भूमिका समझे खातिर पुरनका अंक सब के पलटे के चाहीं। एही में शारदा पांडेय के 'सँझवत' आ 'कलसा हंसल' जइसन लोकसंस्कृति आधारित ललित निबंध मिलल आ अब त उनकर एगो संग्रहो छपल बा जवना के नाम ह 'रसबोध के एने ओने'। अनिल कुमार आञ्जनेय के निबंध-संग्रह 'विचार बंद' के समीक्षो एही पत्रिका में छपल बा। हरिकिशोर पांडेय, रामेश्वर नाथ तिवारी, आञ्जनेय, विंध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, अशोक द्विवेदी, हरिशंकर वर्मा, कृष्णानंद कृष्ण, तैयब हुसैन पीड़ित, भगवती प्रसाद द्विवेदी, राजेंद्र प्रसाद सिंह, बलभद्र ना जाने कतने लोग के निबंध एह पत्रिका में छपल मिली। 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आ 'पाती' में गदाधर सिंह, नंदकिशोर तिवारी के साथे-साथ अनेक लोग के निबंध मिली। 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' में 'हमार गाँव' नाम से एगो कालम छपत रहे। हिंदी के वरिष्ठ लेखक आ कवि लोग के गाँव से जुड़ल संस्मरण एह में छपत रहे। शिवप्रसाद सिंह, विद्यानिवास मिश्र, केदारनाथ सिंह, शुकदेव सिंह, रामदेव शुक्ल आदि के स्मृति-लेख छपल। बाद में 'हमार गाँव' संग्रह आइल जवना में सब संकलित बा। शिवप्रसाद सिंह के निबंध 'कोजागरी' 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' में छपल आ ई अरुणेश नीरन आ चितरंजन मिश्र संपादित संग्रह 'पुरइन पात' में संकलित बा। कोजागरी जरूर पढ़े के चाहीं। शिवप्रसाद जी लिखत बानी- " शरद पूर्णिमा के दिन हमरे बनारस में सगरे घाटन पर लम्बा-लम्बा बाँसन का टुनगी पर सींक भा बाँस के छोटहट खंचोली में, जवना के हमहन के पुरखा लोग मंजूषा कहत रहलें, दीया जरावल जाला। एह तरह के दीया के कहल जाला आकाशदीप।"(पुरइन पात, 47) शिवप्रसाद जी के अनुसार एकर पुरान नाम ह कोजागरी। जयशंकर प्रसाद के एगो चर्चित कहानियो ह 'आकाशदीप'। बहुत रोचक आ ज्ञान-गरिमा से सम्पन्न बा ई निबंध।

भोजपुरी बेशक बिना कवनो अकादमिक सपोर्ट के अपने बले-बूते खड़ा भाषा ह, एकरा लगे जवन साहित्य के पूँजी बा तवन भोजपुरिया लेखक, भोजपुरी प्रेमी लोग के लगन, रचनात्मक प्रतिभा, अभाव में जिए के जिद आ भाव के सुफल ह। राष्ट्रीय आंदोलन में अपना गीत आ कविता के बले अलख जगावे में कतो नइखे चुकल। भोजपुरी भाषा के संविधान के अष्टम अनुसूची में माँग के सवाल के लेके बहुते कुछ निबंध आ संपादकीय लिखाइल बा। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक बार आयोजित भइल बा। एह अवसर पर अध्यक्ष के जवन वक्तव्य रहल बा, ऊ पत्रिका में छपल आ अब त 'भोजपुरी के अस्मिता चिंतन' संग्रह में ऊ सब संकलित बा। लोक, लोकजीवन, लोकसंस्कृति, भोजपुरी के शब्द संपदा, रचनात्मक साहित्य आदि अनेक विषयन पर चिंतन-मनन देखल जा सकेला।

भोजपुरी के कई एकगो निबंध-संग्रह प्रकाशित बा आ बहुत निबंध त अबहीं तक पत्रिकन के पुरान-पियराइल पनन बीचे परल बा। बहुत जरूरी बा सबके सामने ले आइल। सोचे-विचारे के पैटर्न के तलाश आ विकास। हिंदी के पैटर्न प बात बहुत मुफीद ना रही। विवेकी राय जी भोजपुरी में विचारपरक निबंध के अभाव बतावत बाड़न। बुझाता थोर घरी कि बात ठीक बा, बाकी, निबंध कूल्हि देखत लागत बा कि

एह तरी सोचल भा लिखल बहुत ठीक ना होई। भोजपुरी में चिंतनपरक निबंध बा आ ऊ अपना शिल्प-शैली में बा। ऊ अध्यक्षीय भाषण के शिल्प में बा, ऊ ओही तरी नइखे जइसे हिंदी में बा। ऊ ओह लेखा होइबो ना करी। काहे कि भोजपुरी के निबंध विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुरूप ना होके जन के मन आ प्रकृति के अनुरूप बा। जन के मनसायन ओकर मकसद रहल बा। रामायण सिंह के 'मनसायन' नाम से निबंध संग्रह भी बा। भोजपुरी निबंध के लगे लोकजीवन आ लोकसंस्कृति के पूँजी बा। बाकी ई ओकर आपन सीमा भी बा। लोक से बाहर निकलल बहुत जरूरी बा। विषय-विस्तार जरूरी बा। अन्य तरह के विषय आ चिंतन से अंतर्क्रिया जरूरी बा। आ ई सब तब संभव होई जब भोजपुरी के लेखक आ विचारक लोग अन्य भाषा, साहित्य आ विचार के संपर्क में जाई। दोसरो कूल्हि भाषा-साहित्य प भोजपुरी में लिखी। ज्ञान-विज्ञान के संपर्क में जाई, संवाद कायम करी। प्रगतिशील साहित्य से नाता जोड़ी। प्रगतिशील साहित्य के लेके छी मानुख वाली मानसिकता से बहरी निकली। देखे में आवेला कि भोजपुरी के लोकगीतन के कुछ लोग व्याख्या भा भावानुवाद भोजपुरी निबंध में करेला। भोजपुरी लोकगीत के व्याख्या भा भावानुवाद भोजपुरी निबंध के कतना ले दूर ले जाई! लोग एह के कतना आ काहे पसन करी। बाकी इहो बात समझे के होई कि लोकजीवन आ लोकसंस्कृति विषय पर आधारित निबंध के ठीक से पाठ जरूरी बा। ओकरा भीतर से जीवनधर्मी तत्व के तलाश जरूरी बा। ना त अर्थ के अनर्थ हो जाई।

भोजपुरी निबंध-लेखन में रामेश्वरनाथ तिवारी, जितराम पाठक, गदाधर सिंह आ नंदकिशोर तिवारी के अप्रतिम योगदान बा। ई लोग हिंदी के प्रोफेसर रहल बा। इनका लोग के निबंध पढ़त खा भी ई बात समझ में आ जाला। अध्ययन आ विद्वत्ता झलकेला। दिलचस्प बात कि एह चारों लोग के आरा से नाता रहल बा। रामेश्वर नाथ तिवारी, जितराम पाठक आ गदाधर सिंह के आरा में आपन घर रहे आ नंदकिशोर तिवारी जी के सासाराम में। जितराम पाठक, रामेश्वर नाथ तिवारी आ नंदकिशोर तिवारी बहुत पहिले से भोजपुरी-लेखन में सक्रिय रहे लोग। गदाधर सिंह बहुत बाद में भोजपुरी में लिखे शुरू कइलें। चारों जना भोजपुरी के श्रेष्ठ गद्यकार ह लोग। गद्यो में निबंध-लेखन में ख्याति वाला। आरा के एगो अउर निबंधकार हवें रामायण सिंह। रामेश्वरनाथ तिवारी के हिंदियो में ललित गद्य बा। 'खजूर का पेड़' और 'मुट्टन काका की इक्का की सवारी' श्रेष्ठ उदाहरण बा। जितराम पाठक भोजपुरी में नया ढब के कविता भी लिखले बाड़न। हाले में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के जितराम पाठक विशेषांक आइल बा। नंदकिशोर तिवारी जी 'सुरसती' पत्रिका निकालत रहीं आ 'बतकही' नामक निबंध-संग्रह भी छपल बा।

नंदकिशोर तिवारी जी के निबंध 'कि बरधे कि मरदे' पाती, जून 1999 में छपल रहे। उनकर भोजपुरी के निबंधकार रूप से हमार ऊ पहिल भेंट रहे। लोकजीवन आ संस्कृति के अध्येता ही एह तरह के विषय प लिख सकेला। आगे चल के उनकर गाँती , पनही, सैकिल निबंध पढ़े के मिलल त समझ आइल कि निबंधकार खातिर शास्त्र आ लोक दूनो के अध्येता भइल जरूरी बा। लोक से विषय लेके शास्त्र में प्रवेश आ फेर

शास्त्र के लोक के जमीन से जोड़ल कतना जरूरी आ तर्कसंगत बा, समझे खातिर तिवारी जी के भी निबंध देखे के जरूरत बा। 'कि बरधे कि मरदे' में बात ऋग्वेद के ऋचा से शुरू होके लोक में प्रवेश करेला। खेती-किसानी, गाय, बैल, रिश्ता-नाता, कथा-कहाउत, लोकविश्वास तक पहुँच जाता। खेती, घर आ दुआर के सिंगार बरध आ मरद हवे, एह लोक कथन के आधार प निबंध बा। तिवारी जी एह कथन के लोकउद्यम से जोड़ के देखत बाड़न जे में बरध आ मरद के मेहनत, खटानी, भूख-पियास, मउज-मस्ती के सजीव चित्रण बा। ई निबंध छपल बा 1999 में। ई समय नोट करे के चाहीं। एह समय खेती में ट्रैक्टर के उपयोग शुरू हो गइल रहे। हर गाँव में ट्रैक्टर आ गइल रहे। बाकी खेती बैल के बले होत रहे। नाद, चरन, खोंप, भुसहुल रहे। दुआरे-दुआर माल-मवेशी रहत रहे। ऊ समय रहे जब ई बात लोग के दिमाग में जगह बनावे शुरू क देले रहे कि बैल के संगे बैल बने के परेला। बैल से खेती में एक त टाइम जादे लागेला, ऊपर से हजार झमेला। ट्रैक्टर के महातम-बखान गाँव के फिजा में पैठ बनावत रहे। ट्रैक्टर के इंट्री आ बैल-विदाई के पटकथा लिखा चुकल रहे। एह संक्रमण काल के ध्वनि एह निबंध में बा। आज ई हाल बा कि खोजलो प बैल ना मिली। झारखंड के गाँवन में जहाँ-तहाँ बैल लउक जाले, आ कतना दिन ले, ई कहल कठिन बा। करमोकरम एह बदलाव के भोजपुरी क्षेत्र के संस्कृति प परे वाला असर के भी संकेत एह निबंध में बा। गीत में ट्रैक्टर के दखल होखे लागल। बाकी, कुछ अउर बात देने विचार जरूरी हो जात बा। निबंध बरध आ मरद के अर्थ आ बखान में डूब-उतरा के रह गइल बा। लोकसंस्कृति के द्वंद्व के तरफ निबंधकार के ध्यान नइखे। लोकसंस्कृति में मरद आ मेहरारू दूनो के जगह बा, दूनो के महत्व बा। निबंध एकपक्षीय हो के रह गइल बा। तिवारी जी के आपन वर्गीय भा जाति वाला पोजीसन जादे उभरल बा। खेती-किसानी वाला श्रम में सवर्ण परिवार के मेहरारू के भागीदारी ना होला। बाकी, गरीब आ पिछड़ा आ दलित समाज के मेहरारू रोपनी, सोहनी, कटनी, दँवनी, ओसवनी, पटवन जइसन काम में लागल-भीड़ल रहेली। ऊ जतना घर-भीतर होली, ओतने घर-बाहर। भोजपुरी के अनेक लोकगीत एह तथ्य के समर्थन में मिल जाई। लोकसंस्कृति कवनो अइसन चीज ना ह कि ओकरा चउरा प फूल चढ़ावल जाए। ऊ आलोचना के भी विषय ह। तर्क के भी।

एह तथ्य के बावजूद, एह निबंध के आपन महत्व बा। लोक आ शास्त्र बरध आ वृषभ के कइसे समझेला, का व्याख्या करेला, का कल्याणकारी पक्ष बा, समझे खातिर ई निबंध पढ़े के चाहीं। एक बार फेर कहत बानी कि 1999 इयाद राखे के चाही। 1992 में बाबरी विध्वंस कांड रचा चुकल रहे। धरम आ राजनीति के मेल के उन्माद से लोकतंत्र आ धर्मनिरपेक्षता तार-तार होत जात रहे। बैल प बात करत निबंधकार धरम के व्याख्या करत बहुत जरूरी बात लिखत बाड़न- "बैल महाराज आपन बड़ाई कबहूँ मुँह से ना कइलन। परासर जी अइसन स्मृतिकार एह भेद के बतवलन। साँचो धरम आपन जय-जयकार अपने ना करे, धरम पथ पर चले वाला करेला। धरम राजनीतिक पार्टी के कवनो टम्परोरी नारा ना ह,वोट खातिर एकर महत्व ना ह। मनुष्यता

खातिर ह। गद्दी खातिर ना ह, सेवा खातिर ह। लड़ावे खातिर ना ह, समस्त जीव के रक्षा खातिर ह।" (पाती, पृष्ठ 15, वर्ष 1999) निबंधकार अपना समय के उन्मादी राजनीति पर आपन विचार बहुत ढंग से रखले बाड़न।

बैल के भा पशु-परानी के साथे किसान के आत्मीय संबंध निबंध के आधार बा। आज के उपयोगितावादी दौर में एह निबंध के महत्व महसूस कइल जा सकत बा। कृषि संस्कृति में बैल के सवांग (परिवार के सदस्य) मानल जात रहे। गाय लक्ष्मी आ बैल महादेव होत रहलें। प्रेमचंद के 'दो बैलों की कथा' देखे के चाहीं। बैल बूढ़ा हो जाए तबो लोग खूँटा ना छोड़ा देत रहे। आज त बाते बदल गइल बा। गाय अब किसान से बेसी राजनीति के विषय हो गइल बा।

'गाँती' निबंध स्मृति आधारित बा जवना में निबंधकार के बचपन, परिवार, गाँव, जोड़ापारी के लइका आ खेल, किसान परिवेश के बात बा। पहिले जाड़ा में ऊनी भा गरम कपड़ा साइते केहू के पास होत रहे। भरबँहिया कुरता हो जाए त ढेर रहे। लरिकाईं में जाड़ा में माई, आजी भा बड़ बहिन जाड़ से बचाव खातिर गाँती बान्ह देत रहे लोग। गाँती खातिर नया कपड़ा के जरूरत ना रहे। पुरान धुरान कपड़ा काफी रहे। निबंध में गाँती के साथे माई के इयाद बा। गाँती एगो सहारा रहे। लोग के पासे जवन साधन रहेला, ओकरे बले जीवन बितावेला। लेखक आज के आ बचपन के समय के तुलना करत बा। पहिले अभाव में जिए के भाव रहे आ अब बहुत कुछ अछइत लोग भारी असंतोष में जी रहल बा। 'सैकिल' पढ़त सुदर्शन के कहानी 'साइकिल की सवारी' के इयाद आइल। लेखक खातिर ई अजूबा चीज बा। दू पहिया के सवारी। हर चीज के जइसे आपन समय होला ओइसे साइकिलो के आपन समय रहे। ओकर ऐतिहासिक लोक जरूरत आ महत्व पर बात बड़ा रोचक अंदाज में बा। साइकिल लेखक के जीवन में संगी साथी अस बिया। निबंधकार साइकिल के सैकिल कहत बा। अइसन नइखे कि ऊ साइकिल शब्द से नावाकिफ बाड़न। एह प्रयोग के लेके अतना सावधान बाड़न कि भूल से, गलती से कहीं सैकिल छोड़ साइकिल के प्रयोग नइखन करत। पूरा निबंध साइकिल के महिमा-गान से लबरेज बा। महिमा-गान के झूठ बखान बिल्कुल ना केहू कह सकेला। एक वाक्य बढ़ा-चढ़ा के नइखे। साइकिल के उपयोग के कतना कूल्ह उदाहरण हो सकेला, लेखक के नजर कहाँ-कहाँ कवना एंगल तक पहुँचल बा, ऊ देखल बड़ा रोचक अनुभव से गुजरल बा। चित्रकला के कवनो कलाकार चाहे त अलग-अलग मुद्रा, उपयोग, स्थिति प साइकिल सीरीज पेंटिंग बना सकेला। नाम त नइखे इयाद परत, बाल्टी में दूध पहुँचावे वाला दुधहा लोग पर एक जना के पेंटिंग देखे के मिलल रहे। एह निबंध में भी दूध वाला लोग आ साइकिल बा। निबंधकार के पिताजी के जीवन साइकिल से आसान हो गइल रहे। साइकिल पर हमरो एगो कविता बा- 'चलती जाए है बाबूजी की साइकिल।' पंचर के दुकान प प्रकाश उदय के कविता बा 'दुकान हउवे पंचर के पक्का'। निबंध में भी हवा भरे आ साइकिल ठोक-ठाक के ठीक करे के बात बा। यादवेंद्र जी साइकिल केंद्रित कविता के एगो संग्रह 'साइकिल का जनतंत्र' आ संस्मरण 'यादों में चलती साइकिल' के संपादन कइले बाड़न। तिवारी जी के

निबंध में साइकिल पर बात पर बात पर बात बा। लागत बा कि तिवारी जी के सैकिल वास्तव में होइयो के जादुई ह। पंकज कपूर वाली फिल्म 'ब्लू अंब्रेला' अस मन-लुभावन। ई भाषा आ शिल्प के संगे जीवन के अनुभव के मेल के चलते संभव भइल बा।

तिवारी जी के 'पनही' निबंध पढ़ले के आपन मजा बा। 'सैकिल' में निबंधकार के मन जीवन के रोज-रोज में रमल बा, साइकिल आ आम जिनगी में आ 'पनही' में वेद, शास्त्र, कुमारसम्भव, शतपथ ब्राह्मण, रामलला नहछू, गीतावली, तुलसी, पद्मावत, सूर, जायसी के साथे-साथ हिंदी, संस्कृत, फारसी, मराठी, अवधी, ब्रज आदि भाषा में। निबंध के एह तरह के विषय हमरा इयाद बा कि हाई स्कूल के पढ़ाई के समय हर प्रसाद दास जैन स्कूल, आरा के हिंदी व्याकरण आ रचना के विद्वान शिक्षक आदरणीय स्व. रमाकांत पांडेय जी सुझावत रहीं। ई मय निबंध पढ़त उनकर खूब इयाद आ रहल बा। अनेक ग्रंथन में पनही कवने अर्थ में प्रयोग में आइल बा आ कवना प्रसंग में एकर उल्लेख बा।

तिवारी जी सासाराम के हईं आ सासारामे के रहवासी बाड़न राजेंद्र प्रसाद सिंह। राजेंद्र जी भी हिंदी के प्राध्यापक हई आ तिवारी जी के सान्निध्य में अध्यापनो कइले बाड़न। इनकर पहचान भाषा वैज्ञानिक के रूप में बा। एकरा संगेसंग ई भोजपुरी के बढ़िया निबंधकार भी हवें। 'भोजपुरी में आम, नीम आ जामुन' इनकर बहुत बढ़िया निबंध ह। तिवारी जी के रचनात्मक व्यक्तित्व के बारे में टेलीफोनिक बातचीत में राजेंद्र जी इनकर विद्वत्ता आ रचनात्मक व्यक्तित्व के बारे में बतावत कहलें कि तिवारी जी के लिखल सब प्रकाशित होखे के चाहीं। राजेंद्र जी के विचार से हमनी सब सहमत बानी जा। तिवारी जी के अउर निबंध बा। सब पर बात होखे। अउर निबंधकार लोग पर बात होखे। भगवती प्रसाद द्विवेदी के भी निबंध संग्रह छपल बा। हरिकिशोर पांडेय के भी निबंध बा। तैयब हुसैन जी के साहित्यिक निबंध संग्रह ह 'जियतार जिनगी'। गदाधर सिंह के दूगो संग्रह बा। सब पढ़े के होई, तब बात ठीक से हो पाई।

गिरिडीह, झारखंड।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

गाँती

अपना बचपन के बात छोटो होखो त भुलाय ना। समया पर ओकर दोष-गुन इयाद आवत रहेला। सभकर बचपन के इयाद में माई-बाप के साथे रहला से ऊ लोग के सिखावन, मनावन, बरजावन जादा ताजा अबहिनो रहेला। बुढ़ापा, बचपन के इयाद के भँड़ार में से निकालिके हर मउसम में, हर घटना के समय, हर परतोख देबे में ओह बात के रगरिके कुल्ही मोरचा छोड़ावत साफ करिके ऊजर कर देला। मानुस तन अइसन मिलल बा कि ओह में पाप-पून दूनो बचपन से लेके अबहिन तक के इयाद के गगरी में राखल मधु लेखा कबो पुरान ना होखे। बस 'जब जरा गरदन झुकाई देख ली'। जइसन हिरदा के भीतर परेम के तातल, घीव से लवरेज बरबरी के हलुआ अइसन ऊ इयाद तनिको बात अइला पर भीतर से चूहन नीअन बिल में पानी पड़ते, बल से निकल आवेला।

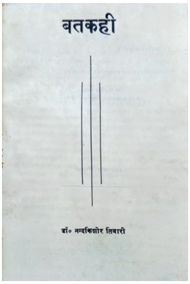

एने जाड़ के अगवानी में हावा चलते सनूक में से ऊनी बहतर निकले लागल। एक सनूक भरल बा। कवनो छाती के बचावे वाला सोइटर ह, कवनो कान तोपे वाला कनटोपी ह। कवनो गाला के मफलर ह कवनो भर बाँह के गंजीनुमा सोइटर ह, कवनो उँगरी तोपे वाला दस्ताना ह, कवनो इनर ह गोड़ के आ कवनो भर देंह के इनर ह। कवनो गोड़ के पैताबा ह, कवनो नाक के ऊपर राखे वाला नपकीन। अइसहीं जँघिया, तरह-तरह के। घुठी भर से नीचे के अलावा आ घूठी भर से ऊपर कुल्ही अलगा अलगा। अगर सभका के अलगा-अलगा रखल जाव त घर भर जाई अइसन सनूक रखे में। कहाउत ह कि लइका आ बूढ़ के जाड़ा जादा सतावे ला। मसल में बा कि जाड़ा कहत बाड़न जवान भीरी जाइब ना, बुढ़वन, बचवन के छोड़ब ना। अइसना में छोट लइकन के मन त घर में लागे ना। बहरी खेले के मन सुरूज भगवान के जगते करे लागेला। बहरी आग के कउर धधकत बा। लोग गली में से गिरल पुअरा उठा के जेकरा तापे के बा ले आवत बा। कुछ अइसनो बाड़न जे केहू के पुअरा के गाँज में से दू मूठी गरू के खाए वाला धइलो में से निकाल के ले

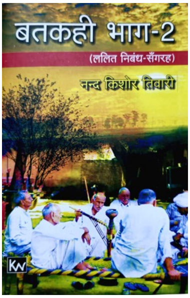

आवत बाड़न। गलचउरो होता अउरी तपनिओ तपाता। 'भानु पीठ सेइअ उर आगी' न्याय से सभकर गोड़ पेट छाती सेंकाता आगे से। पीठो पर एगो फाटल गमछी भर बा एह में माई के बोरसी से भाग के लइकन के घर से बहरी निकले के बा। सभे लइकपन में लँगटे रहल चाहे ला। ना कवनो लाज ना केहू से डर। लइकन के सरदिओ जलदी लागे ला। बहरी से बबुआ अइलन आ नाक से पानी बहे लागल। रात के सुतते हाबा-डाबा हो गइल। हँफनी छाती में बढ़ गइल। लिलार जरे लागल। माई के गोदी छोड़ते नइखन। भोजन, दूध कुछऊ नीक नइखे लागत। बस माई के छाती से लागल बाड़न। माई कबो अँचरा से, कबो अपना कपड़ा से नेटा पोंछ रहल बाड़ी। अब बहरी जाके जाड़ा भर खेले के मनाही हो जाय। माई के परेम आउर बाबू जी के डाँट अइसन रहे के बेरामो भइला पर लइकने के झुंड में जाए के मन मसोसत दिन बीत जाय। माई के किरिआ धराईं कि सबेरे ना त एक घंटा दिन चढ़ला हमरा के जाए दे। अब त ठीक होइए गइलीं । त माई कहे गाँती बान्ह देत बानीं। गरदन से खुले के ना चाही। जा खेलऽ, लेकिन गाँती ओइसहीं रही, जइसन बान्ह के बहरी जइबऽ।

अब माई आ बड़ बहिन दूनो मिलिके गाँती बान्ह देस। कपार से गोड़ तक। गोड़ में लूगा के जूता, जवन पैताबा कहात रहे। हाथ गोड़ दूनो छुट्टा। मारा-मारी करे लाएक। पलक पवते घोड़ा नीअन भागीं घरे से। जइसे बहुत दिन के बाद घोड़ा के पगहा खूँटा में से निकल गइल होखे। ठीके में कि खाय रोड़ा कि खाय घोड़ा। लइकन के सुभाव त घोड़े अइसन होला। कोई लइका कउर तक कहाँ जात रहे। बस गाँती पहिरे आ खरिहाना में लइकन सँगे चउकड़ी मारे लागे।

आज सोंचत बानीं कि देहात में लइकन के जाड़ा से बचे खातिर ई गाँती कतना बड़ा रच्छक रहे। कतनो सरदी रहे जदि लइका गाँती बन्हले बाड़न त उनकर ऊ कुछो ना बिगाड़ सके। हावा चले आउर नीमन लागे। फाने-कूदे में हाँफ ना आवत रहे। खरिहान में खटिया के मड़ई, ओकरा पीछा गरू-बछरू। भँइस गाय ओही घरी बछरू-पाड़ी देस। एने पुअरा के बगल में कुकुरन के बाचा काँय-काँय करत अपना भंड़ार में से निकलिके कूदे लागस। एही बीच में लइका जूट जास। हो जाय आँख मुदउल। भागऽ। चढ़ जा पुअरा के गाँज पर आ ओहिजा से कवनो दिसा में भाग जइबऽ। छुआए के कवनो बाते नइखे। जे नीचे रही से न छुआई। नीचे अइला पर कूता के बचवन सँगे दउरऽ। बछरू आ पाड़ा संगे दउरऽ। तोहरा खेले में ई जाड़ा के कवनो दाव ना लाग सके। ई कुल्ही परताप गाँती के रहे। ई गाँती लइकने खातिर रहे। भले सेआन एकर आधा-सुधा बान्हि के काम चलावे। माने ऊ लोग खातिर हाफ प्रूफ रहे, लेकिन बचवन के फूलप्रूफ। का मजाल कवनो गतर से जाड़ा सरीर में घुस जास। कवनो अँगरेज लेखक लइकन के अदमी के बाप मनले बाड़न। ई सही बात बा। कतना लइकन में बल होला। रात दिन खेलत रहेलन। थकबे ना करस। ना हाँसी, ना परेशानी, ना थकावट, ना सुस्तई, कुछुओ ना बुझा।

अब एह उमिर में एकर मरम बुझाता। देहात में ओह घरी अदिमी ओढ़त-बिछावत रहन। ऊन के बस्तर बहुत कम, टोवल-टावल लोगन किहाँ दू-चार साल पर

आवत होई। एगो 'सोइटर' ओह से कसहूँ बुना जाय। गाँव भर के बिननहार-सिखनहार ओह घरे सीखे खातिर खा पी के दुपहरिया में जुटस। गाँती खातिर कुछो सीखे के ना रहे। बाबू जी के पुरान चद्दर, गमछा, आउर धोती के माई जुटा के एक जगे सी के बान्हि दे। ऊ दोहरा-तेहरा हो जात रहे। ओहपर अपना फाटल लूगा के ढाकन लगा दे। अब नीमन एगो गाँती तइआर हो जाय। कई गो, अलगा-अलगा लइकन के तइयार करे के पड़े। जतना घरे के फेंकुआ कपड़ा रहे ओही से गाँती तइआर होखे। जइसे माई के फाटल साड़ी, दीदी लोग के फाटल साल, चद्दर चाहें बेडसीट के चदर, बाबू जी के गमछी, ई सभ के जोड़ के, ओकरा नीमन अंस से गाँती बनत रहे। एह में कुल्ही बदन, नीचे से ऊपर तक, माथा से गोड़ तक, गरदन, कान, सभ एके साथे तोपा जात रहे। अब जाड़ का करिहें। इस्थिति ऊहे रहे कि 'हम अपना साजन से नैना लड़इहें हमार कोई का करिहें'। हम जाड़ में दउरब, खेलब, हमार जाड़ दादा का करिहें। हम रहब लँगटे। बहरी सू-सू कइ लेब। हमरा आजादी के कोई रितु भाँड़ ना सके। अब आवस सरदी हमरा के खेले से रोके खातिर।

एह गाँती के माई बड़ा बिचार से बनावत रहे। सनूकी में अलगे धरे। बचवन के ईहें जाड़ ना लागे दीही। ओकर सूई चलावे में हर पोर पर ओकर पेआर के छाप रहे। ओह में खेले ना देबे के दबाव ना रहे। खेले-खाए में वेवधान से बचाव के भवना रहे। जब हथिया नछत्तर चढ़े त घर के कुल्ही बहतर जवन सनूकी में रहन उनुका के घाम देखावल जाव। ना देखवला पर ओह में चित्ती लाग जात रहे। सड़ जाय भितरे से। ऊपर से करिया लागे। साफ कपड़ा में तो जरूरे दाग लाग जाय। एही समया में कपड़ा गाँती खातिर चुनल जाय। ओह समाज में कुछो बीगे-फेंके लायक ना रहे। जब ढेर फाटल सड़ल कपड़ा होखे, तब ओह से लेवा सिआय। एह में छोट-छोट कपड़ा भी लाग जास। खाली डोरा-सूता के बल रहे। ओकरा पर फिर थोरिका नीमन लूगा लाग जात रहे।

गाँती माई के ओइसने तइआरी रहे, जइसे पंछी लोग बरसात के आवे के, धमके के पहिले, अपना बचवन के खोंता तइआर करे में लाग जाला। ऊ लोग फेंड़ के सूखल लकड़ी के चोंच से तूर-तूर के लेके उड़ि जाला आ खोंता वाला पतई से भरल डाढ़ पर ओकरा के जोर-जोर के छावेला बइठे लाएक, सूते लायक, बना देला। बया के पंछी के घर त देखहीं लायक होला। माई के गाँती में ऊहे रात दिन के कर्मठता, ऊहे निरमान के ललक, ऊहे सरदी के बचावे के भाव, ऊहे सोच, ऊहे छोह, भरल रहत रहे। दुलार के जवन सीमा उनुकर रहे, ओकरा खातिर साहित्य के वात्सल्य भाव कम पर जाई। ओह में छछनत दुलार रहे जवन पेआर के सीमा के लाँघ गइला पर परेला। काहें कि ओहमें चिंता भी रहे, बबुआ के सरदी लाग जाई, नाक से पानी बहे लागी तब हम का करब? ई चिंता माई के सरदी के रितु आवे के कल्पना के साथ जरावे लागे। माई के ओह में घर भर के लइकन के चिंता भरल रहे। हम चुके घर के अकेला लइका रहीं, ओतना लइकिन के बीच में एहसे जादा उनका सरदी सतावे। एगो-एगो चीट कपड़ा के कतना महँगा रहे। माई घर में खोजत रही, गाँती सिये में काम आई। खोजत रहीला त

ओह घरी मिले ना।

माई के कवनो गतर में अपना लइकन के पोसे में खराब कपड़ा के लाज ना रहे। हमार लइका मजगूत रहो देंह से दिमाग से कुछऊ पहिने, कुछऊ ओढ़े। खाय आ खूब खेले। खेलला से कुल्ही गतर में जोर आ जाला। जदि ई गाँती माई के ना बनित त चार महीना हमार घर से बहरी निकले के सवाले ना पैदा होइत। दुआरी के बहरी ताला लागि जाइत। हमार चार महीना खातिर सरीर के जेहल हो जाइत।

आज केहू गाँती के नाँवों नइखे जानत। हर घर के लइका कोट-पतलून पहिरे लगलन। गाँती का कहाला-न माई जानत बाड़ी, न भाई। सभका घरे लइकन के हगे-मूते खातिर 'हगिज' आवे लागल। पइसा अफरात लोग कमाए लागल। झूठ, चोरी, बेईमानी, लूट, जइसे आवे। अब गाँती बान्हल गँवारू होखे के लच्छन हो जाई। गमछी लीहल, कान-कपार तोपल भी देहाती, गँवई के बराबरे खातिर लच्छन शहरी लोग मानत होई लेकिन गाँव जवना से गँवई सबद बनल बा, ऊ कतना कम में रहल जा सके, नीमन ले जानेला। अब तक सरदियो, जवन हाड़ के कॅप-कंपा देव, परते नइखे। अदिमी मोबाइल पर जानत बा फलनवा जगे सात सेल्सियस पारा आ गइल बा। अब रितुओ के बिदरोही सरूप नइखे लउकत। न केहू गाँती बना सके ना बान्ह सके। माई के साथ सभ चल गइल। गाँती के अनुकरण में ओइसने कई गो दामी-दामी चीझ बन गइल बा। कोई लौंग-कोट कहत बा त कोई गाउन। लेकिन हमनी के गवई लइका त ओह घरी के सरदी के पहाड़ के अपना गाँती के छेनी-हथौड़ी से हर साले काटि के, फेंक के, रउँद देस। कतहीं ना त लइकन के डकधर रहन, ना कवनो गाँती के दोकान। महज बस्तर के कुछ टुकड़न से गाँती सिया जात रहे। खेले में फाट जाय त माई अपना तहबने के गाँती बना दे। कहे कि रून का सरदी से बचाई, जवन बहतर बचाई। रून में गरमी ना हऽ रूआ के बहतर में गरमी ह। ई देहात के लइकन खातिर सरदी के मेहींका तीरो के रोके वाला कवच रहे।

अब सोचीला कि देहात में माई लोग अपना गिरहथी के सीमित साधन में अपना सोना नीअन लइकन के कवना हिसाब-किताब लगा के पाल-पोस लेत रही। गाँती, गात्र से निकलल बा। गात्र माने पूरा सरीर होला । अमर कोश में देह के बारह नाँवन में पहिलका 'गात्र' ह- गात्रं बपुः। हाथी के आगे के जंघा आदि के एगो भाग के नाँव भी 'गात्रे' ह। पहिले राजा लोग के लइका दुपलिया, चौपलिया टोपी से आपन कपार-कान, गला ढाँपत रहन। उनुका बहतर आ आभूसन में एकर बरनन आइल बा। पाट-पटम्मर त ऊहे लोग खातिर रहे। लोग-लुगाई खातिर 'गूदरे' रहे। तब न कहात रहे- 'पाट पटम्मर तजि गूदरि पहिराऊँ'। चौपलिया टोपी के अँगुलिया कहात रहे। गोड़ में पनही रहे। लेकिन गाँती गाँव के रहे। आम अदिमी के लइकन खातिर रहे। ऊ साँचों के 'गात्री' रहे। देंह, पूरा देंह के, ओह में अटान रहे। लइका गाँती लगवले थोरिका देरी तक बिना बिछौना ओढ़ना के थाकि के सूत गइलन, तबो सरदी ना लागे के रहे। सरीर बन्हाइलो बा आउर खूलो बा। बहतर सभ दुआरन के बन कइले बा। सरदी के हावा का कर लिहन।

हमार सोच बा कि सीत देसन के कुल्ही बहतर एही गात्री (गाँती) के विकास ह। लइका सू-सू कइदेलस त गाँती आ लेवा दूनो सोख लेलस आ किरिन फुटते भगवान सुरूजमल ओकरा के दोसरका रात खातिर सुध कइके सूते लाएक बना देलन।

आज माई नइखे लेकिन ओकर बान्हल, गाँती के सुख नइखे भुलात।

(बतकही, भाग-2 से)

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...

रउरा द्वारा संपादित 'सँझवत' (अंक -9) मिलल। रउरा जब-जब सँझवत देखाईंले त मिजाज गद्-गद् हो जाला। एकर आवरण भोजपुरी संस्कृति के झलक देखा के अँखियन के सुख पहुँचावेला। छपाई सफाई आ शुद्धि सँझवत के अलग विशेषता के प्रमाण देवेला ।

अंक-9 के संपादकीय 2025 में छपल कुछ विशेष किताबन के ऊपर बा। ई सब किताब भोजपुरी साहित्य के बढ़ंती में आपन अहम योगदान देवे वाला बा। डॉ० नंदकिशोर तिवारी जी संस्कृत-हिन्दी-भोजपुरी के मान्य विद्वान बानी। उहाँ के भाषा विमर्श बहुत ज्ञानवर्धन करेला। शब्द आ ओकरा अर्थ ले के बड़ा महत्वपूर्ण विमर्श एह अंक में बा।

प्रो० बच्चू पाण्डेय के कवि व्यक्तित्व पर राउर विमर्श आ डॉ० कमलेश राय के एगो गजल के डॉ० विष्णुदेव तिवारी के प्रभाववादी आलोचना बहुते प्रभाव छोड़त बा। समीक्षा में श्री भगवान पाण्डेय 'निरास' के काव्य संग्रह 'किसिम-किसिम के फूल' में कृष्ण कुमार जी काव्य-दृष्टि पर विचार कइले बानी त सौरभ पाण्डेय के कथेतर गद्य पुस्तक- 'बात बात बतकूचन' में बदलत सामाजिक ढाँचा के कइसे बिचार भइल बा,पर नजर दउरवले बानी। रंजन विकास जी के संस्मरण पुस्तक 'फेरु ना भेंटाई ऊ पँचरुखिया' के पी राज सिंह द्वारा कइल समीक्षा में सामाजिक जन जीवन, इतिहास आ पहिले के कमी बेसी के दस्तावेज मनले बानी। भोजपुरी के पहिला डायरी साहित्य 'नीक जबून' (रामरक्षा मिश्र 'विमल') के पंकज तिवारी जी अपना समीक्षा में संस्कृति के सुरक्षा कवच मनले बानी।

डॉ रंजन विकास जी के संस्मरण 'पचरुखी के चीनी मिल' आ महाभारत पुराण आधारित कहानी 'आँखि रहत' बड़ा प्रभावशाली बा। विद्या शंकर विद्यार्थी आ मनोकामना अजय के लघुकथा समस्या प्रधान बा,। अइसे त 'धरोहर' में भारतेन्दु जी के भोजपुरी कवित्त देके रउरा भोजपुरी काव्य के समृद्ध परम्परा के उदाहरण देलहीं बानी, कवितो खंड में प्रणयी जी, अशांत जी आ अरुण जी के रचना धरोहरे अस बा। पीयूष जी के गीत , भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के गजल , श्रीभगवान पाण्डेय जी के गीत , रवि जी के किसान केन्द्रित कविता आ सौरव पाण्डेय जी के नवगीत भोजपुरी काव्य परम्परा के पोढ़ता के परिचायक बा। उपाध्याय जी के मौसमी रचना, भावुक जी के नारी विमर्श के रचना पठनीय बा। मोजर छपरहिया के व्यंग्य सवाल के जरिये बा त पटेल जी निर्गुण विषय आधुनिक शिल्प में ढरले बानी। अंशु जी के छोट बहर में आ अंकुर जी के गजल सफल बा।

'किताब : एक नजरि में' स्तम्भ में दू गो किताब के परिचय आ 'सोस्ती सिरी पत्री लिखी' में पाठक लोग के प्रतिक्रिया दे के अंक समृद्ध बना देले बानी। वीरेन्द्र पाण्डेय के एकांकी समस्या प्रधान त बा बाकिर जवन संवाद में कसावट होखे के चाहीं ना बन पड़ल बा। सब मिला के हम जरूर कहब कि रउरा गागर में सागर भरले बानी। जय भोजपुरी

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र, मुजफ्फरपुर।

डॉ. अरुण मोहन भारवि

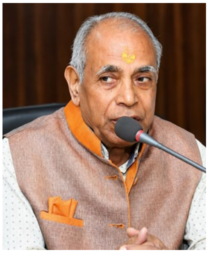

प्रो. (डॉ.) नन्दकिशोर तिवारी द्वारा कइल-करावल शोध-कार्य

महाकवि केशवदास अगर हिंदी काव्य के कठिन प्रेत बानी त प्रो. (डॉ.) नंदकिशोर तिवारी के शोध के रानी भा राजा मधुमक्खी कहल सही होई। शोध के माने होला कवनो विषय के ज्ञान के सही ढंग से गहन खोज कइल, जेमें नया तथ्यन के पता लगा के पुरान जानकारी के साथ फेनु से परीक्षण करल जाला आ वैज्ञानिक विधि के उपयोग करत कवनो समस्या के समाधान में गहराई तक पइठ के अइसन सोच आ समझ के विकास कइल जाव, जेसे मौजूदा ज्ञान में बढ़ोत्तरी हो सके आ समाज खातिर उपयोगी निष्कर्ष निकल सके। मतलब कि शोध कइल खाली जानकारी एक्कठा कइल भर ना ह बलुक तथ्यन के खोज-बीन भा परख कइके सत्य तक पहुँचे के कला ह, जवन अनुमान, अनुभव आ प्रयोग पर आधारित होला। एही से शोध के दोसर नाम 'अनुसंधान' कहल जाला। गुरुजी प्रो. (डॉ.) नंदकिशोर तिवारी जी का निर्देशन में जवन सैकड़न शोध भइल बा, ओकर फेहरिस्त बहुत लमहर बा। बिहार में के कहो, पूरा भारतो में दूर-दूर तक अइसन कवनो शोध-निर्देशक भा विद्वान नइखन लउकत जेकरा देख-रेख, मार्गदर्शन भा निर्देशन में बीसो-पचीस शोधार्थी आपन शोध प्रबन्ध पी-एच.डी. भा डी.लिट् का उपाधि हेतु विश्वविद्यालय में समर्पित कइ के डिग्री/उपाधि पवले होखस। जबकि ठीक एकरा विपरीत गुरुदेव तिवारी के अधीन खुद उहाँ के अंडर में सैकड़ों छात्र-छात्रा/ शोधार्थी लोग हिन्दी, भोजपुरी आ संस्कृत तीनों भाषा में डॉक्टरेट के उपाधि प्राप्त कर चुकल बाड़न, जेमे एगो अदना नाम एह पंक्तिन के लेखको के बा आ एह सँझवत के प्रधान संपादको के। अइसन कई दरजन शोधप्रज्ञ लोग बाड़न, जेकर पूरा शोध प्रबंध गुरुजी तैयार कइले-करवले बानी बाकिर ओकर कागजी निर्देशक, केहूँ आउर बा, काहें कि उहाँ के अंडर में कवनो सीट खाली ना रहे।

ई एगो बड़हन सच्चाई बा कि आज के बाजारवादी व्यवस्था में शोध कइल आ करावल एगो व्यापार बन गइल बा। शोध निर्देशक शोधार्थियन के अइसन-अइसन शोध शीर्षक दे के ओकरा के भँवर जाल में उलझा देत बाड़न कि ओकरा से बाहर निकले खातिर शोधार्थी लोगन के निर्देशक के पत्रम-पुष्पम समर्पित करे खातिर बाध्य होखे के पड़ता।

गुरुदेव (डॉ.) नन्दकिशोर तिवारी जी के जन्म शाहाबाद जिला (अब रोहतास) के बेरुकहीं गाँव में पं. राधा प्रसाद तिवारी के घर 2 जनवरी, 1941 ई. में भइल रहे।

आपके माताजी के नाँव प्राणपति देवी रहे। जे गो धर्मपरायण भारतीय नारी रहीं आ पिताजी महान कर्मकाण्डी विद्वान पंडित। आप एस. पी. जैन कालेज, सासाराम से 1961 में बी.ए. (आनर्स) के परीक्षा पूरे पटना विश्वविद्यालय में फर्स्ट क्लास सेकेंड रैंक से उत्तीर्ण भइला के बाद 1963 में पटना विश्वविद्यालय से एम. ए. (हिंदी) के परीक्षा भी फर्स्ट क्लास से पास भइनी। आप बिहारे ना हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० केसरी कुमार के निर्देशन में 'मध्य युग के भक्ति काव्य में माया' विषय पर शोध क के 1967 ई० में पी-एच.डी. की उपाधि पवनी आ फेनु प्रो. केसरी कुमार के ही निर्देशन में 'हिंदी काव्य शिल्प के विकास की पृष्ठभूमि में महाकवि निराला की मनीषा और कला का अध्ययन' शीर्षक पर डी.लिट् के डिग्री प्राप्त कइनी। साथ ही, प्रोफेसर छविनाथ मिश्र के निर्देशन में 'विशिष्ट वैदिक शब्दावली का अर्थानुशीलन' शीर्षक से शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कइ के संस्कृत में भी डी.लिट् के उपाधि अर्जित कइ के एगो नया कीर्तिमान बना देनी। प्रो. केसरी कुमार नकेनवाद के प्रवर्तक रहीं। आपके विद्वत्ता के का कहे के बा, जब बोलीं त साक्षात जीभ पर सरस्वती के बास होखे।

आपके दर्शन हमरा तब भइल जब उहाँके हमार पी-एच.डी. शोध प्रबंध 'भोजपुरी उपन्यास : उद्भव और विकास' के विशेषज्ञ/परीक्षक होके प्रो. (डॉ.) विजयपाल सिंह अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के साथे अप्रील 1983 ई० में भाइभा में मगध विश्वविद्यालय, बोधगया पहुँचल रहीं।

गुरुदेव प्रो. (डॉ.) नन्दकिशोर तिवारी आपन शिक्षक जिनगी के श्रीगणेश गया कालेज, गया से कइनी बाकिर कुछे साल बाद आपन पारिवारिक जिम्मेवारी के चलते आपन गृहजिला सासाराम के एस. पी. जैन कालेज में आ गइनी, जहाँ इहाँका अक्टूबर 1998 तक रहनी। एही साल अक्टूबर माह में बक्सर में भोजपुरी साहित्य मंडल बक्सर का जलसा में आप विशिष्ट अतिथि के रूप में भूमिहार ब्राह्मण हाई स्कूल का प्रांगण में हमरा विशेष अनुरोध पर आइल रहीं। कार्यक्रम के संस्थापक/संरक्षक श्री कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', अध्यक्ष महाकवि गणेश दत्त किरण, मुख्य अतिथि बिहार सरकार के पूर्व मंत्री पं. जगनारायण त्रिवेदी आ मंच संचालक डॉ. अरुण मोहन भारवि रहीं। कार्यक्रम में कोलकत्ता से 'भोजपुरी माटी' के प्रबंध संपादक श्री सभाजीत मिश्र आ हास्य कभी रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख आ बक्सर के रामजी पांडेय 'अकेला' सहित राजनारायण सिंह राज, डॉ. अनिल कुमार आंजनेय, शिव बहादुर पांडेय प्रीतम, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' सहित अनेक स्थानीय कवि साहित्यकार लोग एकर गवाह बनल रहन। कार्यक्रम खूब जमल रहे। ओही घरी वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा से विशेष दूत द्वारा गुरुजी के हिन्दी विभागाध्यक्ष बनला के खबर मिलल रहे। फेनु गुरुजी आरा जाके आपन पदभार ग्रहण कइनी जहाँ से उहाँ के 31 जनवरी, 2001 के सेवानिवृत्त भइनी। अवकाश ग्रहण के बादो, आपके सोगहग जिनिगी आ मन शोधार्थियन आ शिक्षा जगत के समर्पित बा। आपके निराला साहित्य मंदिर, सचमुच शिक्षाप्रेमियन खातिर एगो मंदिर से ज्यादा महत्त्व राखता। आपके पास शिष्य, छात्र आ शोधप्रज्ञन के जवन भीड़ आजो लागेला, ऊ काबिलेतारीफ बा। एह लोगन के शोध खातिर कवनो किताब ग्रंथ खातिर

कहीं और भटके के जरूरत ना पड़ेला काहेंकि गुरुजी के आपन पुस्तकालय अतना समृद्ध बा कि ओतना सुघर सुसज्जित, समृद्ध पुस्तकालय हम आज तक कवनो शिक्षाविद, विद्वान, प्रोफेसर, आचार्य, शिक्षक भा साहित्य मनीषी के इहाँ नइखीं देखले। हमरा समझ से गुरुजी के लाइब्रेरी में कम से कम पच्चीस हजार से कम किताब नइखे।

गुरुजी ज्ञान का गुरुतर भार से दबल नइखीं बलुक ज्ञान से आउर विनम्र हो गइल बानी। आपके विनम्रता, सज्जनता का आगे बड़े-बड़े संत के संताई फेल बा। जे एक बार इहाँ किहाँ जाला, ऊ हमेशा खातिर इहें के हो जाला- 'लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।' गुरुजी के ज्ञान आ शोध के कवनो सीमा नइखे। प्रायः कवनो शोध निदेशक कवनो खास विषय भा भाषा में शोध करावेलन। ऊ लोग के दोसरा विषय के ओर आँख उठा के देखे के हिम्मत ना पड़े। बाकिर गुरुजी एकर एकलउता अपवाद बानी। रउरा खाली हिंदी ना बलुक भोजपुरी आ संस्कृतो में शोध प्रबंध तइयार करा के शोधार्थी लोगन के डॉक्टरेट दिअवले बानी। आपके खुद के शोध आ शोधियन के कइल शोध कार्य के मिलल जुलल रंग-रूप के ऊँचाई बहुते देखनउक बा, देखे जोग बा। पूरा देश के विद्वान एह शोध के मानकीकरण, गहराई आ परिश्रम के आकाशीय ऊँचाई देख के दांतो तरे अंगुरी काटेलन। गुणवत्ता आ संख्या बल- दूनों के लिहाज से इहाँ के शोध कार्य आज साहित्य के भंडार आ खजाना बनल बा, सहजे अपना ओर विद्वानन आ सुधी पाठकन के ध्यान खींचे में सफल भइल बा। एह शोधन से शोध के क्षेत्र में अनेक नया माटी करावल बा, नया क्षितिज के उद्घाटन भइल बा, नया द्वार खुलल बा। यहाँ के शोध के जवन सबसे मारकेबल बात बा, ऊ बा- ओकर फइलाव से ज्यादा ओकर गहराई। हिंदी के भक्तिकाल, छायावाद, आधुनिक काल के बाद भाषाविज्ञान, काव्यशास्त्र, लोकशास्त्र, भोजपुरी आ संस्कृत वांग्मय के दुरूह भा अलक्षित पक्ष के अपना शोध कार्यन से सहज सुलभ बना के परोसे में सफलता मिलल बा।

गुरुदेव के जन्म के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित 'प्रोफेसर नन्दकिशोर तिवारी अभिनंदन ग्रंथ' में डॉ. श्याम सुन्दर तिवारी के एगो सुघर आलेख में प्रो. तिवारी के शोध कार्यन के विस्तृत सूची दिहल गइल बा, जे से पता चलता कि कतना शोधार्थी कवना-कवना विषय पर कवना-कवना विश्वविद्यालयन से पी-एच.डी., एम.फिल० आ डी.लिट् के उपाधि पवले बाड़न। एह संक्षिप्त सूचिए से सुधी पाठक लोगन के पता चल जाई कि प्रोफेसर नंद किशोर तिवारी के शोध संसार के विस्तार, फइलाव, ऊँचाई-गहराई कतना व्यापक बा, इहाँ के शोध कार्य से साहित्य वाङ्मय के कवना-कवना क्षितिज के उद्घाटन भइल बा।

साहित्य में शोध कार्य कइल आ करावल कवनो लइकन के खेल ना ह। हँसी-ठट्टा ना ह। एही से पाँच-पाँच रुपया पर खरीदे वाला फर्जी के डाक्टरन के साहित्य में कुकुरमुत्तन के फउज लउकत बा। फर्जी डाक्टर लिखे वाला साहित्यकार आपन डॉक्टर लिखे के दमित कामना के कारण फर्जी संस्थानन से डॉक्टर के कथित समानार्थी नाम वाला उपाधि हासिल कइ के साहित्य में रोब गालिब करे में जुटल बाड़न। हमार मान्यता बा कि शोध खाली एगो दुरूह आ श्रमसाध्य वैज्ञानिक कार्ये ना ह बलुक ई अनवरत चले

वाला साधना यज्ञ ह। ई कबो ना पूरा होखेवाला सृजन यज्ञ ह। आज हमनी के जवन शोध कार्य पूरा बुझाता, ऊ काल्हु फेनु अधूरा भा अपूर्ण नजर आवे लागी।

साहित्य के सुप्रसिद्ध शोध मर्मज्ञ, महान शिक्षक, बहुचर्चित साहित्य मनीषी, तपःपूत साहित्यिक संत, समादृत शोधप्रज्ञ, मानस के राजहंस, प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक, गुरुदेव प्रो. (डॉ.) नन्दकिशोर तिवारी जी के श्रीचरणन में शत-शत प्रणाम निवेदित करत हम इहाँ के लमहर, सुखद स्वास्थ्य के ईश्वर से प्रार्थना करत बानी।

संस्थापक प्राचार्य, पी.सी. कॉलेज, बक्सर (बिहार)

सोस्ती सिरी पत्री लिखी...

'सँझवत' के अंक-९ (अक्टूबर-२०२५) के मुखपृष्ठ सुहावन आ संपादकीय सूचनास्पद लागल। डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के आलेख 'आर /आरी/अरार/डंडार 'के विश्लेषण ज्ञानवर्धक बा। डॉ. रामरक्षा मिश्र 'विमल' जी के आलेख 'आखर बिन धरती के दुख दूना' पुण्यश्लोक कविवर बच्चू पाण्डेय जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व प प्रकाश डाले में सक्षम बा। उहाँका भोजपुरी के अलावा खड़ी बोली के भी सशक्त हस्ताक्षर रहीं। डॉ. कमलेश राय जी के एगो गजल के विश्लेषणात्मक समीक्षा भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ समीक्षक डॉ. विष्णुदेव तिवारी जी कइले बानी। बेहतरीन गजल आ स्तरीय समीक्षा लिखेवाला दूनू महारथीन के साधुवाद!

समीक्षा स्तंभ का अन्तर्गत श्री भगवान पांडेय' निराश' के काव्य पुस्तक 'किसिम किसिम के फूल', सौरभ पाण्डेय के आलेख संग्रह 'बात प बात बतकुचन', रंजन विकास के 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' आ डॉ. 'विमल' के डायरी संग्रह 'नीक जबून' के समीक्षा स्तरीय बाटे।

डॉ. शारदा पाण्डेय के 'आंख रहत' महाभारत युध्द के दौरान राजमाता गांधारी के पुत्र-मोह,व्यथा आ पछतावा के करुण-कहानी बिया। शिल्प आ भाषा का दिशाईं ई कहानी भोजपुरी के श्रेष्ठ कहानियन के पाँति में राखल जा सकत बा। मनोकामना सिंह 'अजय' के लघुकथा 'रिश्ता' प्रभावकारी बिया। कविता,गीत,गजल आ शेष रचनन के चयन प विशेष ध्यान दिहल बा। 'सँझवत' के स्वर्णिम भविष्य खातिर हमार हार्दिक शुभकामना !

कन्हैया सिंह 'सदय', जमशेदपुर-831004

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

डॉ. नंदकिशोर तिवारी के पत्रकारिता : वैचारिक अनुष्ठान अउर सांस्कृतिक जागरण

अइसना में जबकि साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता कवनो ना कवनो मंच से जुड़के अपना अस्तित्व का सुरक्षा में टिमटिमा रहल बिया, डॉ. नंदकिशोर तिवारी बिना कवनो लोभ, भय भा अनुदान के, अपना दम पर आपन पइसा खर्च कइके के पत्रकारिता के एगो आदर्श गढ़लन। बिहार के रोहतास का माटी से निकलल ई मनीषी अपना संपादन का माध्यम से साहित्य, अध्यात्म, शोध आ लोक-संस्कृति के जवन त्रिवेणी बहवलन, ऊ आजुओ शोध के विषय बा। उनुकर पत्रकारिता सूचना देबे से आगे बढ़िके एगो 'नया मानदंड' (Criteria) स्थापित करे के एगो गंभीर का रूप में लउकतिया। हिंदी से लेके भोजपुरी तक, उनुका संपादन शैली में एगो अइसन ईमानदारी लउकतिया जवन आजु के बाजारीकरण का दौर में दुर्लभ बाटे।

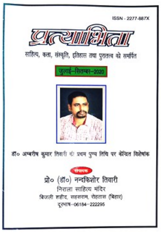

हिंदी पत्रकारिता के मजबूत स्तंभ : 'प्रत्याभिता', 'प्रेम-संदेश' आ 'हृदय-संदेश'

डॉ. नंदकिशोर तिवारी का हिंदी पत्रकारिता के पहचान बनऽता मुख्य रूप से तीन नियमित पत्रिकन- 'प्रत्याभिता', 'प्रेम-संदेश' आ 'हृदय-संदेश' से। वर्तमान में जबकि उहाँके उमिरि पचासी से ऊपर हो गइल बिया, ई तीनों पत्रिका अब बन्न हो गइल बाड़ी सन बाकिर इहनी के ऐतिहासिक अउर वैचारिक मूल्य आजुओ प्रासंगिक बा।

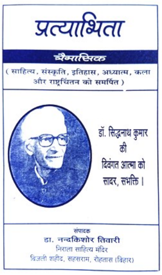

'प्रत्याभिता' : साहित्य, संस्कृति आ राष्ट्र-चिंतन के पत्रिका

'प्रत्याभिता' साहित्य, संस्कृति इतिहास, अध्यात्म, कला आ राष्ट्र-चिंतन के समर्पित त्रैमासिक पत्रिका हटे। ई रोहतास जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन का मुखपत्र का रूप में निकलत रहे। एकरा

के डॉ. तिवारी के बौद्धिक ऊँचाई का प्रमाण के रूप में भी देखल जा सकत बा। 'प्रत्याभिता' का माध्यम से उहाँका ई सिद्ध कइलीं कि क्षेत्रीय पत्रकारिता भी राष्ट्रीय स्तर के गंभीर विमर्श पैदा कर सकेले। प्रत्याभिता के एगो अंक का संपादकीय में तिवारी जी डॉ. सिद्धनाथ कुमार के याद करत जवन तर्क देतानी, ऊ उहाँका दार्शनिक पत्रकारिता के निचोड़ हटे- "रोशनी बराबर शेष रहती है, बस उसका रूपान्तरण होता रहता है।" एहमें प्रकाशित शोध आलेख, जइसे 'रहीम के साहित्य में भारतीय मान्यताएँ' और 'सातवें दशक के उपन्यासों में मार्क्सवादी जीवन' उहाँका ओह विजन के प्रत्यक्षीकरण करावतरे सन, जहाँ उहाँका साहित्य के समाज का वैज्ञानिक विश्लेषण से जोड़तानी। 'प्रत्याभिता' के खाली एगो पत्रिका ना कहके राष्ट्रचिंतन के एगो अइसना मंच का रूप में भी देखल जा सकता, जहाँ कला, इतिहास अउर अध्यात्म के समन्वय होत रहे।

'प्रेम-संदेश' आ 'हृदय-संदेश' : अध्यात्म आ आचरण के कोश

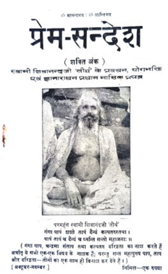

'प्रेम-संदेश' आ 'हृदय-संदेश'- डॉ. तिवारी का संपादन में दूनों नियमित पत्रिका रही सन, जवन स्वामी शिवानंदजी 'तीर्थ' का विचार आ दर्शन के संवाहक रही सन। तिवारी जी के मान्यता रहे कि पत्रकारिता का माध्यम से पाठकन का चित्त के शुद्धि होखे के चाहीं। 'प्रेम-संदेश' का 'शक्ति अंक' (1976) में उहाँका एगो अत्यंत तर्कपूर्ण संपादकीय लिखलीं- "शक्ति प्राप्त होने पर उसका सदुपयोग तथा दुरुपयोग भी हमारे ऊपर निर्भर है। रावण ने सबका सोना चुराकर सोने की लंका बना दी... राम ने उसका विनाश आवश्यक समझा।" एहिजा उहाँका पत्रकारिता के नैतिकता का कसौटी पर कसतानी। 'हृदय-संदेश' में उहाँ के संपादकीय दर्शन रहे- “आचरण ही अर्चना है।” उहाँका संतवाणी, गीता के महिमा आ योग-भक्ति का दुर्लभ प्रवचनों के संकलित करके ई संदेश देबे के कोशिश करत रहलीं कि अध्यात्म कवनो पलायनवाद ना ह, ई जीवन जीए के कला हटे। एह पत्रिकन के संपादन-प्रकाशन आसान ना रहे। इहनी के नियमित संपादन उहाँका धैर्य आ आध्यात्मिक अनुशासन के परिचय देता। ‘प्रेम संदेश’ के सामान्य अंकन का अलावे विशेषांकन में से शक्ति अंक, गुरु पूर्णिमा अंक, दीपावली अंक, पूजा अंक अउर गीता जयंती अंक ज्यादा लोकप्रिय भइले सन।

भोजपुरी पत्रकारिता के अविस्मरणीय अध्याय : 'सुरसती' आ 'माई के बोली'

सॉंच पूछीं त भोजपुरी पत्रकारिता में डॉ. नंदकिशोर तिवारी आपन उपस्थिति 'भीष्म पितामह' नियन अनुभव करवलीं। उहॉंका पहिले का आ समउरिया पत्रिकन- ‘अँजोर’, ‘भोजपुरी कथा -कहानी’, ‘सम्मेलन पत्रिका’, ‘भोजपुरी माटी’ नियन भोजपुरी के गाली-गलौज आ फूहड़पन का चंगुल से बाहर त कइबे कइलीं, अलगा से भोजपुरी के 'शास्त्र' अउर 'गंभीर विमर्श' के भाषा बनवलीं। उहॉंका संपादन में नियमित तौर पर निकलेवाली पत्रिकन में 'सुरसती' आ 'माई के बोली' बाड़ी सन। ‘सुरसती’ के संपादन का सङहीं प्रकाशन के भी जिम्मेवारी डॉ. तिवारी पर रहला का कारन एकर नियमितता कबो खंडित ना भइल।

'सुरसती' नियमित शोध आ रचना के त्रैमासिक पत्रिका रहे। भोजपुरी का संदर्भ में 'सुरसती' डॉ. तिवारी का जीवन के एगो बड़हन उपलब्धि बिया। अक्टूबर 2001 का प्रवेशांक में उहॉंका लिखतानी- "भोजपुरी के सेवा हिन्दी के सेवा ह, संसकिरित के सेवा ह। माई के सेवा करे वाला दादी आजी के घर से ना निकाले।" ई बात ओह लोगन खातिर लिखल गइल रहे, जे भोजपुरी आ हिंदी के दू भाव से देखत रहे आ आपस में एक-दोसरा के विरोधी बतावत रहे। ‘सुरसती’ सृजनात्मक साहित्य का सङहीं आलोचना आ भाषा से संबंधित विमर्श खातिर भी आदरपूर्वक याद कइल जाले।

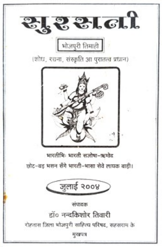

'माई के बोली' भी भोजपुरी भाषा में प्रकाशित होत रहे। ईहो पत्रिका ललित समीक्षा अउर शोधपूर्ण रचनन से समन्वित रहे। एकर प्रकाशन भलुनी धाम से होत रहे। ओइसे त एकर खाली दसे गो अंक निकलल रहे, बाकिर ऊ दसे गो अंक अपना सामग्री आ तेवर का बल पर आपन अलग पहचान बनवलसि।

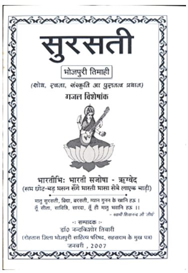

भाषाई शुद्धता के जो चर्चा ना कइल जाई त उहॉं के भोजपुरी पत्रकारिता का विशिष्ट रूप से बंचित हो जाइबि जा। 'सुरसती' आ 'माई के बोली' का अंकन में प्रूफ के गलती खोजलो से ना मिली। उहॉंका हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के 'भोजपुरी के धातु और क्रिया' जइसन लेख छापिके ई साबित कइलीं कि भोजपुरी एगो पूर्ण विकसित भाषा हटे।

शोध, समीक्षा आ विविध पत्रिकन के व्यापक जाल

डॉ. तिवारी के संपादन का सूची में 23 से अधिका पत्रिका

शामिल बाड़ी सन। एकरा से उहाँका बहुमुखी प्रतिभा के दरसन होता। एहमें कवनो संदेह नइखे कि उहाँका ज्ञान का हर विधा के अपना पत्रकारिता से छुअलीं।

'इयत्ता'- इयत्ता (1974) कला आ साहित्य के 'नूतन मानदंड' स्थापित करेवाली शोध पत्रिका हटे। एहमें उहाँका पारंपरिक लीक से हटिके नया प्रतिमानन के खोज कइले बानी।

'अभिनव शोधसार'- अभिनव शोधसार उपाधि प्राप्त शोधन के सार अउर शोध प्रक्रिया आ ओकरा मानदंडन के विवेचना करेवाली गंभीर पत्रिका हटे।

'स्थापना'- स्थापना (1981) रोहतास जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के शोध पत्रिका हटे।

'अस्मिता'- अस्मिता शांतिप्रसाद जैन महाविद्यालय, सासाराम के मुखपत्रिका (1973-74) रहे। ई महाविद्यालयीन पत्रकारिता के एगो नया दिशा दिहलसि।

'भरतखण्ड' (प्रथम खंड)- ई एगो शोध अर्द्धवार्षिक पत्रिका रहे।

'सुरसरिता'- सुरसरिता हिन्दी-भोजपुरी में ललित अउर समीक्षात्मक रचना के पत्रिका रहे।

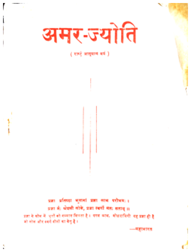

सामाजिक, सांस्कृतिक आ आंचलिक पत्रकारिता

तिवारी जी के लेखनी समाज का हर वर्ग आ हर समस्या के छुअलसि। एहमें **'जनविक्रान्त' (साप्ताहिक)** रोहतास अंक 1977 ई., लघु उद्योगन पर आधारित वार्षिक पत्र **'औद्योगिक पत्रिका'**, रोहतास भू-क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण वाला **'रोहतास जिला रजत जयंती अंक' (1996)** आ अनियतकालिक पत्रिका **'अमर-ज्योति'** के नाँव रेघरियावल जा सकत बा। 'अमर-ज्योति' के ध्येय वाक्य रहे- "राष्ट्रे जागृयाम वयं" (हमनी का राष्ट्र में जागल रहीं जा। एकरा संपादकीय में उहाँका 'बहुसंस्कृति के नारा' का प्रति आगाह कइले रहीं अउर ई तर्क देले रहीं कि भारतीय उपमहाद्वीप का मुख्यधारा के ही संस्कृति देश के जोड़ सकेले। जहाँ हास्य-व्यंग्य प्रधान पत्रिका **'अणिमा'** समाज का कुरीतियन पर करारा प्रहार करत रहे, ओहिजे रामचरितमानस संघ का **'रामचरितमानस'** पत्रिका (1990) के 200 पृष्ठन वाला विशाल 'मानस अंक' डॉ. तिवारी का संपादन क्षमता के अद्भुत मिशाल पेश करत बा।

तर्क, साहस आ ईमानदारी वाली संपादकीय दृष्टि

डॉ. तिवारी का संपादकीय के अध्ययन कइला पर तीन गो प्रमुख

बात उभर के आवतारी सन। एगो त ई कि उहाँका खुलिके बाजारवाद के विरोध कइलीं। **उहाँका विज्ञापन आ प्रचार के 'सउदा' मनलीं आ साहित्य के 'साधना'।** 'सुरसती' का मार्च 2006 अंक में उहाँका लिखतानी कि सच्चा सेवक के 'नाम' ना, 'राम' चाहीं। दोसरका ई कि उहाँका संपादकीय में भाषाई गौरव के दर्शन अक्सर हो जात रहे। **उहाँके कहनाम हटे कि "माई के भासा बोले वाला कबो बेईमान ना हो सके।"** साँच पूछीं त उहाँ खातिर मातृभाषा आत्मा के भाषा रहे आ एही से उहाँका संपादकीय में हिंदी-भोजपुरी का अटूट संबंध के दर्शन होखत रहता। मुख्य धारा का पत्रकारिता के छोड़ि दिहल जाउ त बाकी पत्र-पत्रिकन में लेखक भा संपादक राजनीति पर खुलिके लिखे से बाँचल चाहेला। बाकिर डॉ. तिवारी का संपादकीय में राजनीतिक साहस अनेक अवसरन प लउकत बा। उहाँका राजनीतिज्ञ लोगन पर तंज करत लिखतानी कि ओह लोगन का आँख में पानी ना होखे, ऊ लोग सब कुछ कानी आँख से देखेलन।

तिवारी जी **'कलमकार' (तुलसी विशेषांक)**, **'स्मारिका कुंजन स्मृति' (1995)**, **'स्मारिका कलापरिषद' (1975)**, **'अभी'** अउर **'अब'** जइसन पत्रिकन के संपादन करके निस्चे पत्रकारीय परंपरा के जीवित रखलीं।

निष्कर्ष का रूप में कहल जा सकत बा कि डॉ. नंदकिशोर तिवारी के पत्रकारिता 'स्वांतः सुखाय' का सङे सङ 'बहुजन हिताय' का राह पर चलेवाली एक तपस्या हटे। उहाँके संपादकीय खाली शब्द ना, बलुक समाज के जगावेवाला हुंकार हटे। उहाँका द्वारा संपादित तेइस गो पत्र-पत्रिका एगो अइसना पुस्तकालय नियन बाड़ी सन, जहाँ शोध, अध्यात्म, व्यंग्य अउर लोक-संस्कृति के सभे रंग मिल जइहें सन। आजु जबकि पत्रकारिता अपने मूल्यन से भटकत लउकतिया, डॉ. तिवारी के संपादकीय लेख हमनी के याद दियावतारे सन कि पत्रकारिता के असली धर्म 'सत्य' आ 'संस्कृति' के रक्षा कइल हटे। **'नकिति'** (नंदकिशोर तिवारी) उपनाम से भी लिखल गइल उहाँ के साहित्य अउर संपादन आजुओ आवेवाली पीढ़ी खातिर एगो मशाल नियन बाटे।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

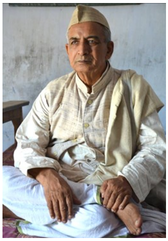

भास के महत्व आउर बिसेसता

संसकिरित में भास कुल्ही नाटककारन से अधिका लिखले बाड़न आउर बहुते आछा लिखले बाड़न। इनिका नाटकन में मनुष्य जीवन के विविधता के परखे के अपार शक्ति देखाता। ओइसने अवसर भी इनिका मिलत गइल बा। इनिकर प्रतिभा एहमें सर्वतोमुखी होके झाँकत बा। इनिकर कुल्ही नाटक रंगमंच पर खेलल जा सकेला। अभिनेयता एह नाटकन के विसेसता हो गइल बा। एह में वरनन के बिस्तार नइखे, ना कथावस्तु के बिना जरूरत अधिका बढ़ावले बा। पात्रन के संवाद भी नपल-तुलल शब्दन में आइल बा। कतहीं बाग्बाहुल्य नइखन। भिन्न-भिन्न अवस्था में भिन्न भावन के, विषयन के, सूक्ष्म बरनन भास के कुशलता के परिचय देत बा। इनकर कवनो पात्र बकवाद जानते नइखे। सही समय पर सही उदाहरन देके अपना बात के प्रमानित करे में ऊ बेलकुल ओस्ताद बा। ऊ बखूबी जानत बा कि केकरा कवना परिस्थिति में का कहे के बा। अदिमी के भीतर के अन्तर्द्वन्द्व के ऊ खूबी समुझत बाड़न। शास्त्र आ लोक दूनों के भरपूर ग्यान भास में बा।

भास के शैली अपना ढंग के बा। भाषा प्रभाव उत्पन्न करे में, प्रवाह उत्पन्न करे में खूब माहिर बिआ। मुहाबरा आ सूक्ती से अपना के पुष्ट कइल एकर सुभाव बन गइल बा। लामा लामा समस्त पद के प्रयोग इनिका पसन्द नइखे। नाटक खातिर उपयुक्त शब्द सरले होला। गद्यकाव्य चाहें महाकाव्यन में सामासिक चाहें क्लिष्ट पद चल जाला। भास के विचार के भाषा खूब बढ़ियाँ से ढोवे में समर्थ बिआ। इनिकर भाव उच्च कोटि के हृदयन में बसावे जोग बा। गद्य या पद्य दूनों पर कवि के समान अधिकार बा। अधिका पद्य लिखाइल बा। ओकरा में प्रसाद, माधुर्य गुन कालिदास से कम नइखे बलुक ओकर बिकसित रूप इनिका में लउकत बा। लागत बा जइसे संसकिरित ओह जुग के जनसाधारन के भाषा होखे।

अनुवाद कइला के बाद लागत रहे कि एकरा लेखक के भोजपुरी मातृ-भाषा होखे। ठीक ओइसने भाव ओइसने भासा। भास के बरनन कला के ढंग से ई बात प्रमानित हो जात बा। काहें कि उकुती के प्रकार भाषा के चिन्हानो ह। भास के उकुती भोजपुरी से मिलत बा। जइसे स्वीकृति के अरथ में 'आम्' आउर 'बाढ़म्' के प्रयोग। 'बाढ़म्' के 'वाढ़े से' प्रयोग भोजपुरी में क्षेत्र में पहिले के बूढ़-पुरनिया बहुते करत रहन। आजु से पचास बरिस पहिले हमनी के पितामह के सहचर आ भाई पं० देवनन्दन तिवारी जी टेक रूप में एह 'बाढ़े से' के प्रयोग वाक्य के बीच में करत रहीं। भास 'यदि' आ 'चेत्' के प्रयोग, कुशल प्रश्न खातिर 'सुखमार्यस्य' आदि के प्रयोग कइले बाड़े।

'स्वप्नवासवदत्तम्' आ 'बालचरितम्' के 'भरत वाक्य' में कवि परमात्मा से प्रार्थना करत बा कि जवना पृथ्वी के दूनो हिस्सा में हिमालय आ विन्ध्य परबत दू गो कुंडल लेखा सुशोभित हो रहल बा ओह बसुन्धरा के बीचे समुद्दर तक हमार राजा एकछत्र राज करस। एह सलोक में भास दहिना कान विन्ध्य के आ बायाँ कान हिमालय के मानत बाड़न। भास के वसुन्धरा के विस्तार पुरुब से पच्छिम आ उत्तर से दक्खिन के चौहद्दी के भीतर बा। ई इलाका आजुओ भोजपुरी भासिंयन से भरल बा। भास अविभाजित कुटुम-प्रणाली के पोषक बाड़न जवन भोजपुर क्षेत्र के विशेषता ह। गुरुजनन के प्रतिष्ठा इनिका भीतर बा। स्वतन्त्रता आउर न्यायपरायणता के ऊ पक्षपाती बाड़न जवना खातिर ई भोजपुर प्रदेस नामी रहल ह। एहघरी ओकर नाव अब डूब रहल बा। पुस्यलकर जी लिखले बानीं कि 'भास एगो धर्मभीरू ब्राह्मन रहले ह । ऊ दक्खिन के ना बलुक उत्तर भारत के रहले ह। उनुका कुल्ही नाटकन के अनुवाद करे के क्रम में हम कई बार पढ़लीं त हमरा बेलकुले बिसवास हो गइल। संसकिरित से भोजपुरी में हो गइला के बाद बुझाए कि बेलकुले उहाँ के भोजपुरिए में सोंचत रहीं।

एहमें कवनों संदेह नइखे कि गणपति शास्त्री जी इन्हिका तेरहो नाटक के खोज निकलली। प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिमा-नाटकम्, पंचरात्रम्, अभिषेक, मध्यमव्यायोग, अविमारक, चारुदत्तम्, कर्णभारम्, दूतवाक्यम्, दूतघटोत्कच, ऊरुभंगम् आउर बालचरितम्।

उरुभंग के साथे कर्णभार, दूतवाक्य आउर दूतघटोत्कच के घटना चक्र महाभारत से सम्बन्धित बा। रामायन पर प्रतिमा आ अभिषेक बा। भागवत पर बालचरित बा आ लोककथा पर उदयन के कथा से सम्बन्धित नाटक बा। बलदेव उपाध्याय जी चाहें तैलंग जी एकर अनुवाद करे चाहें आलोचना लिखे के क्रम में मानत बानीं जा कि ई कुल्ही तेरहो नाटक एके अदिमी के लिखल ह।

भास के नावँ पर जतना रचना बाड़ी सन ओहमें सूत्रधार रंगमंच पर आवत बा आ मंगलगान गावत बा। इनिका नाटक में प्रस्तावना के अहथान पर स्थापना के प्रयोग भइल बा। हरेक ग्रंथ के समाप्ति पर भरत वाक्य के माध्यम से राजसिंह के नाव के साथे तत्सम पद्य के प्रयोग कइल गइल बा। नाटकन के आदि आ अन्त एकेतरे बा। कुछ नाटकन के शुरू में मुद्रालंकार के माध्यम से प्रमुख पात्रन के नाव निर्देश कइल गइल बा। भाषा, छन्द, भाव, कल्पना आउर घटना के संयोजन सभ नाटकन में समाने बा। अलंकार शास्त्री लोग वामन होखस चाहें दण्डी, चाहें आचार्य अभिनव गुप्त सभे इनिकर पद्य उद्धृत कइके अपना ग्रंथन के प्रतिष्ठा बढ़बले बा। कुछ इनिका नाटकन में अपाणिनीय प्रयोग बा आउर कुछ में भरत के नाट्यशास्त्र के नाटक से सम्बन्धित नियमन के उलंघन भी भइल बा। जइसे एह नाटक 'उरुभंग' में दुर्योधन के मरल मंच के उपरे दिखावल बा। 'प्रतिमा' में बाली के बध रामजी द्वारा मंचे पर करावल बा। कुछ लोग के ई परम्परा शास्त्र के विरुद्ध लागेला। लेकिन हमरा त ई ठीके लागल। शेक्सपिअर के अंग्रेजी नाटककार के रूप में खूबी नाम बा। लेकिन ओहिजो त ई सभ मिलेला जवन उनकर विशेषता मानल बा। उनका ऊपर ट्रेजेडी आ कौमेडी लिखे में कुशलता के

विशेषता मानल गइल बा। भास के विशेषता एही रूप में देखे के चाही। अभिनय आ पात्र जब जहवाँ माँगे ओइसने लेखक के देबे के चाही। एकरा अतना सिद्धहस्तता दोसरा में नइखे देखात।

'उरुभंग' में सूत्रधार के कथन 'श्रीमद्भगवद्गीता' के प्रारम्भिक मंगलाचरण से मिलत जुलत बा। उरुभंग के श्लोक देखीं।

भीष्मद्रोण तटां जयद्रथ जलां गान्धार राजह्रदां
कर्णद्रौणि कृपोर्मिन क्रमकरां दुर्योधन स्रोतसम।
तीर्णः शत्रुनदी शरासिसिकतां येन प्लवेनार्जुन
शत्रूणां तरणेषु वः भगवानस्तु प्लवः केशव।।

अब भगवद्गीता के शुरू के देखीं--
भीष्मद्रोणतटा जयद्रथ जला गान्धारनीलोत्पला
शल्यग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन बेलाकुला ।
अश्वत्थान विकर्ण घोर मकरा दुर्योधनावर्तिनी
सोत्तीर्णा खलु पाण्डवै रण नदी कैवर्तकः केशवः ॥

उरुभंग के सूत्रधार भीष्म आउर द्रोण दूनों के दूनो कोर मानत बाड़न। जयद्रथ ओकर जल हवन। गांधारराज (शकुनी) ओहमें दह हवन। कर्ण, अश्वत्थामा आ कृपाचार्य तीनों क्रम से तरंग, घड़ियाल आउर मगरमच्छ के समान बाड़न जा। दुरयोधन ओह में महान् सोता लेखा बाड़न। बान आ तलवार ओह में बालू निअन बा। अइसन सत्रु रूपी नदी के जवन नाव के सहारा से अर्जुन पार कइलन, उहे भगवान् कृष्ण शत्रुअन के पार करिहन, माने सत्रुअन पर विजय पावे में रउआ सभे खातिर नाव रूप बनस।

रणांगण के बरनन करत कवि के कल्पना थाकत नइखे। देखीं खेला उनुकर- ई रणांगन वैर के अहथान ह, बल के कसवटी ह, मान आ प्रतिष्ठा के घर ह। देवांगनन के स्वयंबर मंडप ह, अन्तकाल के बीर शय्या ह, प्रान देबे खातिर अग्निहोत्र जग्य ह, राजा लोग के सरग जाए के सेतु (पुल) ह। ई रन एगो आश्रम ह। भास एह मृतलोक के रन लोक मान के चलत बाड़न। रन से उनुका, जवन अनीति पर चले वाला खातिर दवाई बा, परहेज नइखे। एहिजा एक दू तीन लोग के खड़ा कराके कुल्ही रन के दोष गुण देखला रहल बाड़न। ई कला भी अनुकरन जोग्य बा। आ 'रेडिओ नाटक' के कुल्ही गुन अपना में देखावत बा। अइसहीं 'बालचरित' आ 'दूतवाक्य' में भगवान् के कुल्ही आयुध आ के पात्रन अइसन बात करत बाड़न। तुलसीदास मानस में ई पुष्पक के आदेस रामजी से दिआवत बाड़न। तूँ लवट के अपना मालिक भीरू चल जा। ई सभ

बात ओकरे समुझ में आई जे जड़ आ चेतन के भेद समुझ जाई। सम चित्त वाला खातिर ई अचरज के विषय ना ह। भास के कथन जवन पात्रन के माध्यम से होखता ओह में पात्र के कुल्ही चरित्र के इतिहास परगट होत बा। कथोपकथन में एगो पात्र दोसरका के जतना कठोरता से कहल जा सकेला, कहत बा। ओह में ओकरा बाप-दादा से लेके ओकर कुल्ही करनी व्यक्त होखता चाहे ओकर प्रतिपक्षी ओकरा दोष के खुल के विवेचन करत बा। भास के भीरू केकरो प्रति पक्षपात नइखे आउर ना ओकरा प्रति श्रद्धे बा जेना कहवावे के चाही जानत होखे । चाहे श्रीकृष्णे भगवान काहें ना होखस। दुर्योधन उनुका के भी उसठे भाषा के प्रयोग कइके सम्बोधित करत बाड़न। एह तरह से ई अनुवाद पढ़ला प पाठक के लागी कि ई संसकिरित हमरा भोजपुरी से कतना नजदिकाह बा जइसे पोता पोती के आपन बाबा नीक आ मीठ लागेलन।

निराला साहित्य मंदिर, बिजली शहीद, सहसराम, जिला- रोहतास पिन- 821115 (बिहार)

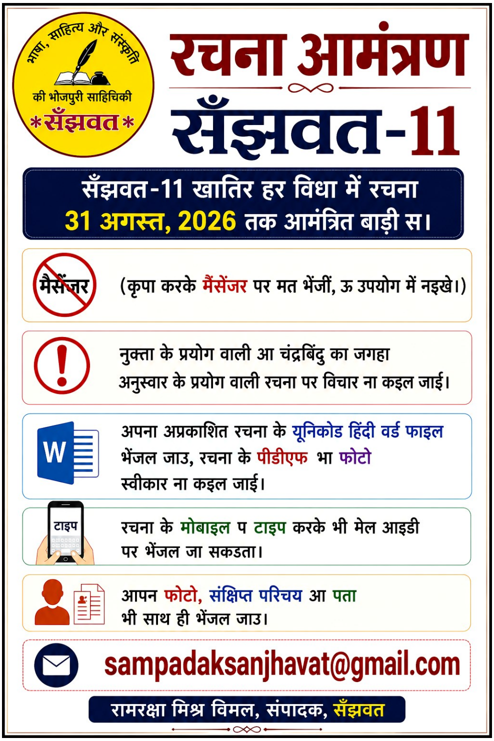

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

भास रचित नाटक 'अभिषेक' के भोजपुरी पद्यानुवाद

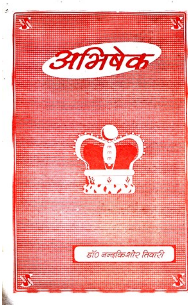

हिंदी आ संस्कृत के ओइसन ज्ञानवान आ विद्वान लोग जे महतारी भाखा भोजपुरी लागि जनम देवेवाली माई अइसन नेह राखत रहल बा, ऊ लोग भोजपुरी साहित्य के भांडार भरे लागि संस्कृत के नामी साहित्य के भोजपुरी में उल्था कइलस। कहे खातिर त ई उल्था भा अनुवाद रहे, बाकिर, भाषायी भंगिमा आ भोजपुरिया तेवर के चलते ऊ मौलिक कृति के सवाद- संवाद देवेवाला रहे। अइसन साहित्यकार लोगन में दू तीन गो नाम गिनाईं त शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', देव कुमार मिश्र 'अलमस्त' आ नंदकिशोर तिवारी जी के नाम रेघरिआवे जोग बा। डॉ. नंद किशोर तिवारी जी संस्कृत के पहिला नाटककार भास के कई नाटकन के भोजपुरी में उल्था कइले बानी।

भास रचित प्रमुख नाटक बाड़न स- स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, ऊरुभङ्गम्, कर्णभारम्, दूतवाक्यम् मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कचम्, पञ्चरात्रम्, बालचरितम्, प्रतिमा, अभिषेक, अविमारकम् अउर चारुदत्तम्। जहाँ तक भास के नाटकन के विशेषता के बात बा, भास के भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, छोटे छोट संवाद वाला बा। उनका नाटकन में करुण आ वीर रस के प्रधानता बा, ऊ नाट्यकला में निपुण रहलें, जवना से उनकर दृश्य-निर्माण बहुते प्रभावशाली बा । जहाँ तक विषयवस्तु के सवाल बा भास के अधिकांश नाटक 'रामायण', 'महाभारत', 'उदयन कथा' (लोक-जीवन/राज-दर्शन) पर आधारित बा। सदियन तक गुमनाम रहे वाला भास के नाटकन के १९१२ में महामहोपाध्याय टी. गणपति शास्त्री केरल के त्रिवेंद्रम से मलयालम लिपि के ताड़पत्र पांडुलिपियन के रूप में फेर से खोज लेलें। भास के नाटक संस्कृत नाटक परम्परा के एगो मजबूत नींव प्रदान कइलस आ बाद के कवि लोग विशेष करके कालिदास लागि प्रेरणास्रोत बनल।

डॉ. तिवारी द्वारा भास के आठ नाटकन के अनुवाद आ अनुगायन कइल गइल बा। ई भोजपुरी नामकरण के हिसाब से

अइसे बा- प्रतिमा, सपन सुनरी, अभिषेक, दूतवाक्यम्, उरुभंग, कर्णभारम् , बालचरित, प्रतिज्ञायौगन्धरायण आ पांचरात्र। भास के काल कालिदास के पहिले, तीन से चार सै बरिस ईशा पूर्व बा। हमरा सोझा 'अभिषेक' नाटक बा, जवना पर समीक्षात्मक विचार करे के बा। अभिषेक नाटक रामायण के कथा पर आधारित 6 अंक के नाटक बा, जे किष्किंधा कांड से लंका विजय आ ओकरा बाद सीता के अगिन परीक्षा तक के घटना के वर्णन करत बा। एकरा में बाली वध, सीता खोज, लंका दहन और राम के राज्याभिषेक तक के प्रसंग वर्णित बा, जहँवा मुख्य रूप से सुग्रीव और श्रीराम के राज्याभिषेक (अभिषेक) के नाट्य रूप दिहल गइल बा। एह नाटक के मुख्य रस वीर बा, बीच बीच में करुण-ओ रस प्रवाहित होत बा। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम नाटक के नायक बाड़ें; सुग्रीव, लक्ष्मण, हनुमान आ विभीषण प्रमुख पात्र बाड़ें।

एह नाटक के संवाद पद्य आ गद्य दुनों में बा। नाटक क शुरुआत बाली वध से होखत बा, जवना के बाद सुग्रीव के राज्याभिषेक होखत बा। अंत में, रावण वध और राम के राज्याभिषेक के साथ नाटक का समापन होखत बा।

'अभिषेक' नाटक के पहिला अंक में बाली बध आ सुग्रीव के राज्याभिषेक, दुसरा अंक में हनुमान द्वारा लंका के ओर प्रस्थान, तिसरका अंक में लंका दहन / तोरण युद्ध , चउथा अंक में समुद्र पार गइला, पाँचवा अंक में माया शिर (मायावी सिर- रावण के चाल) आ छठवाँ अंक में राम-रावण युद्ध अउर राम का राज्याभिषेक के कथा आइल बा।

जइसन कि एह नाटक के बारे में ऊपर बतवले बानी कि एकर संवाद गद्य में बा आ भाव पूर्ण विचार पद्य में आइल बा। संवाद छोट - छोट बा। पद्य संवाद इआद करे लायक सहज संप्रेषित होखे वाला बा। एगो उदाहरण से एह के समझल जा सकत बा। प्रसंग किष्किन्धा के बा, राम के बान से बाली घायल पड़ल बा आ राम के चेता रहल बा-

"बाली :
छाती पर हाँथ रखि के एतना कहीं त राम !
कुल्ही जुद्ध नीतिए गइलिं रउआ भूल का ?
बीर हमनी दूनो , बीर जइसे लड़े के रहे
बीरे धरम भेंट देलीं रउआ समूल का ?
छल के हटावे चलल बानी पूरा सृष्टिए से
हमरा खातिर छले के बनवले धरम-मूल का ?

धर्म सिंधु ! आज जे प्रपंच देखलवलीं हँ ,
राजा के नीति के भइल बा अनुकूल का ?
हा ! सौम्य रूप बा जस के भाजन आप।
छल से मरलीं कइलीं रउआ पाप।।
राम : छिप के मारल अधरम ह, से कइसे?
बाली : एह में का सन्देह बा ?
राम : नाहीं अइसन बात नइखे- देखऽ-
फाँस जाल में मिरिग दिहला मार।
तू हूँ बाली मिरिग, कर विचार।
बनलऽ बध्य तू पाप करम कइ घोर,
करुना कइ ताकऽ मत तू हमरा ओर।
बाली : हम दण्ड जोग बानी, अइसन रउआ समझत बानी ?
राम : एकरो में संदेहे बा ?
बाली : कारण ?
राम : अगम्या स्त्री के संभोग कइला से।
बाली : अगम्या स्त्री के संभोग कइला से ? इहे हमार धरम ह।
राम : ठीके कहत बाड़ऽ तब त-
बानरराज राखत बाड़ऽ धरम ज्ञान तूँ ,
पाप कइलऽ अतना, अपना के मृग मान तूँ,
घोर पाप हउए अनुज बुध के संग रमना,
आचरण पसू से भइल बा तोहार कम ना। "

एह कथानक के आधार पौराणिक बा। बाकिर एकर उद्देश्य आजुओ बरकरार बा, बलुक एकरा उद्देश्य के महत्व बेसिये हो गइल बा, काहे कि माई, बहिन बेटी लोग के इज्जत पर पहिले से खतरा बढ़ गइल बा। एह नाटक के भरतवाक्य में एह नाटक के उद्देश्य गावल गइल बा। भरतवाक्य के आखिरी छंद बा-

पूर्ण आयु सभ प्राणी निकर हो
परहित साधन सर्व सुकर हो,
सुख मंगल विधान घर-घर हो
नर-नारी गुन-गन विशिष्ट हो

मंचन के दृष्टि से देखीं त नाटक सहज आ मंचन योग्य बा। संवाद के भाषा तत्सम आ तद्भव प्रधान बा, बाकिर सहजे संप्रेषित होखे वाला बा।

आदर्शग्राम, रोड नं. 1, कोल्हुआ पैगंबरपुर,
मुजफ्फरपुर - 843108 (बिहार)

दिनेश पाण्डेय

भोजपुरी में उल्थन के मसला : भाया 'प्रतिमानाटक'

चाणक्य के कहनाम कि देवबानी में बिछंछल बुद्धि के बावजूद भाषांतर के ललसा हम ना तज सकीं, ठीक ओसहीं जइसे अमरित के सवाद में डूबल देव लोग सुरबाला के अधर-रस-पान के टिसुना कबो ना छोड़स।[1] भाषा-उल्थन आत्मप्रसार अथवा पलायन के ओझिल जरूरत से ना होखे बलु ई अलग-अलग भाषा, संस्कृति आ जानकारी के बीच दूरी मेंटे खातिर बहुत खास रीति ह। अनुवाद के जरूरत सांस्कृतिक बदलैन, ज्ञान-विज्ञान के विस्तार, तिजारत, राजनय, प्रशासन, सूचना तकनीकी वगैरह क्षेत्र में त बड़ले बा, भाषा-अभिव्यक्ति के सबसे ताकतवर सरूप साहित्यो में कम नइखे। भारतीय मनीषा में भाषा-उल्थन, भाष्य, अनुवचन, टीका, वाक्य, वृति आदि के रीति पुरातन से अपनावल गइल बा। साहित्य-चिंतन के विकास आ उठान में एकर खास भूमिका रहल। अनुवाद के जरूरत चिंतन के पसराव, पूरी दुनिया से प्राप्त सरेख-विचार के अंगीकार आ भाषायी उन्नति खातिर ह।

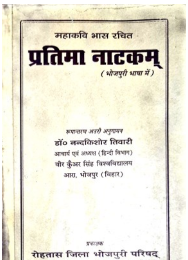

भोजपुरी जइसन उभरत भाषा में एह काम के अउ अधिका दरकार बा। ईहाँ अनूदित साहित्य के निरा अभाव त नइखे बाकिर जवन बा तवना प संतोख कके ना बइठल जा सके। अधिकतर काम संस्कृत के अलावे, हिंदी, अँगरेजी, बंगला, आदि भाषा के कुछ मशहूर रचनन प बाड़न जवना में हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के बिरहा छंद में कइल 'मेघदूत' (कालिदास) के अनुवाद भोजपुरी साहित्य के नायाब नमूना बा। एह कीरति पर रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', मोती बी. ए, प्रो० अवधेश प्रधान, विद्यानिवास ओझा के अनुवादो खास बाड़न। रघुवंश नारायण सिंह कृत रूसी लेखक वाएडावासिलेवेस्का के उपन्यास 'बोरो' के सरस, सुंदर भाषांतर 'भोजपुरी' में धारावाहिक रूप में आइल रहे। भोजपुरी में अनूदित साहित्य के दिसाईं काम करे वाला में सर्वेंद्रपति त्रिपाठी (अभिज्ञान शाकुन्तलम्, उत्तररामचरित, कर्पूरमंजरी, मालविका,

वरदान), दयालाल वसंत राय (गीता विशेषांक, श्रीमद्भगवद्गीता, सत्यनारायण कथा, सरलगीता, गीत में गीता), देवकुमार मिश्र 'अलमस्त' (स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशकुन्तलम्, भर्तृहरि के नीति, श्रृंगार आ वैराग्य शतक के अनुवाद), पांडेय कपिल (आरा में दो मास) आदि प्रमुख बाड़न। आलम ई बा कि खाली श्रीमद्भगवद्गीता के दरजन भ से अधिक भोजपुरी उल्थन उपलब्ध बाड़न (कमला प्र० मिश्र 'विप्र', घनश्याम मिश्र, दयालाल वसंत राय, सुशील माधव पाठक, भुवनेश्वर प्रसाद, माधव पाण्डेय निर्मल, कुबेरनाथ मिश्र, कृष्ण मुरारी राय आदि)। ई कुछ नाम महज बतौर बानगी लिहल गइल बा। एह कड़ी में डॉ. नन्दकिशोर तिवारी जी के नाँव उल्लेखनीय बा। इहाँ के भास के एगारह गो नाटकन के भोजपुरी उल्थन प अच्छा काम कइले बानीं, जवना में से 'प्रतिमा नाटकम्' एक ह।

भास के गिनती प्राचीन नाटककार के रूप में होला जिनकर रचनन में नाट्यकला के उम्दा रूप आइल बा। इनकर नाटकन में भरत के नाट्यशास्त्र के नियम-बरजना से मुक्त होखे के गुन के आधार पर इनका के भरत (ई० पू० दूसरी सदी) से अगते के नाटककार कहल जाला। भास के नाट्यकला के असर बाद के नाटककारो लोग प परल। साहित्यिक, भाषाई, रंगमंचीय मुनासिबत, अदाकारी आदि के लिहाज से इनकर नाटक एह विधा के पउढ़ रूप के मिसाल हवें। भास के नाटकन में कल्पना, भावना आ कविताई के सरेख रूप उभरल बा। भाषा के सहज, सरस, गंभीर, मीठ आ रोचक सरूप इनकर नाटकन के खासियत ह। सफल छंद-विधान, मूलचरित के अनुरूप भाषा-बेवहार, उचित ढब, कम कथन में अधिक के व्यंजना, बारीक बरनन-तरकीब आदि गुनन का वजह से भास के आपन अलहदा पहिचान बा। ए. बी. कीथ के कहनाम कि "भास के नाटकन के संख्या आ विषय के बहुमुखता, उनकर प्रतिभा के क्रियाशीलता आ खाँटीपन के दरसावता। महाकाव्य के वस्तु के चयन सीमो अक्सर उनकर कामयाबी के सफल ढंग के आगा बेमानी हो जाता।"[2] हालाँकि उनका नजर में 'प्रतिमानाटक' कवनो खास बेहतर असर नइखे छोड़त, एकर मुख्य वजह एमें आइल रामकथा के कुछ कथात्मक अंतर के गैर-जरूरी, घिसल-पिटल आ नीरस होखल बा।

'प्रतिमानाटक' के वस्तु रामायण प आधारित बा। एकर नामकरन के पीछे तिसरका अंक में आइल एक प्रसंग बा। ननिहाल से लौटत भरत, राह में पड़त इक्ष्वाकुवंश के दे'कुर में, जहाँ उनकर पुरखा लोग के मूरति स्थापित रहे, चलि गइलन। उहाँ उनकर नजर पुरुखन के पुतुलन के बीच महाराज दशरथ के पुतुल प पड़ल। पीठ पीछे महाराज के मरन के सारा माजरा समुझत उनका देर ना लागल। केन्द्र में प्रतिमा-घर के एह घटना के होखे के वजह से ई नाम पड़ल।

पहिला अंक के कथावस्तु में राम के राज्याभिषेक संबंधी महाराज दशरथ के घोषणा आ तइयारी के आदेश, शरारत में चेटी के नाटकघर से बल्कल उठा लावे के घटना, चाववश सीता के बल्कल पहिन लेल (भविता के अगरम संकेत?), राज्याभिषेक में बेवधान के सूचना आ राम, लछुमन, सीता के बन-गमन के तइयारी के कथानक उभरल बा। दुसरका अंक में दशरथ के बेकली, मंत्री सुमंत के तीनों के संगे पयान,

खाली रथ वापसी, दशरथ के हतासा आ सदमा से मरन के घटना बाड़न। तिसरका अंक ननिहाल से भरत के वापसी, दे'कुर प्रसंग आ कैकेयी पर भरत के कोप से जुरल बा। चउथा अंक भरत के दंडकबन में ठहरल राम से लवटे के मनुहार, नाकामी आ अंत में एह बात प सहमति बने के बा कि अवधि खतम भइले राम राज सकरिहें आ तबले उनुकर खड़ाऊँ के निशानी तले भरत परजा-पालन करिहें। पाँचवा अंक के वस्तु रामायण के कथा से भिन्न भास के आपन मन के सिरिजन के बुनियाद प बा। दशरथ के सराध खातिर तत्पर राम के सामने जती के कपट भेस में रावन आ के ठाढ़ हो जाता। ओकर सलाह ई कि राम के पिता के सराध सुबरन-मिरिग से पिंडदान के जरिए पूरा करे के चाहीं। संजोग कहीं भा साजिश ओही घरी ओइसन मिरिगा लउकियो जाता। राम ओकरा पीछे गइले आ लछुमन के गैरहाजिरी में रावन सीता के जबरिया हर ले जाता।

छठवाँ अंक में जटायु के प्रतिरोध आ रावन के हाथे उनकर हत्या के घटना बा। जनस्थान के दुगो तपसिन से राम के एह घटना के बारे में जानकारी मिलत बा। राम से मिले सुमंत अइलें बाकिर भेंट ना भइल। फिर ऊ जाके भरत से सीता-हरन के बारे में सूचना देत बाड़ें आ ईहो कि राम आजु-काल्हु किष्किंधा में बाड़ें। भरत छोभ में कैकेयी के समाचार देत बाड़ें। कैकेयी द्वारा अंधमुनि के बेटा के दशरथ के हाथे मारल जाए के घटना आ उनकर सराप वाली बात से परिचे करइला के बाद भरत के आपन माई पर कुछ परतीति बढ़त बा आ ऊ रावन के खिलाफ अभियान में लाग जात बाड़े।

सातवाँ आ अंतिम अंक के कथा में रावन-बध के बाद वापसी के दरम्यान राम के जनस्थान में पड़ाव आ हुँहईं भरत के जत्था से भेंट फिर अजोधा-राज के सुपुर्दगी के खास-घटना बाड़ी सन। फिर कैकेयी के एह पेशकश पर कि राज्यांतरण के औपचारिकता अजोधो में होखे, सहमति बनत बा। बाकी सहजोगी लोग राम के बधाई देत बाड़ें आ सभे खुशी-खुशी पुष्पक से अजोधा का ओरि पयान करत बा।

कवनो अनूदित कीरति प बात करे के कुछ सरहद होला। वाजिब बात ई हो सकेला कि बात के मूल रचना के छाँहि तले देखल जरूर जाय बाकिर बात के मेंहि एह रूपांतरन के चउगिर्द राखल जाय, भाषा उल्थन में सटीकता, साफगोई, मूल कीरति के मिजाज के सनमान आ ओकरा बदे भरोसेमंदी के अंश के मौजूदगी के पड़ताल होखे। अनुवाद एक पेंचीदा काम ह जवना में भाषा के गठान में अलगाव, सांस्कृतिक अनुकूलन में बिलगाव, समान भाव-भंगी से बिचलन, व्याकरणिक असावधानी, शब्द चयन आ अरथ के हानि, लय-भिन्नता, समय के दबाव बिपरीत असर पैदा कर जालें। अनुवाद के शब्दन के खेल ना एगो कला कहल गइल बा।

तिवारी जी के एह अनुवाद के सुरुआत में आइल 'काथा' मूल कीरति के हिस्सा ना ह। नान्दी के रूप में ई अनुवादक के आपन सिरिजन ह जवना में 'प्रतिमानाटकम्' के कथासार दिहल गइल बा। नाट्यशास्त्र के नियमबंध में नान्दी के महत्त्व बा बाकिर भास के नाटकन में एकर कवनो खास तकाजा नइखे दीखत बलु 'नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः' के सामान्य संकेत के बाद मंच पर सूत्रधार के पइसार हो जाता। एह 'काथा' के छंद में एकरूपता के अभाव, भाषा-बेवहार में ऊहापोह साफ

जनाता। भोजपुरी जइसन भाषा में, जेकर सरूप मुख्यरूप से लोकभाषा के रहल, साहित्यिक लेखन भा भाषा-उल्थन में एह तरह के दुविधा आम बात ह। एह तरह के कसर भाषा के मानकीकरण के समस्या से जुरल चीज ह। मूलभाषा आ छंद के दबाव भलहीं होखे बाकिर ‘चरन-पीठ’, ‘मिरिग-छल’, ‘कुलि सुमंत’, ‘श्रीमाता’ जइसन शब्द असली अर्थ तक पहुँचे में सहायक नइखन होत। मिरिगछल त एकदमें से मरु में होखेवाला भ्रम आ ओसहीं श्रीमाता माँ त्रिपुरसुंदरी के अर्थबोधक शब्द हवें, जे सोन-मिरिग के कूट-रचना आ सीता के सीधे अर्थ के वाचक नइखन। नाटक दृश्य-प्रधान विधा ह जवना में गीत-संगीत के प्रयोग के बेहतर असर होला, एसे एकर काव्यात्मक अंश में लयबद्धता अधिक उपयोगी ह। छंद के बदलाव आ मंद-प्रवाह के कारन ईहो पहलू दब जाता।

संस्कृत साहित्य के अनुवाद में कइगो गिरह अइसन बाड़े जेकरा सुलझावल बहुत मोसकिल काज ह। भाषा के ढाँचागत अंतर के कारन रस, छद, अलंकार आदि साहित्यिक साधन के समतुल उपयोग सुगम ना रह जाय। मिसाल के तौर प सूत्रधार के एह मंगलकथन के लिहल जाव- “सीताभवः पातु सुमंत्रतुष्टः सुग्रीवरामः सहलक्ष्मणश्च। यो रावणार्यप्रतिमस्य देव्या विभीषणात्मा भरतोऽनुसर्गम।।”[3] एमें परिकर अलंकार (उक्तैर्विशेषणे साभिप्रायैः परिकरो मतः) के अचंभा पैदा करे वाला प्रयोग देखे जोग बा, जवना में ऊपर से दीखे वाला रामकथा के परिचित पात्रन के नाम के खास मकसद से बतौर विशेषण बेवहार कइल गइल बा। सीताभवः (सीता के होखे के मूल-कारन), सुमंत्रतुष्ट (सद्विचार से तिरपित होखे वाला), सुग्रीवरामः (सुकंठ राम), सहलक्ष्मण (उच्च गुन-चिन्ह सहिते), रावणारि (रावन के बैरी), विभीषणात्मा (बैरिन खातिर विकट) आ भरतोऽनुसर्गम् (बिसंभर) शब्द आपन रूढ़ व्यक्तिवाचक अरथ नइखन राखत बलु राम के चरित में समाहित गुनन के बोधक बाड़ें। ई राम के गुनगान ह जवना में गहिर दार्शनिक भेद पैबस्त बा। इन्ह सरबस भावन के भाषायी-उल्थन में समेट लेवे के बेसक आपन लाचारी हो सकेला। तिवारी जी अनुवाद के हई रूप देखल जाव-

“रच्छा करीं रामजी बराबरे हमार राउर,
सीता सुखदाई बाड़ी अमरित निअन बानी से।
रहेलन सुमंत से सदा प्रसन्न जीवन में, जे
सुगरीव के बचवलन परेसानी से।
सुन्नर बदन साथे सदा रहस लछुमन जी,
सीता खातिर जुध कइलन रावन गुमानी से।
बीरता में के बड़वे समने बिभीसन जी के,
पालेलन कुल्ही सृष्टी नित निगरानी से।”

मूल भाषा से पसन्न के भाषा में उल्थन के दरमियानी सटीक शब्द चुनल एक बड़हन समस्या ह। कठिनाई महज सबदी ना होखे बलु भाव, भाषा, मुहावरा आदि के प्रयोगो में सावधानी के दरकार होला। एकरा बिचलन से मूलभाव कुछ हद तक ओझिल हो जाला। एकर निदान हू-ब-हू शब्दानुवाद के बजाय भाव के ठीक-ठीक रूपांतर क के हो

सकेला। उचित अर्थबोधक शब्द के गैरमौजूदगी में तत्सम भा ओही भाषा-परिवार के नगीची शब्द के प्रयोग में हिचक के कवनो कारन नइखे, बजाय शब्द के तोड़-मरोड़ के बेतुकी हालात पैदा करे के। एक मिसाल लिहल जाव, संस्कृत में 'समुद्रगृह'[4] अभिधान गरमी के असर से बाँचे खातिर पानी मधे भा अइसन क्षेत्र के आस-पास बनल खास भवन, जल-महल भा नहान-घर के ह, भोजपुरी में एकर अनुवाद 'समुद्दर घर' अनजाना बा। एही तरे आर्या के बदले आर्ज (सुमित्रा खातिर राजा के संबोधन पृ १८), 'अमरपते सखा दिलीप' के बदले 'अमरनाथ, सुसरवा दिलीप' वाजिब शब्द नइखन। आर्ज एक त गढ़ुआ शब्द भइल दोसरे स्त्रीलिंग प्रयोग? अमरपति इंद्र के अभिधान ह जबकि अमरनाथ शिव के। ई कुछ चरचा बतौर बानगी कइल गइल बा जवन पूरापन के कवनो आग्रह नइखे रखत।

संस्कृत साहित्य के तकनीकी भा पेशागत शब्दावली भा आध्यात्मिक-दार्शनिक भावन के आन भाषा में परगटन के आपन पेंचीदगी बा। हिंहाँ अर्थ के अनर्थ भा भाव-तंगी के संभावना निरंतर बरकरार बा, भोजपुरी में त तनिका अधिके। एजा खोट निकाले के कवनो उद्देश्य नइखे बलु जेहन में आइल भोजपुरी में अनुवाद के कुछ अड़चन के जिकिर मकसद बा। मुद्दा अउ हो सकेलें जेकरा सामने ले आवल हित में होई। 'प्रतिमानाटकम्' के ई अनुवाद दू दशक अगते के ह, भाषागत निखार के नजरिए आज के तुलना में ओह घरी के जरूरत आ भाषायी माहौल प विचार कइल महत्त्वपूर्ण होखी। एक बात अउरि अनुवाद में हड़बड़ी भा कहीं समय के दबाव ढेर कसर छोड़ जाला। ए सब के बावजूद आपन आखिर आपने ह कवनो हिनाई के सबब ना।

संदर्भ :

1. चाणक्यनीति, 10.18.
2. 'The Sanskrit Drama in its Origin, Development Theory And Practice', A. B Keith, p. 105.
3. प्रतिमानाटकम् 1.1
4. प्रतिमानाटकम् 2.1

संपर्क :
संचार नगर, खगौल, दानापुर, पटना 801105

डॉ. नन्दजी दूबे

डॉ. नंदकिशोर तिवारी द्वारा अनुवादित भोजपुरी 'कर्णभार'

डॉ. नंदकिशोर तिवारी, हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आ भोजपुरी के प्रकाण्ड पंडित हईं। इहाँ के व्यक्तित्व बहुआयामी रहल बा। इहाँ के प्रचार-प्रसार से दूर एगो ऐकान्तिक साधक आ साहित्य-संस्कृति के उद्धार-प्रचारक हईं। हिन्दी-संस्कृत के साथ तिवारी जी भोजपुरी साहित्य आ भाषा के मानक रूप स्थापित करे के अथक श्रम कइले बानी। एही कड़ी में उहाँका भोजपुरी नाटक के सही दिशा देबे के प्रयत्न कइले बानी। एकरा खातिर तिवारी जी संस्कृत नाटककार भास के नाटकन के आदर्श बनवले बानी। इहाँ का संस्कृत कवि भास के कुल्ही तेरहों नाटकन के भोजपुरी कविता में रूपान्तरण कइले बानी।

संस्कृत नाटक साहित्य में भास सबसे पुराना बानी। इनका नाम के चरचा कालिदास, हर्ष, जयदेव वगैरह सब लोग कइले बा। उनका समय के संबंध में कुछ स्पष्ट नइखे कहल जा सकत। अतना कहल जा सकेला कि व्यास-वाल्मीकि के बाद इहाँ के स्थान हो सकेला। भास वैष्णव धर्म के अनुयायी रहनीं आ ब्राह्मण धर्म के समर्थक रहनीं। भास के धर्म में गहरा विश्वास रहे आ नारी के सम्मान खातिर उहाँ का समर्पित रहनीं। भास अपना नाटक के सब कथा रामायण आ महाभारत से लेले बानी।

भास के ई सब विशेषता डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के बहुत प्रभावित कइले बा। इहाँ का भास के नाट्य-कला से भी प्रभावित बानीं। तिवारी जी स्पष्ट कहतानी- "कथानक, भाव, भाषा, शैली आ बरनन में भास से हाथ मिलावेवाला ना कवनो कवि बाड़न ना नाटककार। एही से हम इनिका नाटकन के भोजपुरी भाषियन के पासे पहुँचावे के प्रयास कइनीं हँ।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी द्वारा संस्कृत कवि भास के नाटकनि के भोजपुरी में अनुवादित नाटकनि में एगो 'कर्णभार' नाटक भी बा। एह नाटक के प्रकाशन भी 'रोहतास जिला भोजपुरी

साहित्य परिषद्, सहसराम, रोहतास, बिहार' से दिसंबर, 2001 में भइल बा। भोजपुरी 'कर्णभार' में ऊ सब विशेषता बा, जवन भाष के संस्कृत कर्णभार में बा। एकर कथा महाभारत से लिहल बा। महाभारत के युद्ध चल रहल बा। युद्ध के तैयारी में खूब सरगर्मी बा। आज के सेनापति कर्ण बाड़े। युद्ध में जाए खातिर तैयार बाड़े। रथ सजि गइल बा। सारथी शल्य भी तैयार बाड़े। एही बीच ब्राह्मण के भेष में इंद्र उपस्थित हो जातारे। कर्ण के मुख्य प्रतिद्वंद्वी अर्जुन बाड़े। अर्जुन के उत्पत्ति इंद्र के अंस से भइल बा। कर्ण के उत्पत्ति सूर्य के अंश से। इंद्र अर्जुन के सहायता कइल चाहत बाड़े। ऊ बढ़िया से जानत बाड़े कि कर्ण कवच-कुंडल के साथ ही पैदा भइल बाड़े। जब तक कर्ण का पास कवच-कुंडल रही, उनका के कोई परास्त नइखे कर सकत। इद्र छल से कवच-कुंडल माङि लेतारे। कर्ण महादानी हवे। उनुका पास जाके कोई खाली हाथ ना लवटे। एह कमजोरी आ विशेषता के इंद्र लाभ उठवले। शल्य जब मना कइले त कर्ण कहतारे-

जल स्थान मरु होला, जले जब सूख जाला
तेयाग आउर दिहले, एकमात्र एहिजा रहि जाला

सत्य जानते भी कर्ण विचलित ना भइले। अपना आदर्श पर अडिग रहले। पूरा उत्साह आ जोश के साथ युद्धभूमि में प्रवेश कइले। कर्ण अपना सारथी से कहले कि रथ ओनहीं ले चल जहाँ अर्जुन बाड़े। एही महाभारत के कवच-कुंडल दान प्रसंग पर 'कर्णभार' नाटक के रचना भइल बा।

'कर्णभार' के कथा संक्षिप्त बा, लेकिन पौराणिक बा आ प्रामाणिक बा। एह नाटक के कथा जइसे संक्षिप्त बा, ओसहीं पात्र के संख्या भी संक्षिप्त बा, भलहीं प्रभाव गंभीर बा। एहमें मात्र पुरुष पात्र बाड़े, नारी पात्र नइखन। पुरुष पात्र में भी मात्र पाँच गो पात्र बाड़े- कर्ण, शल्य, भट, शक्र आ देवदूत। एहमें कर्ण, शल्य आ शक्र सक्रिय पात्र बाड़े, भट आ देवदूत निष्क्रिय। एह दूनो पात्र के योजना मात्र वातावरण के निर्माण खातिर कइल बा। सूत्रधार के योजना भी तत्कालीन नाट्य परंपरा के अंतर्गत बा। एतना कम पात्र द्वारा एह नाटक के रचना पूर्ण सफल बा आ अपना लक्ष्य के प्राप्त कइले बा। सराहनीय बा।

भारतीय नाट्य परंपरा के निर्वाह करत मुख्य कथा से पहिले सूत्रधार आ भट के योजना कइल बा। सूत्रधर वंदना करत बाड़े- "श्रीधर हमनी के श्री दीहीं"। एहमें विष्णु के वंदना कइल बा। नाटककार एहमें अपना वैष्णव भक्ति के व्यक्त कइले बाड़े। साथ ही ई वंदना वस्तुनिर्देशात्मक, वंदनात्मक अउर प्रशंसात्मक बा। नाटक के मुख्य कथा के सूचना मिल जाता। भट युद्ध प्रारंभ करे के पृष्ठभूमि भी प्रस्तुत कर देतारे। एह नाटक में मुख्य संवाद कर्ण आ शल्य अउर कर्ण आ शक्र के बा। संवाद में गद्य से अधिक पद्य के प्रयोग भइल बा। गद्य आ पद्य- दूनों का सरल आ बोधगम्य भाषा में संवाद आ कविता छोटा-छोटा बा। एहसे कथा में सहज प्रवाह बा। कर्ण के संवाद से उनका द्वंद्व के स्पष्ट पता चलत बा। फिर भी कहीं कर्ण विचलित नइखन। कर्ण अपना संकल्प पर अडिग बाड़े। संवाद से शक्र का भी चरित्र पर साफ प्रभव पड़त बा। नाटक के कलेवर छोटा बा। एकरा के एकांकी कहल जा सकेला, फिर भी वातावरण-निर्माण

में नाटककार पूरा सफल बा। कहीं भी प्रसंग उलझल नइखे। वतावरण निर्माण में शब्द आ वाक्य के अपव्यय नइखे कइल गोइल।

'कर्णभार' भोजपुरी रूपांतर ह। अक्सर अनुवाद में में मौलिकता ना रह जाला, प्रवाह रुक जाला। अनुवादक डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के हम कोटिशः धन्यवाद देत बानी कि भोजपुरी कर्णभार कहीं भी अनुवाद अइसन नइखे लागत। ई बुझात बा कि तिवारी जी के ई रचना मौलिक ह। पाठक एक साँस में नाटक पढ़ि जाता, बिना कवनो अवरोध के आ बार-बार पढ़े के इच्छा होता। मूल नाटक संस्कृत के रचना ह आ अनुवादक भी संस्कृत-हिन्दी के प्रकाण्ड पंडित बाड़न, फिर भी अतना सरल भोजपुरी में अनुवाद बा कि ई मौलिक बनि गोइल बा। भाषा के एगो बानगी देखीं—

तनिको ना छल बड़ुए, सभका से बल बड़ुए।
अचल अनूप दान शील इनिकर धन्य बा।
एह सरलता आ प्रवाह के कवनो जवाब नइखे।

एह नाटक के पूरा परिवेश युद्ध के बा, बाकी युद्ध के बरनन कहीं नइखे। ई उद्देश्य भी नइखे। मुख्य उद्देश्य एह नाटक में कर्ण के चरित्र के उजागर कइल आ मुख्य रूप से कर्ण के दानशीलता आ तेयाग के नाटकीय ढंग से प्रस्तुत कइल बा। नाटककार एह लक्ष्य के प्राप्ति में पूर्ण सफल बाड़े। अब कर्ण के चरित्र के संबंध में कवनो भ्रम नइखे रहि जात। ई एकांकी भाव, भाषा आ तकनीक का नजर से पूर्ण सफल बा।

हमरा पूरा विश्वास बा कि भोजपुरी नाटक-परंपरा में एह भोजपुरी कर्णभार के महत्त्वपूर्ण स्थान होई। एकरा से भोजपुरी नाटकन के विषय, भाषा आ तकनीक के दिशा में मार्गदर्शन मिली। एह नाटक के बहुत आसानी से पढ़ल आ मंच पर खेलल जा सकेला। एकरा मंचन में भी कवनो बाधा नइखे।

पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

डॉ. दिवाकर पाण्डेय

'उरुभंग' अनुवाद के औचित्य

'उरुभंग' संस्कृत के महान नाटककार भास के एगो लोकप्रिय नाटक ह, जेकर भोजपुरी अनुवाद डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी कइले बानीं। अनुवाद-कर्म एगो कठिन कर्म ह, काहे कि अनुवाद के क्रम में तरह-तरह के कठिनाई आवे ला, जवना से अनुवादक के जूझे के परे ला। एह तमाम कठिनाइयन में सबसे बड़ कठिनाई ह भाव के रक्षा कइल। अइसन स्थिति में अनुवादक के परकाया-प्रवेश के ओर उन्मुख होखे के परेला, लेखक के भाव से अनुवादक के तारतम्यता स्थापित करे के परे ला।

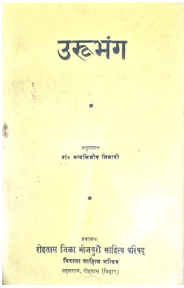

तारतम्यता स्थापित कइला के बावजूद ओह भाव के व्यक्त करे वाला शब्द अनूदित भासा में ना मिलि पावे। अइसना में अनुवादक बिबस हो जाला आ अनुवादक चाहियो के ओह भाव के व्यक्त ना करि पावे। भाव भीतरे उमड़त-घुमड़त रहि जाला। दूसर समस्या कृतियन के चयन में आवे ला । आखिर अनुवाद के औचित्य का बा ? अनुवाद के जरूरत का बा ? कहे के मतलब कि प्रासंगिकता के प्रश्न सामने आके खड़ा हो जाला। अगर अनूदित कृति वर्तमान खातिर उपयोगी ना भइल त फिर सभ मेहनत बेकारे मानल जाई।

संस्कृत कृतियन के सौन्दर्य सदा से विद्वान लोगन के आकर्षित करत रहल बा आ दोसर भासा के तरह भोजपुरियो मे थोरा मातारा में ही भले, बाकिर अनुवाद भइल बा। कालिदास के "मेघदूत" के बड़ा सुन्दर अनुवाद पं० हवलदार त्रिपाठी सहृदय जी भोजपुरी में कइले बानीं। एह अनुवाद में कालिदास के भाव आ शिल्प के रक्षा करे के पूरा प्रयास भइल बा।

प्रस्तुत कृति 'उरुभंग' के एही कड़ी के विकास के रूप में देखल जा सकत बा। महाभारत-जुद्ध के अंतिम चरण के प्रसङ के उठा के ओकरा में आदर्श के रङ भरल गइल बा। एकरा आरंभ में बीज तत्व के रूप में जुध के बिभीसिका देखावल गइल बा त अंत में फलागम के रूप में दुरजोधन के हिरदय में उदात्त भाव के उदबुध करा के आदर्श तत्व के स्थापना कइल गइल बा।

नाटक के प्रारंभ में एगो भट के मुँह से जुध के बीभत्स रूप के बरनन करावल गइल बा -

ह्रत जीवित जे बाड़े राव इहाँ हत होके परसपरे के घर से।
सभ देखऽ जे कइसन बाड़े पड़ल रन आंगन होय रहल घर से।
तन से खग मांस जे नोंचत ना हटतो नइखे न हटावला से।
अस लागत बा, बस मांस के खंड से गढ़त बा बरभूसन से।

बर्तमान में पूरा विश्व जुध के समस्या से जूझि रहल बा। आधुनिक युग में दू-दूगो विश्व जुध हो चुकल बा आ तिसरका कब हो जाई, केहू कहि नइखे सकत। जुध में अंततः मिले ला का, कुछ ना। सबकुछ गँवइला के बाद सिर्फ पछतावा हाथे लागे ला। जुध में हानि दूनो पक्ष के होला। हारेवाला त हरबे करे ला, बाकिर जीतहूवाला हारले रहे ला। महाभारत में जीतला के बावजूद जुधिस्ठिर अपना के खाली-खाली पावत रहलन त हारल दुरजोधनो अपना के अकेला पवले रहे।

'उरुभंग' में मृत्यु के समय दुरजोधन के हिरदय के निर्मल देखावल गइल बा। मरे के बेर ओकर दिल साफ हो जात बा, सारा कलमस बिला जात बा। जब गदाजुध के नियम के उल्लंघन करत भीम दुरजोधन के जाँघ तूरि देत बाड़न त बलराम बहुत क्रोधित हो जात बाड़न। कृस्न भगवान सहित अवर लोग ओहिजा जवरियाइल बा। तरह-तरह के बातचीत हो रहल बा। एही बीच द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा ओहिजा आवत बाड़न आ दुरजोधन के सामने प्रतिज्ञा करत बाड़न-

गरुड़ के पीठे पर रहेला निविष्ट जे
होला रन खातिर तइयार अरिनास हित।
आठ भुजावाला भीम जेकरा के कहल जाला
रहे ला रन खातिर ऊ संख चक्र के सहित।
नष्ट हम करबि उनुका पांडवन के पुत्रन साथे
देखि के तब देव दानव कुलिहे रहिअन चकित।
फइली सभकर लास एही समर स्थली में
दिखिहन प्रसांत ऊहो चितर लेखा लिखित।

ई प्रतिज्ञा सुनिके दुरजोधन के आत्मा जागि जाता। ऊ नइखन चाहत कि हमरा खानदान में जे बाँचि गइल बा, अब ओकर बिनास होखे। ऊ गुरुपुत्र अश्वथामा के समझावत कहत बाड़न-

अइसन मत करी, अइसन मत करी रउआ।
धरती के गोदी में कूल्ही राजबंस गइलन
जे रहन भूषण विधि जुक्त अभिसिक्त भी
कर्णो सीधरलन सरग धाम शांति खातिर
जेकर प्रचंड बान होखे अतिरिक्त भी।
बचलन ना भीखम बीर अब केहु का होई

सौ गो न भाई बचलन दुसमन भयभीत भी।
देखते त बानी गुरुपुत्र हमार हाल आज
फेंकली ह पाँच बान पांडवो सभ रिक्त भी।

जब अश्वथामा अपना तर्क के आगे बढ़ावत कहत बाड़न कि हे कुरुराज। आज गदाजुध में भीम जवन कइले बाड़न, ऊ ठीक नइखे। गदाजुध के नियम के खिलाफ ऊ जंघा पर वार क के जंघा तूरि दिहलन, का ई ठीक कहाई ?

ई सुनिके दुरजोधन के न्यायप्रियता सामने आ जात बा। अपना करनी पर विचार करत अश्वथामा के समझावत बाड़न कि भीम के ई करे के पहिले हमनियो के इहे काम कइले बानी जा
तब भला अकेले भीमे कइसे दोसी हो सकत बाड़न -
अइसन बात नइखे।

गुरुपुत्र माने खातिर राजा के सरीर ह।
माने खातिर त हम निग्रह धारन कइली
द्रोपती के केसन के गहलीं हम जुआ समय
दृप्त सत्रुअन के धता कइसे बतवलीं
माने के निबाहे खातिर रन में हम सॉंचो के
पुत्रतुल्य बाल अभिमन्यु के हतववलीं
अक्ष ब्याज से ही जीत पांडवन के हम
पशु के समान बनवास करववलीं।
रउए बताईं हमरा मान हरे खातिर कहाँ
अति दच्छ पांडव लोग अब ले का कइलीं।

दुरजोधन के हिरदय से निकलल एह न्याय प्रिय बानी के असर अश्वथामा पर काफी गहिरा तक परत बा, बाकिर प्रतिज्ञाबद्ध भइला के चलते अश्वथामा आपन मजबूरी बतावत बाड़न कि अब हम का करीं प्रतिज्ञा जे क लिहली।

नाटक के अंत में दुरजोधन के चरित्र काफी निर्मल आ उदात्त हो जात बा। एह नाटक से जुध के दुष्परिणाम पर जवन प्रकाश परत बा, ऊ वर्तमान संदर्भ खातिर एगो उचित समाधान बा। जुध में सभ कुछ बर्बाद हो गइला के बाद सही समझ आवे ला, बाकिर जब ई समझ आवेला, तबतक सबकुछ खतम हो गइल रहेला। एह से जुध के पहिलहीं चेत जाए के चाहीं।

अनुवादक भास के भावगत आ शैलीगत प्रभाव उत्पन्न करे के पूरा कोसिस कइले बाड़न आ एह कोसिस में उनुका काफी सफलतो मिलल बा।

अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

'सपन सुनरी' हमरा नजर में

संस्कृत के महाकवि भास रचित नाटक स्वप्नवासवदत्तम के भोजपुरी रूपांतर सपन सुनरी डॉ. नंद किशोर तिवारी जी के बड़ा सेसर नाट्य प्रस्तुति बा। ई नाटक कुल छव अंकन में प्रस्तुत बा। डॉ. तिवारी जी का अनुसार महाकवि भास के कुल तेरह गो नाटक संस्कृत साहित्य में उपलब्ध बा। कुछ रामायन पर, कुछ महाभारत पर, कुछ भागवत पर आ कुछ बृहत्कथा पर आधारित बा। स्वप्नवासवदत्तम के कथा बृहत्कथा पर आधारित बा। ई उनुकर सर्वश्रेष्ठ कृति मानल जाले। भास भरतो से पहिले के नाटककार हवन। जयदेव, राजशेखर, बाण, कालिदास- सभे महाकवि भास के इयाद कइले बा।

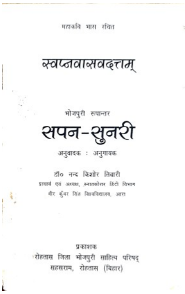

महाकवि भास रचित

स्वप्नवासवदत्तम्

भोजपुरी रूपान्तर

सपन-सुनरी

अनुवादक : अनुगायक

डॉ० नन्द किशोर तिवारी
प्राचार्य एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

प्रकाशक
रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद्
सहसराम, रोहतास (बिहार)

सपन सुनरी जइसन सेसर अनूदित नाटक रंगशाला में खेले लायक त बटले बा, ई शिष्टाचार आ स्वावलंबन सिखावेवाला आउर देश आ जाति के गौरव स्थापित करेवाला भी बा। एह नाटक के कथावस्तु आ चरित्र-चित्रण ओतने महत्त्वपूर्ण बा, जतना आजकल का नाटकन में बा। एकर कारण ई बा कि एकर मूल नाटककार भास संस्कृत नाटकारन में सभकरा से अधिका आधुनिक बाड़न। अनेक जगहा पर एमा हास्य के सृष्टि कइल बा। एह नाटक में करुण रस का साथे श्रृंगार के संयत चित्रण भइल बा जवन कि प्रेम के एगो विशेष ऊँचाई देबे में सफल भइल बा।

समीक्ष्य अनूदित नाटक सपन सुंदरी में अनुवादक के सफलता असंदिग्ध बा। लागत बा कि एह नाट्य रूपांतर में अपना पुरुखन के बात लिखल बा। प्राचीन काल से हमन के समाज उत्कृष्ट मर्यादा के पालन करत आ रहल बा। एही से इहँवा के निवासी के आर्य कहल गइल। अपना धरम-करम के ई लोग अपना शरीरो से बढ़ि के मानत आ रहल बा। राजा आ रंक के इज्जत में कबो अंतर ना रहल। समरस आ स्वाभिमानी समाज इहाँ के प्राचीन काल से बा। हमन के पूर्वज देश, समाज, धरम आ आबरू के रक्षा खातिर हमेशा तत्पर रहल बा। एह खातिर आपन सर्वोच्च बलिदान देले बा

आ इहे हमन के आदर्श बा। एह नाटक के नायिका वासवदत्ता हारल राज्य के वापसी खातिर अपना प्रेम के त्याग करत बाड़ी। अतने ना राज्यहित में ऊ सवत भी स्वीकार करत बाड़ी। हमरा ई कहे में इचिको संकोच नइखे कि भास का महान कृति के भोजपुरी अनुवाद प्रस्तुत कके डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी भोजपुरी साहित्य आ ओकरा पाठ्यक्रम के बड़ कोना गुलजार कइले बानी।

वासवदत्ता आने सपन सुनरी वत्स देश के राजा उदयन के पहिलकी पत्नी रही। ई उज्जयिनी के राजा प्रद्योत के पुत्री रही। वासवदत्ता का अवते उनका प्रेम में उदयन अतना डूब गइले कि राज काज चउपट होखे लागल। वत्स राज्य के बहुत जादा हिस्सा धीरे-धीरे उनुकरा शत्रु राजा आरुणि का राज में मिल गइल। मंत्रीगण मिलके अपना राज्यभाग के वापस लेबे खातिर मंथन शुरू कइलन। राजमंत्री यौगंधरायण ई उपाय सोंचलन कि मगधराज के पुत्री पदमावती संगे कइसहूँ राजा उदयन के विवाह करा दिआउ आ फेर मगधराज के सपोर्ट ले के आपन राज्यभाग वापस ले लिआउ। जब एक दिन राजा उदयन वन में शिकार करे खातिर गइलन तब अपना योजना का अनुसार मंत्री यौगंधरायण रानी वासवदत्ता के मना के राज्य में ई हल्ला फइला देलन कि यौगंधरायण आ वासवदत्ता दूनो जाना अगिनी में जर के मर गइलन। मंत्री खुद ब्राह्मन के वेश बना के आ वासवदत्ता के नया नाम अवंतिका रख के उनुका के राजकुमारी पदमावती भीरी धरोहर का रूप में रखवा देलन।

एह तरीका से आगे राजा उदयन के विवाह पदमावती का साथे हो गइल लेकिन विवाह भइलो पर राजा उदयन अपना पहिली रानी वासवदत्ता के भुला ना सकलन। उनुका हृदय का धड़कन का साथे रानी के नाम जपात रहे। एने पतिदेव से पदमावती के पूरा प्रेम ना मिल पावत रहे। एह से उनुका कपार में गाहे-बेगाहे दरद कबर जात रहे। एक दिन ओइसही दरद कबरल रहे त ओकर खबर पाके राजा समुद्दर गृह में गइलन। उहाँ पदमावती के ना देख के उनके पलंग पर सुत गइलन। सपन सुनरी सुनली कि पदमावती का कपार में दरद बा त देखे खातिर उहो समुद्दर गृह में गइली। ओहिजा पदमावती के सुतल समुझि के ऊ पलंग पर किनारा बइठि गइली। एने राजा सुतला में सपना देखत रहन आ सपना में ऊ वासवदत्ता के नाम लेत रहन। तब वासवदत्ता का बुझाइल कि ई त राजा हवन। ऊ राजा के लटकल हाथ उठा के विछौना पर रख देली। जम्हात राजा उदयन उनुके पहचान लेलन लेकिन वासवदत्ता हाथ छोड़ा के भाग गइली। एही बीच राजा के दोसरका मंत्री रूमण्वान शत्रु राजा आरुणि के हरा के राजा उदयन से छिनल राज लवटा लेलन।

ओने महासेन प्रद्योत के इहाँ से वासवदत्ता के धात्री वसुंधरा आउर कंचुकी उनुकर सनेश आ वासवदत्ता के उदयन का साथ भइल विवाह के चित्र ले आवत बाड़न। पदमावती राजा का साथ वासवदत्ता के चित्र देखि के राजा से कहत बाड़ी कि अइसने हू -ब-हू सूरत के मेहरारू हमरा भीरी अवंतिका नाम से बिया। राजा का अनुरोध पर अवंतिका के बोलावल जाता। ब्राह्मन वेशधारी यौगंधरायण भी पहुँचत बाड़न। वासवदत्ता के पहचान खुल जाता आ यौगंधरायण राजा के कुल्हि वृत्तांत विस्तार से

बतावत बाड़न। सब रहस्य खुलला पर सभ खुश होता। कुल्हि परिवार सहित खुशी-खुशी राजा के प्रस्थान होता।

सपन सुंदरी के नायिका वासवदत्ता के राज्यहित में त्याग, प्रेम, समर्पण आ अन्त तक मर्यादित आचरण के सुंदर निष्पादन एह नाटक में भइल बा। राज्य वापसी खातिर एगो अमर त्याग उनका श्रेष्ठ चरित्र का रूप में असर छोड़ रहल बा। ऊ अपना के, अपना भावना के, अपना सपना के राज्य का स्वतंत्रता का ज्वाला में झोंक देत बाड़ी। ऊ आपन पूरा पहचान, आत्म सम्मान आ भावनात्मक पीड़ा के छिपा के एह योजना का सफलता में सवत पद्मिनी के भी आदर का साथ स्वीकार करत बाड़ी। एक तरह से अपना राज्य खातिर ऊ स्वार्थ-शून्य हो जात बाड़ी। ऊ आपन निजी सुख, सम्मान आ भविष्य- सबकुछ दाव पर लगा देत बाड़ी। उनकर ई समर्पण, त्याग आ जोखिम सपन सुनरी नाटक के एगो मजबूत ऊँचाई प्रदान कर रहल बा।

कुल छव अंकन का काया में रचल एह अनूदित नाटक में प्यार, विश्वास, समर्पण, मर्यादा, कृतज्ञता आ जीवन संघर्ष के अनिश्चितता के अतना मार्मिक ढंग से बुनल गइल बा कि ई नाटक अन्त में पाठक का मन पर एगो त्याग से तपल श्रेष्ठ समर्पित प्रेम के गहिरा असर छोड़ रहल बा आ इहे एकर सफलता बा। नायिका के जीवन अनिश्चितता के खेल से भरल बा बाकिर प्रिया-प्रियतम के मिलते सब अनिश्चितता आ पीड़ा समाप्त हो जाता। प्रिय के खो दिहला का बाद भी वासवदत्ता ओह पवित्र प्रेम के दीया अपना दिल में जरवले अपना कठिन संघर्ष-काल में संयम आ मर्यादा से तनिको विचलित नइखे होत। उनकर पवित्र मनोदशा उनुके अपना प्रिय से जोड़ले रहत बा। राजा उदयन के मनोदशा त रानी से भी बहुत जादा अधिका जुड़ल दिखाई दे रहल बा। सपना में भी ऊ वासवदत्ता के ही नाम बड़बड़ात बाड़न। सपन सुनरी नाटक में चित्रात्मकता बहुत सबल बा। चेटी के पदमावती से कहल एगो नमूना देखीं-

" देखीं, देखीं, राजकुमारी जी, ऊजर कमल के माला अइसन सुंदर सारस के पंघत कतार बान्ह के उड़ल जा रहल बा। अयँ महाराज एहिजे बानीं।"

एह नाटक में भोजपुरी के सधल आ शिष्ट रूप खूब जमल बा। प्रकृति के सुंदर मनोहारी निश्छल वातावरण में प्रेम, विरह, संघर्ष, आशा, निराशा, विश्वास से भरल संवाद योजना राज्य का वापसी का बाद एगो सुखद परिवार मिलन के चरम तक पहुँचत बा।

बहरहाल संस्कृत साहित्य के भास रचित स्वप्नवासवदत्तम नाटक के भोजपुरी में अनुवाद होखल भोजपुरी साहित्य खातिर अत्यंत सुखद बा। शास्त्रीय कथानक के बहुते कुशलता का साथ अइसन सुघ्घर भोजपुरी रूपांतर डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के नाट्य कला के त रेखांकित करिए रहल बा, ई उहाँ के संस्कृत भाषा पर गहिरा पकड़ के भी सोझा रख रहल बा। एह नाट्यानुवाद में भोजपुरी भाषा के प्रवाहशीलता अत्यंत मनोरम ढंग से प्रस्तुत भइल बा। भाषा कतहीं बोझिल नइखे लउकत। संवाद-योजना हर जगह रोचक, सुगठित आ प्रभावकारी बा। जहाँ-तहाँ बीच-बीच में संवाद के काव्यात्मक आने पद का रूप में भी व्यक्त कइल बा। एकरा से कथोपकथन के लालित्य

बढ़ गइल बा। राजा का सामने अंत में सब रहस्य खोलत समय राज्यमंत्री यौगंधरायण के भय आ मनोदशा कविता में कतना सुंदर ढंग से परोसाइल बा-

"राजा खातिर रानी के अतना दिन बहुत छिपवलीं हम।
एह में उनुकर देख भलाई, मनमाना कर पवलीं हम।
जइसन रहुए मनोकामना, ओइसन सब पावत बानी।
तवनो पर का बोलिहन स्वामी, कबो-कबो घबरातानी ।"

नाटक में भाषा-भाव के सहजता, त्याग के अनुष्ठान आ अनुकूल प्राकृतिक चित्रण ओकरा वाजिब सौन्दर्य के विस्तार देबे में सफल बा। कुल मिला के नाट्यकला का दिशाईं एगो बेजोड़ प्रस्तुती का रूप में भोजपुरी रूपांतर सपन सुनरी खातिर विद्वान अनुवादक डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी अथोर साधुवाद आ अशेष यश के हकदार बानी।

वनशक्तिनगर, वार्ड 08, महिला आईटीआई रोड,
बक्सर (बिहार) पिन- 802101

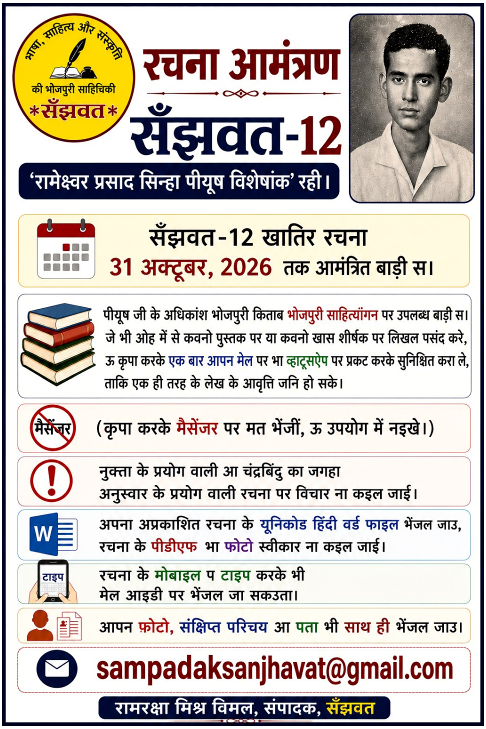

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

मध्यम व्यायोग : संस्कृत का शास्त्रीयता अउर भोजपुरी का लोक-संवेदना के सुंदर संगम

महाकवि भास के नाटक 'मध्यम व्यायोग' के गणना संस्कृत नाट्यपरंपरा का एगो अत्यंत प्रभावशाली एकांकी में होला। डॉ. नंदकिशोर तिवारी द्वारा कइल गइल एह नाटक का भोजपुरी काव्यानुवाद के साहित्यिक अउर भाषाई दृष्टि से एगो सुन्नर कृति कहल जा सकत बा। ई काव्यानुवाद एगो सांस्कृतिक पुनर्सृजन हो गइल बा, जवना में संस्कृत के नाट्यपरंपरा आ भोजपुरी का लोकधर्मी काव्यसंवेदना के सुन्नर समन्वय लउकत बाटे।

व्यायोग संस्कृत नाटक के अइसन रूप हटे, जवन एक अंक के होला आ जवना में वीर रस के प्रधानता होला। एकर कथानक कवनो प्रसिद्ध इतिहास भा पुराण से लिहल जाला। एकरा में स्त्री पात्र पुरुष पात्र का तुलना में बहुत कम होले भा ना होले। महाकवि भास का मध्यम व्यायोग, दूतवाक्यम् , कर्णभारम् आदि नाटक के व्यायोग के प्रसिद्ध उदाहरण मानल जाला। मध्यम व्यायोग में प्रसिद्ध कथा महाभारत के बिया आ एहमें दू गो स्त्री पात्र अउर छव गो पुरुष पात्र बाड़न। एहमें व्यायोग का नियमन के पालन करत पूरा कथा के एके दिन का घटना में समेटि के संकलन-त्रय के उत्कृष्ट निर्वाह कइल गइल बा।

डॉ. तिवारी एह कृति के भोजपुरी भाषा में रूपांतरन अउरी अनुगायन कहले बाड़े। सच्चाई भी ईहे बा कि ई खाली अनुवाद नइखे, बलुक 'अनुगायन' भी बाटे। एकरा में छंद आ पद के अइसन संयोजन कइल गइल बा कि ओकर गायन संभव होखे।

मूल कृति आ काव्यानुवाद के संबंध पर ध्यान देत खा लागत बा कि संस्कृत नाटक 'मध्यम व्यायोग' में महाभारत के पात्र- भीम, हिडिम्बा आ घटोत्कच का माध्यम से वीरता आ करुणा का सङहीं पारिवारिक भावना के भी बरियार चित्रण भइल बा। डॉ. तिवारी एह कथा के अनुवाद का सङहीं लोकभाषा का संवेदना, लय

अउर भावधारा से भी संपन्न कर देले बानी। एह अर्थ में ई कृति अनुवाद से अधिका एगो काव्यात्मक रचना बन गइल बिया।

एह काव्यानुवाद के सबसे बड़हन ताकत एकर सहज आ स्वाभाविक भोजपुरी भाषा बाटे। भाषा में कवनो बनावट नइखे लउकत आ संवाद त अइसन लागतारे सन जइसे सीधे लोकजीवन का बोली से जुड़ल होखऽ सन। पात्रन के बतकही उहनी का सुभाव आ सामाजिक परिवेश के अनुरूप लागता। उदाहरण खातिर ब्राह्मण, राक्षस आ वीर पात्रन का भाषा पर ध्यान दिहल जा सकत बा। ओहमें अलग-अलग भावधारा साफ लउकतारी सन।

मूल संस्कृत नाटक आ भोजपुरी काव्यानुवाद- दूनों में वीर आ करुण रस के सुंदर समन्वय लउकत बा। भीम का वीरता में ओज आ आत्मविश्वास, हिडिम्बा का मातृत्व में करुणा आ ममता के भाव अउर घटोत्कच का संवादन में उत्साह आ उग्रता का रंग के एह काव्यानुवाद में भी साफ-साफ देखल जा सकत बा। एह विविधतापूर्ण भावन के डॉ. तिवारी भोजपुरी का सरल आ सहज शब्दावली से जीवंत आ प्रभावपूर्ण बना देले बानी।

लयात्मकता आ काव्यात्मकता का अपूर्व विधान से पाठक के अइसन अनुभव होता कि ऊ नाटक खाली पढ़ते नइखे, बलुक ओकरा के सुनियो रहल बा। एकरा वाक्य संरचना में छंदात्मक लय के आभास मिलत बा। भलहीं ई नाटक हटे बाकिर एह काव्यानुवाद में लयात्मक प्रवाह स्पष्ट लउकत बा। एहमें शब्दन के पुनरुक्ति आ ध्वन्यात्मकता से जवन काव्यात्मक सौंदर्य उत्पन्न होत बा, ऊ देखते बनता।

मध्यम व्यायोग का एह काव्यानुवाद में पात्रन के चरित्र अत्यंत सजीव बनल बा। एहमें जहाँ भीम वीरता, साहस अउर आत्मबल के प्रतीक बाड़े, घटोत्कच उग्रता अउर उत्साह के प्रतीक बाड़े, ओहिजे हिडिंबा राक्षसी होइओ के मातृत्व का करुणा से भरल-पूरल बाड़ी। घटोत्कच के डेरवावन रूप के सजीव वर्णन भोजपुरी में लउकत बा-

हाँथी के बाचा नीअन दाँत एकर लउकत बा,
लांगल अस नाक के आकृति दिखात बा।
घटोत्कच का दृढ़ संकल्प के एगो उदाहरण देखल जाउ।
चाहें केहू धमकी दे, हाँथे लेके चाप भी,
छोड़ देबे कहस चाहें हमार बाप भी;
छोड़े के बात कबो हमरा ना मान्य बा,
सभसे ऊपर माई के निदेशे हमरा मान्य बा।

एकरा भाषा के भोजपुरिहा लोकगंध एह पात्रन के ढेर मानवीय बना देतिया।

एह काव्यानुवाद के एगो बड़हन उपलब्धि ई बा कि ई संस्कृत के शास्त्रीय परंपरा अउर भोजपुरी का लोकपरंपरा के बीचे सेतु के काम करत बिया। एहिजा शास्त्रीय कथा लोकभाषा में जीवित हो जात बिया। एहिजा आके महाभारत के परंपरा ग्रामीण पाठकन खातिर ढेर सुलभ हो जात बिया। एकरा से भोजपुरी साहित्य में नाट्य परंपरा के भी निस्चे एगो नया दिशा मिली।

कुल मिलाके डॉ. नंदकिशोर तिवारी का एह काव्यानुवाद के भोजपुरी साहित्य खातिर बहुत महत्त्वपूर्ण कहल जा सकत बा। काहें से कि ई शास्त्रीय संस्कृत नाटक के सफल लोकभाषिक रूपांतरण बाटे। एकरा में प्रयुक्त भाषा के भोजपुरी के स्वाभाविक आ प्रभावपूर्ण भाषा कहल जा सकत बा। एकरा में वीर अउर करुण रस के संतुलित चित्रण मिलत बा। एकरा में संवादन का नाटकीयता अउर काव्यात्मकता के अद्भुत दरसन होता। एह काव्यानुवाद के लोकसंस्कृति अउर शास्त्रीय साहित्य के जो सुंदर संगम कहल जाई, त ऊ कहीं से ढेर ना कहाई। सही अर्थ में ई कहल ठीक रही कि मध्यम व्यायोग के ई काव्यानुवाद खाली अनुवादे भर नइखे, बलुक भोजपुरी साहित्य के एगो सांस्कृतिक संपदा बाटे, जवन शास्त्रीय भारतीय नाट्य परंपरा का लोकभाषा में एगो नया जीवंत रूप दे रहल बा।

चलत-चलत एगो प्रस्ताव

प्रसंग का अनुरूप सर्वनाम भा सार्वनामिक विशेषण रूप के प्रयोग कइल जाए के चाहीं।

1. उहाँका/ऊहाँका/उहाँके/ऊहाँके/उहाँ के/ऊहाँ के

उहाँका, ऊहाँका, उहाँके, ऊहाँके- वे (अति सम्मानित)

उहाँके, ऊहाँके- उनुकर/उनकर (उनका/उनके- हिंदी)

उहाँ के, ऊहाँ के- उनुका के/उनका के (उनको- हिंदी)

जब सर्वनाम रूप का साथे 'के' जुड़ल होखे त समेकित संज्ञा रूप- 'उहाँके' के प्रयोग हिंदी का 'के' के रूप में होखेके चाहीं आ जब सार्वनामिक विशेषण का रूप में प्रयोग कइल जाए त ओकर अर्थ' हिंदी के 'उनका / उनके' अउर भोजपुरी में उनके/ उनुकर (उनकर) लिखल जाएके चाहीं।

जब 'उहाँ के' भा 'ऊहाँ के' के प्रयोग होखो (माने परसर्ग अलग होखे) त 'के' हिंदी का 'को' अर्थ खातिर होई त सुस्पष्टता बनल रही।

2. रउआँ आ रउरा

रउआँ के प्रयोग कर्ता का रूप में स्वीकृत बा। एकरा में अलग से परसर्ग ना लागे। रउरा के प्रयोग भी कुछ लोग कर्ता का रूप में कर देलन। ऊ प्रयोग कहीं से गलत नइखे, बाकिर समरूपता खातिर ई जरूरी बा कि 'रउरा' के प्रयोग कर्ता आ संबंध छोड़िके कवनो दोसरा परसर्ग का सङे कइल जाउ। जइसे,

रउरा के- (कर्म), रउरा से- (करण आ अपादान), रउरा खातिर- (संप्रदान),

रउरा पर, रउरा घरे, रउरा भीरी, रउरा सङे (अधिकरण)

3. 'रउरा' आ 'राउर'

'रउरा' विशेषण का सङे जवन संज्ञा जुड़ी, ओहमें कर्ता आ संबंध छोड़ि के बाकी दोसर परसर्ग प्रयुक्त होइहें सन। 'राउर' विशेषण का सङे खाली ऊहे संज्ञा जुड़ी, जवन कर्ता होई। एकरा में संबंध कारक के परसर्ग लागल बा।

रामरक्षा मिश्र विमल

(ई स्तंभ फेरु से शुरू कइल जा रहल बा।)

पंकज तिवारी

दूतवाक्यम, भोजपुरी भासा अउरी डॉ. नंदकिशोर तिवारी के साहित्य

दूतवाक्य में कृष्ण भइले पांडवन के दूत
अइले, संधि खातिर कारज में न सफल भइले ह।
दुरजोधन चाहत बा न शिष्टता दिखावल तनिको
कृष्ण के परभाव सब केहू के सहमवले ह।
देखऽताड़े कृष्ण के अनेकन रूप जहाँ-तहाँ
सभा के समूचे राजा देखि चकरइले ह।
दुरजोधन भला कइसे त्यागस ऊ जुद्धनीति
कुदिन भला केकर ना दिमाग भरमवले ह।

कथासार के हवाले से लिखल डॉ. नंदकिशोर तिवारी के ई बात पूरे दूतवाक्यम, जे संस्कृत कवि भास का नाटक के भोजपुरी काव्यानुवाद ह, के सही में सार ह। पुस्तक में कहल सब बात के जड़ इहाँ के पढ़ला से समझ में आ जाला। प्रस्तुति, भाषा, भोजपुरिया मिठास- सभे कुछ के परभाव एक्के साथे देखात बा एंह पद्य में। महाभारत के एक विशेष दृश्य जहाँ युद्ध के रोकला खातिर भगवान श्रीकृष्ण खुद के दूत के रूप में भी बने खातिर तैयार क लेले बानी। उनकर कहनाम बा कि आवे वाला समय में जब कौरवन के लोग दुत्कारी त पांडवन खातिर अइसन शब्द ना आवे के चाही। पांडव के याद कइल जाई त ई लांछन ना लागे के चाही कि शांति के कवनो परयास ना कइल गइल रहे। एही खातिर जुद्ध का पहिले शांति के हर परयास कइके देखला के बात बा। अउर एही खातिर हम दूत बनिके शांति के परयास खातिर ही उहाँ जा रहल बानी। सभा में पहुँचला से लेके, उहाँ के लोगन तक अउरी दुरजोधन के कइल दुरबेवहार तक के कुलि बरनन इहाँका अनुवाद में भइल बा।

कवि भास के मूल कृति जवन संस्कृत में बा अउरी जवना के पढ़ला का बाद जब तिवारी जी द्वारा कइल ओकर अनुवाद के पढ़ल जाई त जरूर फरक नजर आई। मूल कृति के काव्यात्मक

प्रस्तुति अनुवाद के अपेक्षा जादा मजबूती के साथ अनुभव कइल जा सकत बा। डॉ. तिवारी का एह अनुवाद में भोजपुरी भासा के एक अलगे आनंद मिलत बा, एहिजा लोकभाषा के सुंदरता आ मिठास दूनो मिली। नाटक का संदर्भ में देखला प गौर करे लायक ई बात बाइ कि मंच सज्जा आ प्रस्तुति में गहराई का मामला में कइए जगहा कमी नजर आइल बाकिर ओकरा खातिर इहाँ के दोष नइखे दिहल जा सकत काहेंकि विस्तारित प्रस्तुति के कमी मूल कृतिए में नजर आ रहल बिया। एकरा सङ्हीं अनुवाद के भी आपन सीमा होला। पात्रन के संवाद वाली भोजपुरी पद्य में त कमाल के काम देखावत बिया। वासुदेव द्वारा जमीन जायदाद का बँटवारा के बात कइला पर दुरजोधन का तरफ से आइल अपने चाचा अउरी उंनका लइकन के जन्म अउरी परिवार से संबंध खातिर बोलल जहरीला शब्दन का जवाब में बासुदेव के जवाब देखीं- पहिले मूल कृति, ओकरा बाद अनुवाद के देखल जाव-

वासुदेव-

पुराविदं भवन्तं पृच्छामि—
विचित्रवीर्यो विषयी विपन्नः
क्षयेण राजन् पुनरम्बिकायाम्।
व्यासेन जातो धृतराष्ट्र एष
लभेत राज्यं जनकः कथं ते॥

अनुवाद में तिवारी जी के प्रयास देखीं जा-

रउआ त इतिहासज्ञ बानी। पूछीं रउआ से एगो बात?
होके बिचित्र वीर्य विषयी विपन्न भइले
क्षय रोग ग्रस्त भइले, के नाहीं जानत बा।
अंबिका के गरभ से सही में धृतराष्ट्र भइले
व्यास वीर्य से भइलन, विस्व इहे मानत बा।
उत्तराधिकारी धन खातिर एह भाँति कबो
केहू धृतराष्ट्र के भी आजू ले जानत बा?
तूँ ही बतलावऽ कौरवन के अधिकार कहाँ
राज्य में भइल तब त पाण्डवन के मानत बा।

एह पूरा बंध में दुरजोधन के कइल प्रश्न के बहुत सटीक अउरी जोरदार उत्तर बाटे, साथ ही उनका के खुद के बाते प सोचे खातिर बिबस भी कइ गइल बा। इहो साँच हऽ कि दुरदिन जब आवे के होला त पहिलहीं मति मरा जाला। दुरजोधनो का साथे इहे बात भइल रहे अउर ऊ आपन बात करे के सीमा लाँघि गइल रहे, जवना के बरनन इहाँ पूरे अनुबाद में लउकत बा।

बहुते कम पात्रन का माध्यम से ई नाटक तैयार कइल गइल बिया। हमरा नजर में ई नाटक के कमजोरी ह। मतलब साफ बाटे कि मंचसज्जा पर भी एकर असर देखल जा सकत बा अउर पात्र का अधिकता से जीवंतता के अउर बृद्धी हो सकला के गुंजाइश रहे। एह से कहल जा सकेला कि एतना बड़ घटना के, जेकरा के चर्चा त बहुते

आम बा, जहाँ उपस्थित एक-एक पात्र के आपन अलग-अलग वजूद रहे, आपन-आपन वेवहार आ वक्तव्य रहे, उहाँ बहुते कम पात्रन का माध्यम से बात त पूरा हो गइल बिया बाकिर गुंजाइश अबहियों बहुत के रहे। दुरजोधन अउरी वासुदेव के संवाद, जवन धीरे-धीरे कटुता के तरफ बढ़ल जात रहल बा, के बानगी देखीं-

मूल कृति में दुरजोधन-

दुर्योधनः - सर्वथा वञ्चितस्त्वया कंसः।

अलमात्मस्तवेन। न शौर्यमेतत्। पश्य-

जामातृनाशव्यसनाभितप्ते

रोषाभिभूते मगधेश्वरेऽथ।

पलायमानस्य भयातुरस्य

शौर्यं तदेतत् क्व गतं तवासीत्॥

कंस अउरी मगध नरेश के बात प कृष्ण के जलील करे के बात इहाँ साफ नजर आ रहल बिया, जेकरा अनुवाद में तिवारी जी के कहनाम बा कि-

मामा हवन कंस तोहरा बापे के साला जे
तोहरा मतारी के पलले-पोसले रहलन ऊ
तवनों प दया ना कके, मरल तूँ उनुका के
हमरा के, धरम के, हवाला दे ताड़ऽ तूँ

एह तरह का संवादो के बाद वासुदेव के गुस्सा धीरे-धीरे बढ़ल जाता अउरी बात बिराट स्वरूप से लेके अस्त्र-शस्त्र तक आइल आ एगो दोसरा के समझावल जइसन बात भी भइल। देखल जाव कि सुदरसन का समुझावत बा वासुदेव के जे स्मरण कइला प हाजिर त तुरंते हो गइल अउरी अपना रूप आ काम के बखानो करत बाटे-

मेरु गिरि स्रेनी के समूचे उलट दींही
कुल्ही सागरन के छोभ तुरते रचा दींहीं हम?
कि अकासमंडल के निखिल नछत्तरन के
खींच के भुँइया पर जलदी बिछा दीहीं हम?
तहस-नहस में मिला दीहीं कुल्ही सृष्टिए के
कहीं त प्रलए के दृश्य दिखा दींही हम
रउआ किरिपा से कुछऊ हमरा असक्य नइखे
दीहीं जे निदेस त तहलका मचा दींहीं हम

बाकिर ई कुलि भइला का बाद वासुदेव का गोस्सा के शांत करावे के परयास भी सुदर्शन के द्वारा कइल गइल।

सुदर्शन का समझावत बा, देखल जाउ-

सुदर्शन-

हे सुजोधन के हतेवाला। (फिरु से विचार करीं) प्रसन्न होईं। प्रसन्न होईं भगवान नारायन।

सुदर्शन फेरु कहत बाटे-

आइल बानीं सभ हरे, पृथिवी के कुल भार।
अगर करब बध आज त, होई सभ बेकार।।

जेकरा बाद भगवान के धियान आ गइल कि दुरजोधन के बध कइल ठीक नइखे अउरी अंत में गोस्सा में ऊ बाहर जाए लगलन। अतने में नेपथ्य में मत जाईं-मत जाईं, जइसन एगो बृद्ध पुरुष के अवाज गूँजल। ई धृतराष्ट्र के अवाज रहे। जेकरा के माफी माँगत जइसन संबाद का बाद भगवान के जाए के दृश्य हटे, जेकरा बादे भरत वाक्य के साथे ई नाटक समाप्त हो जाता।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य का समृद्धि में डॉ. नंदकिशोर तिवारी के नाम अउरी काम केहूँ से छिपल नइखे। उनुका साहित्य के एगो अलगे ऊँचाई हटे, जेकर बानगी एह नाटक में साफ लउकत बा। कुछ जगहन के छोड़ि दिहल जाव त ई बात अराम से कहल जा सकेला कि ई भोजपुरी भाषा के बेहतरीन नाटक ह।

फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली- 110074

रामेन्द्र मिश्र

डॉ. नंदकिशोर तिवारी आ उनकर काव्यानुवाद

डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी के अनुवाद कार्य खाली एगो भाषा से दूसर भाषा में शब्दन के रूपांतरण ना हटे, बलुक ई दूगो संस्कृति आ जुग का बीचे एगो वैचारिक सेतु के निर्माण हटे।

डॉ. तिवारी अपना एह काम के अनुवाद से ज्यादा अनुगायन कहे प जोर देले बानी। शोध का नजर से देखल जाउ त उहाँका कविवर भास के श्लोकन आ छंदन का आत्मा के अपना कलम से भोजपुरी का लोक लय में आत्मसात कइले बानी। डॉ. तिवारी मूल पाठ का पीछे ना भागि के शब्दन का ध्वनि आ भाव के भोजपुरी में पिरोअले बानी। उहाँके ई शैली पाठक वर्ग के अहसास करावतिया कि ई नाटक मूलतः भोजपुरिए भाषा के ह।

साँच पूछीं त डॉ. तिवारी के पात्र एकदम भोजपुरियाइज्ड बाड़न। ई कहे में हमरा तनिको गुरेज नइखे कि उहाँ के द्वारा कइल भोजपुरीकरण खाली किताबी भोजपुरी ना होके एगो जीवंत भाषा बनि गइल बा जवन साहाबाद आ आसपास का क्षेत्रन में भी रचल-बसल बा। जहाँ संस्कृत नाटक में राजसी ठाट-बाट आ जटिल शब्दावली होला, ओहिजा उहाँका पुरुखने, लैनू आ पनहा जइसन ठेठ शब्दन के प्रयोग क के पात्रन के अउर भोजपुरी से जोड़ देले बानी। उहाँका अनुवाद में द्रौपदी आ वासवदत्ता में उहे विलाप उहे तड़प लउकेला, जवन भोजपुरी लोकगीत का एगो विरहिन में होला।

एगो अनुवादक का रूप में तिवारी जी के दृष्टि अत्यंत दृष्टिपरक (visual) बा। उहाँका दूतवाक्यम् आ कर्णभार जइसन नाटकन में रेडियो नाट्य शैली का तत्वन के सहज समावेश कइले बानी। शोधकर्ता खातिर देखल जाउ त उहाँका एक ओर जहाँ संस्कृत संवाद के संक्षिप्त बनवले बानी ओहिजे मर्मभेदी भी। भास का नाटकन के सबसे बड़ विशेषता पात्रन के अभिनेयता बा, जेकर तिवारी जी विशेष ध्यान रखले बानी, जवन बोले में सहजो बा आ मंच पर प्रभावी भी।

तिवारी जी के मान्यता बा कि संस्कृत आ भोजपुरी का

बीचे गहरा अनुवांशिक संबंध बा। उहाँका अपना अनुवाद में खाली शब्दन के हेर-फेर नइखीं करत बलुक संस्कृत का शास्त्रीयता के लोकधर्मिता से भी जोड़त बानी। उदाहरण का तौर पर प्रतिमा नाटकम् में जब उहाँका भरत का शोक के वर्णन करत बानी, तब ऊ एगो राजकुमार का जगहा एगो अइसन बेटा के शोक बन जाता जवन भोजपुरी समाज प गहरा असर छोड़त लउकता।

तिवारी जी के अनुवादक रूप का पाछा एगो गंभीर शोधार्थी के चिंता भी बा। उहाँका एह बात के सँकारतानी कि उहाँका भोजपुरी में उच्च स्तरीय साहित्य का कमी के दूर करे खातिर भास के चुनलीं। सबसे बड़ बात त ई बा कि तिवारी जी खाली मनोरंजन खातिर अनुवाद ना कइलीं बलुक ई सिद्ध कइल चहनी कि भोजपुरी जइसन लोकभाषा में महाकवि भास का जटिल दर्शनशास्त्र आ वीर रस के अभिव्यक्ति के पूरा क्षमता बा। उहाँ के ई पावन काज भोजपुरी के ननद भौजाई का चुटकुलन से निकाल के उच्च शिक्षा का स्तर तक ले जाए के एगो सचेत प्रयास मानल जाई।

एह तरह से, डॉ. नंदकिशोर तिवारी के अनुवादक रूप एगो सांस्कृतिक पुनर्व्याख्याकार का रूप में लउकत बा। उहाँका भास के तेरह नाटकन का माध्यम से भोजपुरी साहित्य के एगो नया आयाम दिहलीं। उहाँ का शैली में पांडित्य के घमंड नइखे लउकत बलुक लोक साहित्य का प्रति सहज अनुराग बाटे। ई उहाँका अनुवाद के मौलिक रचना नियन ताजगी देत बा। तिवारी जी के ई अनुवाद वाला काम भास का आगि नियन तेज के भोजपुरी का शीतलता में ढारि देबे के एगो सफल अनुष्ठान अस भी लागता।

बड़कागाँव, सबल पट्टी, पो. नगपुरा, जिला- बक्सर (बिहार), पिन 802118

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

डॉ. नंदकिशोर तिवारी के संपादन कौशल

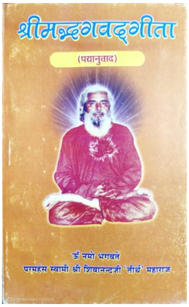

डॉ. नंदकिशोर तिवारी भोजपुरी साहित्य, भाषा अउर संस्कृति का क्षेत्र में एगो बहुआयामी अउर मूर्धन्य हस्ताक्षर हईं। उहाँका कुँवर सिंह विश्वविद्यालय (आरा) का हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहला के साथ-साथ अपना संपादन कौशल से भोजपुरी साहित्य के नया दिशा आ शास्त्रीय ऊँचाई देले बानी। महाकवि कुंज बिहारी कुंजन के 'कुंजन रामायण', आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उद्भव अउर विकास' अउर देव कुमार मिश्र 'अलमस्त' जी के 'अलमस्त जी के अलाप' जइसन कृतियन का संपादकीय में डॉ॰ तिवारी के उच्च कोटि का संपादन कला, भाषा-बोध, समीक्षात्मक दृष्टि अउरी शोध-परक चेतना के स्पष्ट दरसन होता। उहाँके द्वारा अन्य संपादित ग्रंथन में हिन्दी शोक गीति, निराला का निबन्ध साहित्य, संत जयराम दास, सतबादी हरिश्चन्द्र (भोजपुरी काव्य), रोहतास गढ़ (हिन्दी काव्य), सद्गुरु शरणागति, स्वामी शिवानंद वचनावली (१५ भागों में), स्वामी शिवानंद जी द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के भोजपुरी काव्यानुवाद आदि अनेक ग्रंथन के नाँव बाटे, जवना में से कुछ प्राप्य आ कुछ अप्राप्य बाटे।

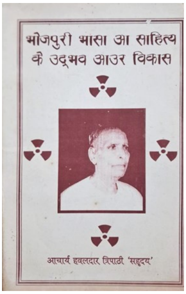

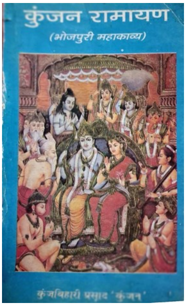

गहराई से समझे आ प्रस्तुत करे में सिद्धहस्त

डॉ॰ नंदकिशोर तिवारी का संपादन के सबसे बड़ विशेषता ई हटे कि उहाँका रचनाकार का व्यक्तित्व, ओकर जीवन-संघर्ष अउरी ओकरा काव्य-चेतना के गहराई से समझे अउरी प्रस्तुत करे में सिद्धहस्त बानी। 'कुंजन रामायण' का संपादकीय में तिवारी जी कवि कुंजन जी का अभावग्रस्त अउरी निष्कलंक जीवन के बड़ी भावुकता अउर प्रामाणिकता का सङे उकेरले बानी। उहाँका लिखतानी- "कुंजन जी के जीवन सत्य "धधकल अंगारा नीअन" रहे अउरी उहाँ के बिना कवनो लोभ-लालच के खाली १८ महीना में आपन रामायन रच देहलीं।" 'अलमस्त जी के अलाप' का संपादकीय में उहाँका अलमस्त जी के प्रचार-तंत्र से दूर रह के साधना करे वाला तपस्वी

मानत बानी। उहँाका लिखतानी- “अलमस्त जी का एक-एक पंक्ति में इतिहास के आख्यान, पुराणन के ज्ञान अउरी सेआन कवि के चोख समसेर (तलवार) रखल मिलेला।”

समीक्षा दृष्टि : शास्त्रीय आ शोधपरक

डॉ. तिवारी के संपादन खाली औपचारिकता भा भूमिका लिखे तक सीमित नइखे, बलुक ओकरा में गंभीर भाषा-वैज्ञानिक, ऐतिहासिक अउर शास्त्रीय समीक्षा प्राप्त होले। आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के अप्रकाशित आ दुर्लभ कृतियन ('भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उद्भव आउर विकास' तथा 'व्युत्पत्तिमूलक क्रियापद कोष') के संपादन अउर मूल्यांकन करत खा डॉ. तिवारी वैज्ञानिक पद्धति के सराहना करतानी। उहँाका स्पष्ट रूप से बतवले बानी कि काल-विभाजन अउर नामकरण में वैज्ञानिक तरीका अपनावल गइल बा, जेकरा से भाषा-विज्ञान का क्षेत्र में एगो प्रकाश-स्तंभ खड़ा भइल बा।

'भोजपुरी भासा आ साहित्य के उद्भव आउर विकास' के संपादकीय डॉ॰ तिवारी का शोध-दृष्टि के श्रेष्ठ उदाहरण बाटे। उहँाका आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' का साहित्यिक जीवन के तथ्यात्मक आधार पर प्रस्तुत कइले बानी। उहँाका लिखतानी- "एह विषय पर अइसन शोधपूर्ण ग्रंथ अबहिन भोजपुरी आ हिंदी में नइखे आइल, ई बहुत सोच-समुझ के बाद कह रहल बानीं।" एह कथन के अतिशयोक्ति मानल भूल होई, काहेंसे कि पूरा विवेचन का आधार पर दिहल गइल ई निष्कर्ष बा।

भोजपुरी भाषा का ताकत आ प्रवाह के पहिचान

एगो कुशल संपादक नियन डॉ. तिवारी भोजपुरी भाषा का सहज प्रवाह, ओकरा लोक-संस्कृति अउर शब्द-सामर्थ्य के खूब पहचान राखींले। उहँाका 'सीता के लाल' अउरी 'कुंजन रामायण' का भाषा के सहजता, छंदावली अउर ओकरा करुण रस के अइसन बखान करींले कि पढ़हूँ वाला के मन द्रवित हो जाला। उहँाका 'अलमस्त जी के अलाप' में भोजपुरी का मिठास, प्रकृति-चित्रण अउर ओकरा 'तेवर' के रेखांकित करत खा लिखतानी- “एह कविता सब के पढ़िके आँख खुल जाला अउर गाँव-जवार के जीवंत दर्शन होला।”

दुर्लभ आ मौलिक कृतियन के संरक्षण अउर प्रकाशन

संपादक का कई गो जिम्मेदारियन में से ईहो एगो हटे कि ऊ समाज का सामने दुर्लभ अउर मौलिक सामग्री के खोज के ले आवे। डॉ. नंदकिशोर तिवारी आचार्य सहृदय जी के निधन का बाद उनकर निष्काम साधना अउर पांडुलिपियन के सहेज के प्रकाशित करावे में मुख्य भूमिका निभवलीं। 'व्युत्पत्तिमूलक क्रियापद कोष' अउर ‘भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उद्भव आउर विकास' जइसन गंभीर शोध-ग्रंथन के भोजपुरी अउर हिंदी जगत के समर्पित करके उहँाका साहित्य के बहुत बड़ सेवा कइले

बानी, जेकरा खातिर उहाँका ईहो लिखले बानी कि एह पुस्तक के प्रकासन पर भोजपुरी माई के गरब होई।

आत्मीयता, कृतज्ञता अउर समर्पण

तिवारी जी का संपादकीय शैली में कतहीं आ कवनो तरह के आडंबर भा अहंकार नइखे लउकत। ओहमें विनम्रता का सङे-सङे रचनाकार भा सहयोगी लोगन खातिर कृतज्ञता के भाव लबालब भरल लउकेला। एह बात के अतने से समुझल जा सकत बा कि उहाँका 'कुंजन रामायण' के छपवावे में मदद करे वाला डॉ० सिंहासन प्रसाद जी, नीलमणि, असेष अउर रामेश्वर जी का प्रति खुलिके हिरदया से कृतज्ञता व्यक्त कइले बानी। सहृदय जी का प्रति आपन श्रद्धा अर्पण करत उहाँका लिखतानी कि अइसन प्रकांड विद्वान का चरन में माथा टेक के प्रणाम करे में गर्व के अनुभव होत बा। 'अलमस्त जी के अलाप' किताब के सौंपत घरी उहाँका 'सोऽहं' के जप जइसन आनंद के अनुभव करतानी- "अलमस्त जी के अलाप भोजपूरी के भाइयन के हाँथ में सउँपि के साँस लेबे में हमरा सोऽहं के जप के आनन्द अनुभव हो रहल बा।" ई वाक्य बतावता कि संपादक खातिर पुस्तक प्रकाशन खाली प्रकाशकीय घटना ना होला, बलुक ऊ आत्मिक तृप्ति के विषय होला। एह भावुकता में बनावटीपन नइखे। ई साहित्य-साधना से उपजल अनुभूति बा।

रचनाकार का व्यक्तित्व के समग्र उद्घाटन

डॉ० तिवारी कवनो लेखक के खाली ओकरा पुस्तक से ना पहचानींले, बलुक ओकरा पूरा साहित्यिक व्यक्तित्व के सामने राखि दिहींले। 'अलमस्त जी के अलाप' में उहाँका अलमस्त जी का संत-स्वभाव, संस्कृत-हिंदी पर अधिकार, भोजपुरी सेवा, अनुवाद, पत्रिका-संपादन आदि के विस्तार से उल्लेख करतानी। कवि-परिचय देत उहाँका लिखतानी- "कवि प्रकृति के देन होले, आ आत्मा के रच्छा करे खातिर उनका में सुभाव से ऊ कुल्ही गुन जनमते-बढ़ते आवत जाला।" अतने से पाठक कवि का काव्य-दृष्टि के समझे खातिर मानसिक रूप से तैयार हो जाई।”

कठिन वैचारिकी के सहज प्रस्तुति

डॉ० तिवारी कठिन साहित्यिक विचार के भी भोजपुरी भाषा में अत्यन्त सहज बना दिहींले। 'भोजपुरी भासा आ साहित्य...' में सहृदय जी का पुस्तक के मूल्यांकन करत उहाँका लिखतानी- "ई छोट किताब बून में समुद्दर के कल्पना अइसन पढ़े में लागी।" अइसन लागता, जइसे एह एक उपमा में पूरा पुस्तक के स्वरूप, गंभीरता आ व्यापकता समा गइल होखे।

सामूहिक सांस्कृतिक चेतना से जुड़ाव

डॉ० तिवारी के संपादन व्यक्तिगत ना होके, सामूहिक सांस्कृतिक चेतना से

जुड़ल बा। उहाँका भोजपुरी के भाषा का सङे-सङे सांस्कृतिक अस्मिता के आधार भी मानींले। 'कुंजन रामायण' का संपादकीय में उहाँ के स्पष्ट विश्वास व्यक्त भइल बा- "एह रचना से भोजपुरियन के गरब से लिलार ऊँचा होई।"

प्रेरणादायी शैली

डॉ॰ तिवारी खातिर संपादकीय पाठकीय संस्कार का निर्माण के माध्यम भी बाटे। उहाँका जानकारी दिहला का सङहीं पाठक के रचना का भीतर उतरहूँ के प्रेरणा दिहींले। अलमस्त जी के कविता का संदर्भ में उहाँका कहतानी- "एह स्वर में अलमस्त जी के कवितन के पढ़े के परी, एकर मरम भेदे के परी।"

आलोचना आ सहृदयता के संतुलन

डॉ॰ तिवारी के आलोचना नीरस शास्त्रीय भाषा में ना होके सहृदयता से भरल बाटे। उहाँका कविता का भीतर के रस, अनुभव आ साधना के चीन्हींले। अलमस्त जी के कविता का संदर्भ में उहाँका बात पर तनी ध्यान दिहल जाउ-

"ई संत बानी ह, आत्मा के बानी ह, पहुँचल जागल कवि के बानी ह।"

एह तरह का मूल्यांकन से स्पष्ट बा कि उहाँका साहित्य के खाली बुद्धि-व्यापार के सामग्री ना मानींले, बलुक जीवनानुभूति के अभिव्यक्ति मानींले।

इतिहास-बोध आ साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

डॉ॰ तिवारी का संपादन कला के एगो खास पहलू ई बा कि उहाँका हर रचना के साहित्यिक इतिहास से जोड़ दिहींले। 'कुंजन रामायण' का भूमिका में उहाँका कुंजन जी के पूरा रचनात्मक विकास-क्रम के सामने रख देले बानी। 'सीता के लाल', 'कुरकुरहट', 'रसबुनिया' से लेके 'कुंजन रामायण' तक के यात्रा बतावत उहाँका सिद्ध करतानी कि ई ग्रंथ अचानक पैदा नइखे भइल, बलुक दीर्घ साहित्यिक साधना के परिणाम बाटे। कुंजन जी का रचना के महत्त्व बतावत उहाँका लिखतानी- "सीता के लाल'... ना खाली भोजपुरी में, बलुक कुल्ही भारतीय भासा में अमर कृतियन में गिनाइल।" एह तरह से उहाँका लेखक के साहित्यिक स्थान भी निर्धारित करत बानी।

मए बात खातिर जो एक बात कहल जाउ त डॉ॰ नंदकिशोर तिवारी जी के संपादन कौशल के खाली एगो किताबी प्रक्रिया मानल ठीक ना होई। ई 'साहित्यिक विवेक', 'संस्कृति-निष्ठा', अउर 'अकादमिक तटस्थता' के बेजोड़ संगम हटे। एहमें कवनो संदेह नइखे कि उहाँका अपना संपादकीय का माध्यम से समय-समय पर भोजपुरी साहित्य के दिशा-निर्देश देले बानी, रचनाकारन के सही सम्मान देले बानी अउर भोजपुरी माई का सेवा में आपन निश्छल योगदान देले बानी। उहाँके ई संपादन कला अउर संपादकीय लेखन भोजपुरी अउरी हिंदी साहित्य खातिर हमेशा मार्गदर्शक का रूप में अनुकरण करे लाएक रही।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

‘सुरसती’ का प्रवेशांक के सम्पादकीय

सुरसती मइया के 'किरिपे' रउआ हाथ में बा। 'माई के बोली' के दस-बारह अंकन के बाद भोजपुरी में एगो तिमाहीँ पत्रिका निकाले के जरूरत बुझात रहे। लिखे वालन खातिर छपल एगो जरूरत ह। दावा कइसे करीं, हावा पर केकर बस बा, लेकिन कोसिस होई जे एकरा के चालू रखल जाव।

भोजपुरी भासा के सक्ती देखिके अचरज में पड़ गइलीं। जगजीवन बाबू के भाखन आ कुंजन जी के कविता भीतरे समा गइल। ई भासा अपना में अतना पूरन बिआ कि दोसरा के भासा सीखल ना चाहे, सिखा भले देले। गुनावन कइलीं कि एकर का परभाव बा। फिलिम में एकर गीत के गावल, के ना सुनल चाहल। भीतरे गइला प पाता चलल कि एकर जर बेदन के आदि भासा में पताले पहुँचल बा। विद्वानन भीरी एह बात के पहुँचवीं त देर-सबेर ऊहो लोग समुझ गइल।

राहुल जी ई समुझिए के भोजपुरिओ में लिखले लेकिन आउर विद्वान लोग भोजपूरी के कुल्ही लेके हिन्दी में उँड़ेल दिहल। ईहो ठीके भइल। लेकिन भोजपूरी ओह लोग के घरे से त ना गइल, ना जाई। बड़ा मीठा लागेला ई भासा। बड़ा करुआ बातो ई कह देला। जवन कहेला तत्वे कहेला बिना विसेसन के। एकर अभिधा आ लच्छना दूनो मिलिके व्यंजना रूप में परगट होला। फरिआ के अलगा करे के जरूरत नइखे। एही से कबीर अइसन साधक कवि आ तुलसीदास अइसन विद्वान कवि दूनों एह भासा के शब्दन के, भाव के, व्यंजना के सहारा लेलन। हमार आपन अनुभव बा कि उत्तर भारत के कुल्ही संत कवि एही भासा में सोचले आ लिखले। ई सोंचे के भासा ह। भासा के जर हृदय में होला, मुँह में ना। मुँह त औजार ह। औजार बिना चलवले करम ना करे।

इतिहास देखीं त राहुल जी सिद्धन के भासा के हिन्दी कहलन, पुरान हिन्दी। कुल मिला के चउरासी गो सिद्धन के रचना आइल, कुछ कम-बेसी। चउरासी सिद्धन में छत्तीस गो अकेले बिहार के रहन। बिहार में सबसे जादा संत भोजपुरी छेत्र में भइलन। अब उनुकर रचना देखीं। ११ वीं सदी में पुरानी हिंदी में रचल ग्रंथ ऊ

लोग के मिलत बा। हिंदी में रचल आत्म परिज्ञान दृष्टियुपदेश के भासा देखीं आ टटोलीं भोजपुरी के परभाव। १७ वीं सदी में मँगनी कवि (मँगनी राम) पदुमकेर (पद्मकेलि) के रहेवाला 'सुरसति के स्नेह' के कइसन ईयाद करत बाड़न।

कहल ई चाहत बानीं कि जवन भोजपुरी में लिखाइल उ अबहिनों छप के सामने ना आइल। राजनीति के हथकंडा पकड़ला से भोजपरी के आपन सात्विक, तात्विक, सरूप परगट ना होई। पहिले एकर आ संसकिरित के सभ एकरा में आ जाए के चाही। तब साहित्य पढ़े लायक होखी। अबहिन खँखारे भर आइल बा, जेकरा के पढ़वावल सभे चाहत बा। जिअते में 'एही जनम' में कुल्ही चीझ मिल जाव। इहे भवना काम करता बा। एम. ए. पढ़ावे के बा, का पढ़ाइब रउआ?

दरिआदास के कविता के संगरह कहां बा? छत्तर बाबा पंडितपुर बेतिआ के तहसीलदार रहन उनुकर कुल्हीं रचना भोजपूरी में बा- 'देखली में ए सजनिआ सइओं अनमोल के। दसो दुअरिआ लागे केवरिआ, मारे सबद के जोर के। सून भवन में पिआ निरेखो नयन बा दूनों जोर के। छत्तर निजपति मिललऽ भर कोर के' ।। टेकन राम धनौती के रहले ह। इनकर सिष्य परम्परा बा। ई सिद्ध पुरूख रहलन ह। एक हजार के करीब इनिकर भजन बा 'बिना भजन भगवान राम बिनु के तरिहे भवसागर हों। सूतल रहलीं नींद में गुरू दिहले जगाय। गुरू के चरन रज अंजन हो, नैना लिहलस लगाये।' ई बानी अब ले परकासित ना भइल। संभुनाथ तिरवेदी ममरखा के रहले ह उनुका भासा पर पूरा परभाव भोजपुरी के बा। ईनर राम के भोजपुरी कविता देखीं- अब घर जाए द ए सखिया, राम सुरति आ लागल मोर। छन छन पल पल कल ना परत बा, घरे आँगन भइल भोर'। बेलवेतिआ मठ के केसोदास कबीर पंथी रहले ह। उनुकर निरगुन गावे आ सुने लायक बा-आजु मोरा हरि के गवनवां चंदन लिपली हो भवनवाँ? ई सैकड़न जे पद हृदया में राखे लायक बा' परकासित ना भइल। लेकिन बा कहवाँ केकरा भीरीं। अइसहीं नष्ट हो रहल बा। भोजपुर के बाबा रमेसर दास के कविता संगरह उनुका परिवार के लोगन कीहाँ फाट के फेंकाता। ऊ कवनो एकेदमी ना छापी। भोजपरी के सनेहिअन के छापे के परी। मुखिया, सनेही के सभे मुंह से सुनल, कविता छपल ना देखलस। हम चाहत बानी एह पत्रिका से सूचना दीहीं। लोगन के धेयान जाव। भसे संस्कृति के राछा करी। ना त मेटावे में केकरो के कतना समय लागेला। शब्द से हम संस्कृति आ अपना संस्कृत भीरी पहुँच जाइब। माँड़-भात खात बानीं रउआ। सोचीं कि ई मांड़ कहां से आइल? कवनो विदवान से पूछीं। जे जानीं त ईहे बताई कि भाई मोरा ई तोहार मांड़ बहुते पुराना शब्द ह। एक दम वैदिक। ओहिजा ई माण्ड रहे। अब ई मांड़ हो गइल। ओहिजो एकर अरथ जल रहे, आजुओ बा। 'मंड' रहे त ओकर उत्पत्ति पर विचार भइल। मद् चाहे मुद् क = मण्ड। नुभ् के आगम आउर द 'ड' में। माने जल। जल, मादक आ मोदक दूनो होला। एहिजा भात के माँड़ में रूढ़ हो गइल। एकर कई गो माने ओह घरी रहे। जइसे तेल के ऊपर जमल पदार्थ। दूध के माखन, सार पदार्थ। अब खाली माँड़े रह गइल। रोज खाते रह गइलऽ, जनलऽ ना एकर मरमं एकरा अतमा से तोहरा भेंट ना भइल। भेंटो केहू ना करावल। भोजपुरी के पूआ देखा के लोग मूआ बना

देलस।

एहसे भोजपुरी के सेवा हिन्दी के सेवा ह, संसकिरित के सेवा ह। माई के सेवा करे वाला दादी आजी के घर से ना निकाले। मुरुखे अइसन करेला। भोजपुरी के सेवा से हिन्दी के महातम पर कवनो असर ना पड़ी। हजारी प्रसाद जी आ विद्या निवास जी के लेखन के मूल में भोजपुरिए बा। 'भासाभनिति' के खाली भए भर बा। भोजपूरी राज के बात खाली होखे से भोजपूरी भासा ना बनीं। ई राजनीती ह, सेवा ना। हिन्दी गंगा हई आ भोजपूरी सरजू। 'सरजू नाम सुमंगल मूला'। दिमाग के खिरिकी खोलला प उँ कुल्ही अउँस भाग जाई। भोजपूरी के हटवला प हिन्दी के महल हिल जाई आ हिन्दी ना रही त भोजपूरी के बिचार के समुदरे खाली हो जाई। काहें कि भासा एगो विचार ह, श्रृंखला ह, स्रोत ह, प्रान धारा ह। ई हावा में रहेला, आकास में रहेला। बस एकरा के खींच के, अपना पासे लाके, अपना के धनी बनावे के जरूरत बा। भोजपूरी में शब्द ना मिली त हिन्दी संसकिरित से हम लेब, हमार ओह पर अधिकार बा। खाली यूँक खँखार के भरला से नाला बनेला, नदी ना। पीए खातिर नदी ह, बहावे खातिर नाला।

हम रउआ सभे-के समने कुछ बात लेके खाड़ा बानीं। ठीक होखे त पीठ ठोंकी जा ना त दू छड़ी ओह पर मारीं। हम विद्वानन के भोजपुरी भासा में लीखे खातिर बोलहटा देत बानीं। नाँव करे वाला ना चाहीं जे भोजपूरी के कुल्ही विधा के विधाता बने के नीति अपना के चलत बा। मरला प त सभकर करमे बाँची आ गवाई।
(‘सुरसती’ का प्रवेशांक, अक्टूबर, 2001 के संपादकीय)

निराला साहित्य मंदिर, बिजली शहीद, सहसराम, जिला- रोहतास पिन- 821115 (बिहार)

सीमा मिश्र

‘सुरसती’ के संपादक डॉ. नंदकिशोर तिवारी

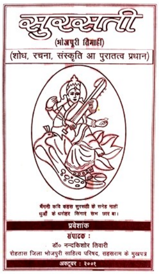

पुस्तक का आकार में अउर एकदम सामान्य कलेवर में लगभग 34 पृष्ठ का ‘सुरसती’ के अनुमान त एगो साधारण पत्रिका का रूप में कइल जा सकत बा बाकिर तथ्य एकरा से भिन्न बा। भाषा आ साहित्य से संबंधित बहुमूल्य सामग्री आ अपना संपादन कला का कारन बहुत कम समय में भोजपुरी पत्रिका 'सुरसती' प्रतिष्ठित हो गइलि। डॉ. नंदकिशोर तिवारी का संपादन में ‘सुरसती' के प्रवेशांक अक्तूबर, 2001 में निकलल, जवन लगभग 23 बरिस तक अनवरत निकलत रहल। निस्संदेह, भोजपुरी पत्रकारिता का इतिहास में तिमाही पत्रिका 'सुरसती' एगो कीर्तिमान बिया। संपादक द्वारा उनुकर आपन विद्वत्तापूर्ण संपादकीय, शब्द व्युत्पत्ति आदि गंभीर भाषिक विमर्श आ तत्सम प्रधान बाकिर लोकभाषा का ललित शैली में रचल निबंध आ प्रकाशित अन्य लेखकन के रचनन का आधार पर ई कहल जा सकत बा कि ‘सुरसती’ पत्रिका खाली मनोरंजन के साधन ना, बलुक 'शास्त्र' का रूप में भी प्रतिष्ठित भइलि। एहमें शोध के गंभीरता, अध्यात्म के ऊँचाई आ लोक-जीवन के मिठास मिलत रहल बा।

भाषाई राष्ट्रवाद वाली संपादकीय दृष्टि

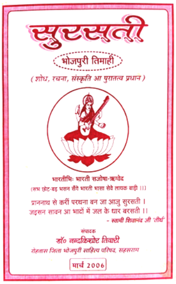

डॉ. नंदकिशोर तिवारी का संपादन के सबसे बड़ विशेषता उनुकर 'भाषाई राष्ट्रवाद' बाटे। ऊ हिंदी आ भोजपुरी का विवाद के कबो उचित ना मनलन। ऊ हमेशा ई मानत रहलन कि हमनी आ हमरा देश खातिर दूनों भाषा आ ओकरा साहित्य अनमोल बाटे। 'सुरसती' के प्रवेशांक (अक्टूबर 2001) का संपादकीय में उनुकर ई तर्कपूर्ण बात बहुत महत्त्व राखतिया-

"भोजपुरी के सेवा हिन्दी के सेवा ह, संसकिरित के सेवा ह। माई के सेवा करे वाला दादी आजी के घर से ना निकाले... भोजपुरी के हटवला प हिन्दी के महल हिल जाई आ हिन्दी ना रही त भोजपुरी के बिचार के समुदरे खाली हो जाई।"

डॉ. तिवारी ऋग्वेद का मंत्र "भारतीभिः भारती सजोषा" के अपना पत्रिका के ध्येय वाक्य बनवलन। एकर अर्थ ई रहे कि सभ छोट-बड़ भाषा सङे मिल के भारती (ग्यान के भाषा) के सेवा करेली। ऊ मातृभाषा के 'अतमा के भाषा' मानत रहन। जनवरी 2003 का अंक में ऊ लिखतारे-

"माई के भासा बोले वाला कबो बेईमान ना हो सके... बड़का से बड़का झुट्ठा माई के समने साँच उगिल देला।"

व्युत्पत्यात्मक विवेचन का सङे भाषा विमर्श

डॉ. नंदकिशोर तिवारी के खाली संपादक कहल उचित ना होई, ऊ एगो बहुत बड़ भाषा-विज्ञानी (Linguist) भी हवन। 'सुरसती' में समय-समय पर ऊ 'शब्द संपदा' आ 'धरोहर' जइसन स्तंभन का माध्यम से भोजपुरी शब्दन के जवन व्युत्पत्यात्मक (Etymological) विश्लेषण कइलन, ऊ आजुओ शोध के विषय बा। प्रवेशांक में 'माँड़' शब्द के विवेचन करत ऊ बतवलन कि कइसे ई संस्कृत के 'मण्ड' से निकलल बा आ कइसे एकर अर्थ बदलत-बदलत भात का पानी ले पहुँच गइल। अइसहीं, ऊ हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जइसन विद्वानन के 'भोजपुरी के धातु आउर क्रिया' आदि शोध लेख प्रकाशित कइके भोजपुरी के व्याकरणिक मजबूती प्रदान कइलन।

लोक-संस्कृति के जीवंत रंग वाला ललित निबंध

जो ई मानल जाउ कि डॉ. तिवारी के ललित निबंध 'सुरसती' के प्राण रहऽ सन त ई कवनो अत्युक्ति ना होई। उनुका निबंध शैली में हजारीप्रसाद द्विवेदी आ विद्यानिवास मिश्र का परंपरा के दर्शन कइल जा सकत बा। सुरसती का मार्च 2006 अंक में उनुकर निबंध 'होलरी हमरा गाँव के' आ जुलाई 2004 के 'एथुआ' में लोक-तत्व के जवन गहराई लउकतिया, ऊ सचहूँ दुर्लभ बा। अपना याद का चर्चा का क्रम में समाज का विसंगतियन पर करारा चोट कइल केहूँ डॉ. तिवारी से सीखे। लोक-जीवन का प्रतीकन के माध्यम से दार्शनिक बात कहल डॉ. तिवारी के अप्रतिम विशेषता बा।

बाजारवाद आ पत्रकारिता के नैतिकता पर चोट

आजु जबकि बाजारीकरण से मुक्ति के बारे में केहूँ सोचियो नइखे सकत, डॉ. तिवारी का संपादकीय के साहस के दस्तावेज मानल जा सकत बा। अप्रैल-जून 2010 का संपादकीय 'गाया तिन पाया नहीं' में ऊ लिखतारन-

"परचार आ विग्यापन से सिरिफ सउदा के माल बिका सकेला...

अखबार में नाँव छप जा सकेला, लेकिन ऊ अखबार लइकन के दस्त साफ करे के कामे आई, अलमीरा में ध के पुजाई ना।"

उनुकर मान्यता बा कि सच्चा साहित्यकार गुफा में समा के साधना करेला, टीवी चैनलन पर शोर ना मचावे। ऊ राजनीतिज्ञन पर भी कठोर तंज कसे से पीछे ना हटलन।

मार्च, 2006 में ऊ लिखलन— "राजनीतिग्यन के आँख में पानी ना होखे ऊ लोग कानी आँख से सभ चीझ के देखेला।"

साहित्य का विविध विधन का सङे पुरातत्व के भी संरक्षण

एहमें कवनो संदेह नइखे कि 'सुरसती' का माध्यम से डॉ. तिवारी द्वारा साहित्य का अनेक विधन के संरक्षण मिलल बा। 'सुरसती' के गजल विशेषांक (जनवरी 2007) ई साबित करे खातिर काफी बा कि भोजपुरी गजल में ऊ 'बाँकपन' आ 'तेवर' बाटे, जवन उर्दू-फारसी के बराबरी कर सके में सक्षम बा। तिवारी जी के तर्क बाटे कि भोजपुरी 'गीत-प्रधान' भाषा ह, एहसे एमें गजल खातिर बहुत उपजाऊ जमीन बा। एकरा सङे-सङे 'पुरातत्व' स्तंभ का माध्यम से डॉ. तिवारी रोहतास आ भोजपुर क्षेत्र का ऐतिहासिक धरोहरन के जानकारी देले बाड़न, ओकरा से सुरसती के स्वरूप 'इंसाइक्लोपीडिया' नियन हो गइल बा।

अध्यात्म आ आध्यात्मिक आचरण

डॉ. नंदकिशोर तिवारी स्वामी शिवानंदजी 'तीर्थ' के अनन्य भक्त हईं। 'सुरसती' का हर अंक में ‘अध्यात्म’ स्तंभ का तहत ई बात स्थापित करे के प्रयत्न लइकता कि साहित्य के लक्ष्य 'चित्त-शुद्धि' बा। उनुका संपादकीय दृष्टि में 'सेवक' आ 'सेवकाई' के बहुत महत्त्व लउकत बा। उनुकर कहनाम बा कि साहित्य का क्षेत्र में 'व्यापारी' ना, बलुक 'सेवक' के जरूरत बा, जे 'नाम' ना बल्कि 'राम' (आदर्श) के खोज करे।

समग्रतः डॉ. नंदकिशोर तिवारी द्वारा संपादित आ प्रकाशित भोजपुरी तिमाही पत्रिका 'सुरसती' खाली एगो पत्रिका ना हटे, ई भोजपुरी का 'अस्मिता' के रक्षक हटे। संपादक का लेखनी में एगो अइसन ईमानदारी के दर्शन होता, जवन अपना पाठक के ज्ञान से ज्यादा 'संस्कार' देबे के कोशिश करत लउकत बा। उनुकर ललित निबंध, भाषाई विमर्श आ निडर संपादकीय आजुओ भोजपुरी पत्रकारिता खातिर मानक बाटे। 'सुरसती' के पन्ना-पन्ना तिवारी जी का ओह संकल्प के गवाह बा, जवना में ऊ कहतारे- "साहित्य के महाप्रसाद बाँटत घरी, रचनाकार के अपना आचरण के सुद्ध राखे के परी।" डॉ. तिवारी के पत्रकारिता भोजपुरी के 'क्लासिक' ऊँचाई देबेवाली ऊ साधना हटे, जवना के कवनो इनाम भा नाम के लालच नइखे। भोजपुरी के सही अर्थ में 'ग्यान-विग्यान के भासा' बना देबे में उनुका पत्रकारिता के कवनो जोड़ नइखे।

सह संपादक, सँझवत।

डॉ. शिववंश पाण्डेय

भगवान नंदकिशोर जी के उमर देस

फूफा के गाँव बेरूपहीं। 1944 का साल देस में स्वतंत्रता के पावे खातिर देसवासियन में खासा उत्साह रहल। फूफा के गाँव त छोटे गो रहे वाकिर ऊंहाँ के लोगन में कांग्रेस पार्टी खातिर उत्साह रहे।

गाँव में एगो बड़का पीपर के पेड़ रहे जहाँ पर सुबह-साम गाँव के समझदार कहाए वाला लोगन के बाल-बच्चा सुबह-साम खेले खातिर आवत रहन। ओही में एगो लगभग चार-पाँच बरस के लइका रोज आवत रहे अउर छोट लइकन के गिनती गिनवावत रहे। ओह घड़ी एतना तो जरूर लागत रहे कि ई लइका आगे चलके नाम कमाई। हम ओहिजा अपना फूफा के इहाँ रह के आठवाँ किलास में पढ़त रहीं अउर ऊ लइका पीपर तर चले वाला स्कूल में कभी कुर्ता पहिन के अउर कभी अधलंगटे रोज-रोज ऊहाँ आ जात रहे। हों घड़ी पता न रहे कि ई लइका आगे चलके हिन्दी, संस्कृत, पाली-प्राकृत के अगाध पण्डित होई अउर साहित्य जगत में डॉ. नंदकिशोर तिवारी के नाम से मसहूर होई।

लगभग 15-20 बरस के अंतराल के बाद हम जब शांति प्रसाद जैन कॉलेज, सासाराम में अध्यापक होके गइलीं त अचानक हमार नजर एक तेज-तरार विद्यार्थी के ओर गइल त अचानक हमरा मुँह से निकल गइल- अरेऽ ई त नंदकिसोरवा हऽ। हम सरकारी नौकरी में चल गइलीं अउर नंदकिशोर कूदत फाँदत वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के आचार्य हो गइले अउर एक बार उनका से सासाराम में भेंट भइल त 'भइया कहके ऊ हमरा से लिपट गइलें' अउर बार-बार आवत-जात रहे के निहोरा करे लगलन। जे एक बार भइया कहले ओ भइया के मरयादा के निर्वाह आज तक ऊ कर रहल बाड़न। हम उनकी ई भलाई के काम कभी न भूलम कि ऊ हमरा के बड़ा पढ़ा-लिखा के पी-एच.डी. करा देलन। नंदकिशोर जी आज आचार्य नंदकिशोर के रूप में साहित्य जगत में

मसहूर भइल बाड़े अउर हिन्दी, भोजपुरी, संस्कृत के बड़ विद्वान के रूप में चर्चित भइलें। ऊ आज वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के आचार्य पद से निवृत्त होके अपना निवास (निराला निकेतन) में अपने अधीन काम कर रहल सोधार्थियन के पाठ पढ़ा रहल बाड़न आ हिन्दी त्रिमासिक पत्रिका 'प्रत्याभिता' अउर भोजपुरी त्रिमासिक 'सुरसती' के अलावे कई पत्र-पत्रिकन के संपादन कर रहल बाड़न। उमर के साथ शरीर के अंग सब भले सिथिल पड़ रहल होखे बाकिर उनकर साहित्य सेवा के उत्साह अउर उमंग आज भी देखते बनत हऽ। आज भी भगतन के भीड़ चित्रकूट के घाट पर जस के तस लगत रहल बा अउर भगत लोगन के भक्ति के परिणाम ह कि उनकर सम्मान में इ ग्रंथ प्रकासित हो रहल बा।

नंदकिशोर जी के हिन्दी अउर भोजपुरी में बड़-बड़ काम करे खातिर बहुत जगहन से इनाम पारितोषिक मिलल बा। संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार भास के सब संस्कृत नाटकन के भोजपुरी में अनुवाद कर दिल्ली विश्वविद्यालय से नंदकिशोर जी के कइयो गो इनाम प्राप्त भइल बा, जेकर भोजपुरी जगत में बड़ नाम भइल।

भगवान नंदकिशोर जी के उमर देस अउर उनका के पूरा-पूरा स्वस्थ बनवले रखस।

- पूर्व उपाध्यक्ष एवं निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना तथा प्रधानमंत्री, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कदमकुआँ, पटना

संस्मरण

श्रीभगवान पाण्डेय

साधक-सिद्ध-सुजान : प्रो. नन्दकिशोर तिवारी

सुभाषितानि में एगो संस्कृत के श्लोक बहुत पहिले पढले रहनी-
सतां हि दर्शनं पुण्यं तीर्थ भुताश्च सज्जनाः
कालेन फलते तीर्थम् सद्यः सज्जन संगतिः
एकर अर्थ कइल गइल बा कि साधु पुरुष के दर्शन कइला से ही पुण्य फल के प्राप्ति हो जाला।काहें कि सज्जन(साधु) पुरुष साक्षात तीर्थ के समान होखेलन। तीर्थ में गइला के भा
तीर्थ सेवन कइला के फल त अपना समय पर मिलेला।बाकिर सज्जन भा साधु पुरुष के संगति के फल त तुरंत ही मिल जाला। बाकिर अइसन सज्जन व्यक्ति के खोजल-पहचानल भा ओकरा से मिलल सहज भी ना होला। बिना ईश्वर के कृपा के सज्जन व्यक्ति से मिलल ना हो सकेला- "बिनु हरि कृपा मिलहि नही संता"। काहें कि संत से मिलला के बाद तीर्थ के फल के सङ्गे-सङ्गे "संत मिले फल चार"के प्राप्ति भी हो जाला।

अइसन सुयोग, ईश्वर के कृपा से मिलेला।उहें के प्रेरणा से सुयोग बनेला। अइसने कुछ भइल 2018 में हमरा सङे। जब हमार गीत संग्रह "किसिम-किसिम के फूल" प्रकाशित हो के आइल तब वरिष्ठ साहित्यकार-उपन्यासकार डॉ अरुण मोहन 'भारवि' जी एकर लोकार्पण 'भोजपुरी साहित्य मंडल' के तरफ से करे खातिर योजना बना के हमरा के बतवनी कि मंडल के अध्यक्ष स्मृतिशेष अनिल कुमार त्रिवेदी जी के इच्छा के अनुरूप लोकार्पण के योजना बन गइल बा। पुस्तक के लोकार्पण खातिर गुरुदेव प्रो. नन्दकिशोर तिवारी जी के आमंत्रित करे खातिर सासाराम चले के बा। हम डॉ भारवि आ स्मृतिशेष अनिल कुमार त्रिवेदी के एह उदारता के प्रति भावविह्वल हो गइनी। एकरा के अपना ऊपर ईश्वर के कृपा मान के अपना भाग्य के सराहे लगनी। गुरुवर प्रो. नन्दकिशोर तिवारी जी से मिले के इच्छा बहुत दिन से करत रहे, लेकिन नोकरी के बाझ के चलते सपरल काम न हो सकल। आजु ई सुयोग डॉ. भारवि जी के

चलते मिलल।

फोन पर ही भारवि जी उहाँ का सहमति से लोकार्पण के कार्यक्रम 25 फरवरी 2018 के तय कइले रहीं। फोन पर उहाँ से सहमति ले लिहल गइल रहे लेकिन मिले के उत्सुकता का चलते आ शिष्टाचार के निर्वहन खातिर हमनी के फरवरी के पहिलका सप्ताह में सासाराम गइनी जा।

रास्ता भर हमरा मन में तरह-तरह के भाव आवत जात रहे।

"चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं।"

हमनी के लगभग 1 बजे सासाराम बिजली शहीद पहुँच गइनी जा। भारवि जी त अपना शोध का समय से ही एह तीर्थ क्षेत्र से परिचित रहनी। उहाँ के पीछे घर के प्रांगण से होत अंदर से सीढ़ी चढ़त ऊपर पहुँचनी जा। ऊपर में एगो बड़ कमरा मिलल, जवना में किताबन के भंडार रहे आ ओह कमरा के दरवाजा बाहर छत पर खुलत रहे। छत पर चौकी आ चौकी पर एगो पतला बिस्तर पर धोती आ फुल स्वेटर पहिनले बइठल रहनीं प्रो. नन्दकिशोर तिवारी जी। अगल बगल में दु-तीन गो किताब बिखरल रहे, एगो किताब हाथ मे रहे। तकिया हाथ से दबवले ओठँघल रहनी। बगल में छोट टेबुल पर ताँबा के लोटा आ एगो गिलास राखल रहे। हमनी के आहट मिलते उहाँ के उठ के बइठत अहगरि के बोलनी- अरे आओ भारवि! यहाँ आ जाओ। उहाँ के आंतरिक प्रसन्नता उहाँ के चेहरा पर साफ झलकत रहे। उहाँ के खुशी के ठेकान ना रहे। उहाँ के देखते हमरा तुलसी दास जी के एगो दोहा चरितार्थ होखत मिलल-

"मुख देखत पातक झरे परसत करम बिलाहिं
वचन सुनत मन मोह गत, पूरब भाग मिलाहिं।"

फेर का! चरण स्पर्श करते उहाँ के हाथ हमनी के माथ पर गइल। धन्य हो गइनी हम। उहाँ के गला लगावत अपना बगल में बइठा लिहनी। कहो भारवि कैसे हो? किस साधन से आए? पूछत जात रहनी आ निहारत भी रहलीं जइसे बहरवाँसू लड़िका के परदेश से लवटला पर महतारी बाप निहारेला। वात्सल्य बरिसत रहे। हम त भींजत रहनी आ निहारत रहनी। कुछ पल के बाद सहज दशा में आ के भारवि जी हमार परिचय दिहनी आ कहनी कि इहाँके श्रीभगवान पाण्डेय निरास हईं। इहें के गीत संकलन के लोकार्पण में रउरा बक्सर चले के बा। अतना सुनते हम आपन गीत संकलन 'किसिम किसिम के फूल' उहाँका हाथ में दे के प्रणाम कइनी। उहाँके संकलन के कवर पेज से लेके अंदर के कुछ पन्ना पलटत कहत गइनी- वाह, बहुत बढ़िया लागत बा। अरे! भूमिका किरण जी लिखले बानी! वाह! आगे देख के कहनी- अरे! भारवि, तुमने भी लिखा है। बहुत बढ़िया। भारवि जी के लिखला पर सरसरी नजर दउरावे लगनी। एही बीच मे भारवि जी सफाई देबे लगनी कि गुरुजी! हम अपना अकिल बुद्धि के हिसाब से निरास जी के रचनन के देख के इहाँ के महाकवि तक लिखले बानी। एकरा पर निरास जी के भी आपत्ति रहे आ अउरियो लोगन के आपत्ति हो सकेला। बाकिर हमरा पासे ई लिखे के आधार आ तर्क बा। एकरा पर उहाँ के कहनी कि वाह! बहुत बढ़िया। हमरा पासे जब आधार बा त हम काहें न कहबि भा लिखबि। अब हमरा बुझाइल कि जवना शिष्य पर

गुरु मेहरबान होई ओकर चेला काहें ना पहलवान होई। ओकरा बाद त बतकही शुरू करे लगनीं। आज उ सभ बात याद नइखे आवत। एही बीच में हमनी के पानी जल पियनीं जा कुछ देर के बाद चाय भी आइल। उहाँ किहें शोधार्थी विद्यार्थी एगो पहिले से ही रहे। एही बीच मे एगो शोधार्थी अउर आ गइलन। बतकही उहाँ के शुरू रहे कवन शब्द कइसे आइल, नया शब्द कइसे बन सकेला जइसन विषयन से लेके कहाँ कहाँ से कवन आ कइसन पत्रिका निकलत बा, भा के का लिखले बा- एकरा पर चर्चा करत उहाँके तपाक से पूछ दिहनी- भारवि तुम अभी क्या कर रहे हो? इहाँ के भी अपना योजना के बतावे लगनीं। एकरा पर उहाँके कहे लगनी कि भोजपुरी के बढ़न्ती खातिर अलग-अलग विधा पर काम होखे। जैसे संस्मरण, अनुवाद, यात्रा वृतांत के साथे-साथे मानकीकरण के प्रयास कइल जरूरी बा। अइसे काम ना चली। भोजपुरी के लेके उहाँ के चिंता देखि के बुझात रहे जइसे घर के गरीबी हटा के जल्दी से जल्दी भोजपुरी के साधन संपन्न क के एकरा के अभिजात वर्ग के अगहर बना के ही चैन के साँस लेबे के बा। हमार महतारी से नीमन केकर महतारी बिया। एकर पीढ़ा सबसे ऊँच करे के बा। एकरे से हमनी के भी माथा ऊँच होई।

हमरा खातिर एह बतकही के गंभीरता नया रहे। अइसन बात करेवाला ढेर लोग चाह-पान के दोकान प मिलेला बाकिर सपरि के केहू से कवनो काम करवावे वाला प्रो. नन्दकिशोर तिवारी जी अस आदमी ही हो सकींले। उहाँके हमरो से कहनी कि रउरो गीत-कविता के सङे-सङे यात्रा वृतांत, ललित निबंध, संस्मरण लिखीं, तबे भोजपुरी के गरीबी मिटी। भोजपुरी में अपार संभावना बा। एकरा पासे का नइखे? अतना समृद्ध शब्दकोश कवना भाषा में बा? एही बीच मे कवनो कवनो बात पर उहाँ के ठठा के हँसल भुलात नइखे।

अचानके उहाँ के आवाज लगवनी- अरे देख लोग भाई, बगसर से भारवि आइल बाड़न आ निरासो जी आइल बा लोग, कुछ ले आव लोग। भारवि जी त हमार परिचय देत ई कहि देले रहनी कि गुरु जी निरास जी सुकंठ गीतकार हईं। हम चाहबि कि रउरा इहाँ से कुछ सुनीं। ई सुनते उहाँ के कहनी कि सुनबे करबि। आराम से सुनल जाई। पहिले कुछ अल्पाहार हो जाय। शोधार्थी लोगन से भी कहनी कि नीचे से जब संकेत आवे त ध्यान रखिह लोग। सुनाईं निरास जी। हम अलग-अलग भाव के रचना सुनावे शुरू कइनी। उहाँ के आँख बन क के सुने लगनीं। हम गीत सुनावत रहनीं आ उहाँ के चेहरा के पढ़े के कोशिश करत रहनी। गीत के अंतरा पर उहाँ के शाबाशी हमरा उत्साह के बढ़ावत रहे। हमरा गोष्ठी भा कवि सम्मेलन के मंच पर सुनावे के अवसर ढेर मिलल बा, ताली भी ढेर मिलल बा बाकिर जवन संतोष-सुख आ तृप्ति के बोध इहाँ के सुना के मिलल ऊ कतहूँ ना मिलल। सोना भी कसौटी के पहचानेला। जहाँ जरूरत बा, ओहिजा हमरा गीत पर बतकही भी कइनी। हमरा एगो गीत के बंद में हंस आ हंसिनी के बीच नदी किनारे आँख के संवाद के उल्लेख बा।

"टुकुर टुकुर हंस के हँसीनिया निहारे,
अँखियन में बात भइल नदिया किनारे।।

पल में सातों जनम के करार भइल गाँठ पारि के।"

पूरा गीत के सुनि के खूब सरहनी बाकि प्रश्न भी खड़ा कइनी। देखऽ भारवि, हंस त झील के किनारे पावल जाला नदी के किनारे त एकर जोड़ा ना रहे, बाकिर एह गीत में ई आइल बा। ई दोष भी मानल जा सकेला। फेर उहाँ के कहाँ-कहाँ के रचनन के उल्लेख करत एक जगह पहुँच के कहनी कि ना एह गीत में नदी के किनारे के जवन प्रयोग भइल बा ऊ सही बा। कवनो बेजाँइ नइखे।

अइसन गंभीर मनीषी के एह गीत पर अतना गहीर दृष्टि पड़ल देखि के हमरा भक्क मार देलस। ई हमरा कवि जीवन के पहिलका अवसर रहे, जहाँ हमरा रचना के आकलन आ उपचार होत रहे। एकरा पहिले सुनेवाला ढेर विद्वान लोग मिलल बाकिर वाहवाही के छोड़ के दोष के उल्लेख केहू ना कइल, ए से हम सुना के भी संतुष्ट ना होत रहनी। ई पहिलका बेर रहे कि हमरा तृप्ति मिलल रहे। हालाँकि आगे उहाँ के एह प्रयोग के सही भी बतवनी आ कहनी कि एकरा के हटावे के नइखे। ई सुनि के हमार उत्साह ढेर बढ़ल।

कहे के त ई बात बहुत छोट बा, पढ़ेवाला एकरा के आपन बखान कइल भी पढ़ सकेला बाकिर हमरा ई बुझा गइल कि रचनाकार के रचना क्रम में पहिले आलोचक बन जाए के चाहीं। हमरा "सद्यः सज्जन संगतिः" के फल मिल गइल। हमार नजरिया बदलल। उहाँका आभा मण्डल के प्रभाव आज भी हम महसूस करींले। जइसे कवनो संत के कुटिया में पहुँच के कवनो भटकल राही के राह मिल जाला, ओइसही हमरा जिज्ञासु आ पिपासु मन के तृप्ति मिलल।

ओकरा बाद त उहाँ के दर्शन लोकार्पण समारोह में भी भइल, जहाँ पर उहाँ के सादगी, सहजता आ संयमित जीवन से परिचय भइल। प्रो. नन्दकिशोर तिवारी के व्यक्तित्व के प्रभाव अइसन ना रहे कि देखनी-मिलनी आ भुलाइ गइनी। हमरा खातिर ई व्यक्तित्व प्रेरणा के स्रोत बन गइल बा। सभके जीवन में केहू न केहू अइसन मिलेला। ई कवनो बनावटी बात नइखे।

हम सोचे लगनीं- का अइसनो लोग आज बाड़े? जे दोसरा के जतने प्यास मिटा रहल बाड़े ओतने उनुकर प्यास खुद भी बढ़त जा रहल बा। दोसरा के तृप्त क के, जेकरा तृप्ति मिलत होखे, एकरा पर सोचत-सोचत हम एगो निष्कर्ष पर पहुँचनी कि ई कवनो साधक के ही गुण हो सकेला, काहेंकि साधक के साधना जतने बढ़ेला ओतने ओकर प्यास भी बढ़त जाला। साधक सभे ना होला। संवेदनशील मन ही साधक होला। ओकर साधना भले ओकरा के तृप्ति देत होखे बाकिर ओकर साधना के फल लोक खातिर ही हितकारी होला- तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।

अइसन साधक के साधना, संपन्नता आ विलासिता में पैदा ना होला, आ ना त ओकर आश्रय ही लेला। बल्कि जब संवेदनशील मन, जीवन आ परिवेश में घटल घटना के प्रभाव से प्रेरित हो के अपना अनुभूति के अर्थ देबे के बेचैनी से भर जाला तबे साधना के अंकुर फूटेला, जवन अनुकूल भा प्रतिकूल परिस्थिति में भी बढ़त जाला आ धीरे-धीरे बरगद के रूप लेके संतप्त लोक के शीतलता आ विश्रांति देला। अइसन बरगद

के नाम ही प्रो. नन्दकिशोर तिवारी ह।

एही बरगद के छाँह में परिवेश के धूप-संताप के सहत हताशा से थाकल खेदाइल कतने राही अइले आ स्नेहिल शीतलता पाके नया ऊर्जा से अपना मंजिल के सफर तय कइले, एकर गिनती हमरा नइखे। हमरा जानकारी में तीन गो अइसन राही (डॉ. अरुण मोहन भारवि, डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल आ डॉ. मनोज तिवारी) मिलले, जेकर वृतांत सुन के एह वट वृक्ष के महिमा के पता चलल। ई वट वृक्ष अपना छाँह में आवेवाला के मानसिक शांति त देबे करेला सङे-सङे शारीरिक व्याधि के भी हरण करेला। एकर पतई, छाल, दूध यानि हर अंग उपयोगी होला।

सज्जन आ सुजान के इहे त लक्षण होला कि ऊ लोक मंगल खातिर जीवन के सर्वस्व निछावर करे में भी संकोच ना करेला। ई काहें ना होखी जेकर जनम खातिर यज्ञ के आयोजन भइल, जवना यज्ञ के फल से ही जगनारायन के रूप में यज्ञनारायण ही जनम लिहले, जवन आगे चल के नन्दकिशोर के रूप में ख्याति पवले। यज्ञ के फल से त लोक मंगल होइबे करेला। आज तिवारी जी लोकमंगल के भावना से ही सृजन कार्य मे लागल बानी। इहाँके सृजन साधना निरंतर जारी बा। इहाँके रोपल संभावना के बीज जाहाँ-ताहाँ फलदार पेड़ बन के लोकचिंतन के पुष्ट करे के काम कर रहल बा।

अइसन व्यक्तित्व के स्वामी केहू अइसहीं ना बनेला। अइसन व्यक्तित्व के निर्माण खातिर ओकर उचित पालन-पोषण आ परिवेश जरूरी होला। इहाँके परवरिश आ परिवेश नितांत प्रतिकूल रहल बा बाकिर उच्च संस्कार के सिंचन से प्रतिकूलता के भी अनुकूल बना लेबे के कला इहाँ के व्यक्तित्व से झलके ला। जइसे बरगद के बीज चट्टान के अंतरा से भी पोषण लेके विकसित हो जाला। संघर्ष से गठित व्यक्तित्व ही लोक के संघर्ष में विजय दिलावेला।

अइसन विराट व्यक्तित्व के एगो आलेख में समेटल संभव नइखे। अइसन व्यक्तित्व त शोध प्रबंध के विषय होला। ई त एगो परिचयात्मक आलेख बा उहो हम जतना उहाँ के समझ पावनी ओकरा आधार पर। जहाँ-तहाँ से छिटपुट आलेख के पढ़ला के बाद आ बहुत कम समय के दर्शन लाभ के आधार पर जवन प्रो. नन्दकिशोर तिवारी जी के बारे में जान पवनी, ओकरा आधार पर परिचयात्मक आलेख बा। क्रमवार एह व्यक्तित्व पर लिखे खातिर हम उहाँ के पड़ताल करबि।

जवन पीढ़ी अपना पुरुखन के अतीत से अपरिचित रहेले उ अपना भविष्य के निर्धारित ना कर पावेले। जवन पीढ़ी अपना पुरुखन के सदा याद राखेले ओकरा पर देवतागण भी प्रसन्न रहेले।

"पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः।"

हमनी के सौभाग्य बा कि हमनी के ऊपर विशाल वट वृक्ष के छाया बा, एकरा से शीतलता आ पोषण लेके लोकमंगल के भावना से अपना साधना के बढ़ावे के चाहीं। शिष्य के इहे काम ह कि गुरु के आचरण से सीख के ओकरा आदर्श के लोक में जीवित रखे।

शिवगोविंदायतन, रामबाग, बक्सर।

डॉ. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय

गुरु गोविंद सम कोऊ नाहीं, दोसर एहि जग माहीं

जब-जब मन बेचैन हो जाला तब तब गुरु के स्मरण कइला से बेचैनी दूर हो जाला। अइसने हमार गुरुदेव जी डॉ नंदकिशोर तिवारी जी बानीं। एकदम बम-भोला। आपन शिष्यन पर कृपा बरसावे वाला। निराला जइसन निर्मल आ फक्कड़ मस्त मौला। मकान के नाम रखले बानीं 'निराला साहित्य मंदिर'। स्वाभिमान कूट कूट के भरल बा। बिलकुल शांत चित्त। मौका प सात्विक क्रोध भी। निरहंकार जीवन जीये में विश्वास बा। हमरा मानस पटल पर असंख्य संस्मरण गुरुदेव के बारे में बा। सबकर उल्लेख एके साथ कइल कवनो जरुरी नइखे। खंड खंड में लिखत लिखत एक दिन अपनहीं अखंड हो जाई। गुरु के आचरण आ व्यक्तित्व के प्रभाव शिष्य पर साफ साफ दिखाई देला। ओही तरह से आचरण आ व्यवहार करे के प्रवृत्ति शिष्य में विकसित हो के विस्तार पा जाला, जवन गुरु-शिष्य परंपरा बन जाला। एही से कहल जाला- गुरु के वट वृक्ष के समान मानल जाला। जइसे असंख्य डालियन के फैलाव से बहुत दूर तक छाया रहेला, जेकरा नीचे अनेक जीव-जंतु, पशु-पक्षी आ थकल हारल अदिमियो के राहत मिलला। ओसहीं गुरु के असंख्य लमहर बाँह के आशीर्वाद से शिष्य के जीवन में शिष्टाचार आ शांति प्रधान रूप से आपन महत्वपूर्ण भूमिका निभावेला। गुरुदेव के रहन-सहन आ खान-पान अति साधारण, परिवार में प्रेम रखेवाला, बचवन के हर तरह से बचाव करे के भावना से ओतप्रोत। शरीर प सामान्य वस्त्र- धोती कुर्ता जाकिट आ सिर प टोपी, कान्ह में झोरा आ पैर में नागरा जूता, कान्ही प चादर अउरी जुबान से सरस्वती के रस सरस प्रवाह, विद्वता से भरपूर। सगरो बिछलहट हो जाला। विद्यालय, महाविद्यालय में प्रवचन आ भाषण खातिर बोलावा प बोलावा आवेला। गीत संगीत से काफी जुड़ाव आ लगाव। हरदम गुनगुनात रहे के स्वभाव। ऊ निराला जी के कविता चाहे सूरदास जी के पद, चाहे गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरितमानस के पंक्ति, चाहे

महादेवी वर्मा जी के गीत चाहे कवनो तरह के भजन होखे। तनिको फर्क नइखे पड़े के। मस्ती के साथ गुनगुनात रहे के बा। ई सब एनेओने के बात ना ह। सब के सब गुरुदेव के सान्निध्य के संस्मरण ह, जवन हमार संस्कार में शामिल हो गइल बा। उहे सब कुछ रउआ सब से साझा कर रहल बानीं।

एक बार आरा से सासाराम गुरुदेव के पास आपन एगो समस्या के साथ गइनीं। गुरुदेव के खासियत बा कि हर समस्या के समाधान चुटकी भर में कर दीहींना। हमार पूरा भरोसा रहे। साँचहूँ उहे भइल जवन हम सोचले रहीं। ओह दिन लवटे के ना रहे। रात्रि विश्राम गुरु जी के आवास प भइल। कृपा प्राप्त हो गइल। मन प्रसन्न रहे। एकरा बाद पारिवारिक हाल चाल शुरु भइल। हमार दोसरकी बेटी के विवाह करे के रहे। हमार रिश्तेदार डॉ बी डी पाण्डेय जी एगो लड़िका बतवले रहीं जे गुरुदेव के ससुराल पक्ष से रिश्तेदार रहीं। हम सब कुछ बतवलीं। गुरुदेव जी आपन स्तर से सासाराम में कुछ लोग से जानकारी लीहलीं। हमनी के सुबह बांदू जाये के योजना बन गइल। सासाराम से बस पकड़ के रोहतास गढ़ किला पहुँच गइलीं जा। ओहिजा लगभग एक किलोमीटर दूरी प स्थित बांदू गाँव जाये के रहे। बतियावत धीरे धीरे पंद्रह से बीस मिनट में देवनारायण पाण्डेय जी के घर पर हाजिर हो गइनीं जा। मार्च के महीना रहे। धूप घाम के असर बुझाय लागल रहे। दिन के करीब ग्यारह बजत रहे। सौंफ के शरबत पीये के मिलल। मन तृप्त हो गइल। दालान में पंखा आ कूलर लागल रहे। ओह समय कूलर के कवनो जरूरत ना रहे। गुरुदेव के चलते आवभगत खूब बढ़िया से भइल जवन हमरा बुझाइल। खैर कूलर त ना बाकी चलत रहे आ ओकर हवा नीमनो लागत रहे। बारह साढ़े बारह बजे हमनी के बराबर के हलुआ खाये के आ गइल। ओकरा संगे नीमकी आ मरचाई के अँचारो रहे। खूब स्वादिष्ट रहे। पसंद से सराह सराह के खइनीं जा। बीच बीच में गुरुदेव पाण्डेय जी से मजाको करत रहीं। हम त अगुआई में गइल रहीं एह से बहुत कम बोलत रहीं बाकी ऊहाँ लोगन के बतकही के आनंद त लेते रहीं। हलुआ खा के आराम करे लगनीं जा। एही बीच हमार परिचय पाण्डेय जी से गुरुदेव जी करवा देले रहीं। जवन हमार पूछे के रहे हम पाण्डेय जी जी से समझ-बूझ लेनीं। आपन ढंग से गुरुदेव जी पूछताछ क के संतुष्ट हो गइनीं। बांदू गाँव सोन के किनारे बसल बा। ब्राह्मण के एगो बड़ गाँव ह। पाण्डेय जी ई कह के गइनीं कि सोन में नहा के हम तुरंत आवत बानीं। सोन भगवान के दर्शन करे के मन होखे त रउओ सभे चल सकत बानीं। गुरुदेव जी जब तैयार हो गइनीं त हमरा अब का करे के रहे। पाँच मिनट में पहुँच गइनीं जा। पाण्डेय जी सोन नद में बनल भगवान शिव के मंदिर में दर्शन करवइनीं। जाँघ भर पानी लाँघ के मंदिर तक गइल रहीं जा। ओहिजा के दृश्य नीमन लागल। आधा घंटा में घरे आ गइनीं जा। ओह समय दू बज के बीस मिनट होत रहे। घर से खबर आइल कि भोजन तैयार बा। गुरुदेव जी कहलीं उपध्या जी का करे के। हम कहनीं भूख त नइखे बाकी राउर जवन इच्छा होई उहे होई। पाण्डेय जी खाये खातिर दुबारा खबर भेजवइनीं। गुरु जी कहनीं- चल हो उपध्या जी। थोरिका थोरिका खा लिआई। घरे गइनीं जा। पाण्डेय जी के परिवार में पति-पत्नी आ एगो दाई

अउरी दु तीन गो नौकर-चाकर। घर बहुत दूर में रहे। हमार लागल कि आंगन एक डेढ़ कट्ठा से कम नइखे। ओही में आधा से अधिका में लाल लाल पाकल मिरचाई सूखे खातिर पसारल रहे। पाण्डेय जी कहनीं मरचाई के खेती खूब होला।

भोजन के आसन प बइठल रहीं जा। बासमती चाउर के गमगमात भात, रहर के दाल ऊपर से एक एक कटोरी घीव, तरकारी, भुजिया, चोखा, चटनी, पापड़, तीन चार किसिम के अँचार, छनौरी दनौरी से भरपूर। भोजन बहुत स्वादिष्ट। गुरु जी कहनीं कि फेरु बोलावे के मन बा नूँ। पाण्डेय जी खूब ठठा के हँसनीं आ हाथ जोड़ के विनती कइनीं बेर बेर आवे के बा। हमार भाग्य बा कि राउर चरन से आँगन दुआर पवित्र हो जाई।

भोजन के बाद पाँच मिनट आराम के बाद चले खातिर निकलनीं जा। ओह समय तीन बजत रहे। पाण्डेय जी संगहीं बस स्टैंड तक अइनीं आ हमनी के बस में बइठा के तब लवटलीं। कुछ देर बाद कंडक्टर टिकट बुक करत रहे। हमहूँ पूछलीं कतना दीहीं। कंडक्टर कहलन रउआ दू अदिमी पाण्डेय जी के नूँ हईं। कहनीं हँ। ठीक बा। हो गइल बा। हमनीं के साढ़े पाँच बजे सासाराम बस स्टैंड में पहुँच गइनीं जा। ओहिजा से तुरंत गुरु जी के आवास प चल गइनीं जा। दुसरका रात्रि विश्राम ओहीजे भइल। गुरुदेव जी बातचीत के क्रम में बतलवनीं कि सब कुछ ठीक बा एकरा बाद एगो कमी बा। जवन तोहार कवनो आपत्ति ना होई त विआह तय हो जाई। तिलक दहेज के बहुत कुछ झमेला ना होई। ओह परिवार में हमार बात केहू ना उठाई। एगो जवन कमी बा ऊ ई कि पाण्डेय जी के आदत दवाई लेबे वाला बा। ओकर कवनो समय तय नइखे। जबे मन करी तबे चाहे जब कतहूँ कवनो संघतिया भेंटा जइहें ओहिजे। ई सब सुन के मन भीतर से घबराये लागल। भविष्य के बारे में सोचे लगनीं। कतहूँ बाँस के कोठ में बाँस फूट जाई त हम का करब।

गुरुदेव जी से हम पूछलीं- का करीं। उहाँ के सलाह देनीं- घरे जा के पत्नी से राय विचार करिह जवन ऊ कहिहें करिह। गुरुदेव जी के ई बात हमरा अच्छा बुझाइल। ऋषि मुनि आ गुरु वाणी में शक्ति समाहित होला। ओकरा के शिरोधार्य कर लेबे के चाहीं। सुझाव में कल्याण के भावना रहेला। बिहने चलत चलत हम गुरुदेव जी से एक बार फेरु पूछलीं- "गुरु जी एह स्थिति में रउआ का करतीं।"

गुरु जी हमरा से इहे कहनीं- "उपध्या जी, हमनी के शादी बिआह घर दुआर, लइका परिवार प खाली ना करीं। ओकरा संगे ओह परिवार के पृष्ठभूमि आ संस्कार भी देखल बहुत ज्यादा जरुरी बा। अइसन हालत में हम कबहीं विआह तय ना करतीं।" गुरु जी के ई हमरा खातिर प्रकारांतर से संदेश रहे। आशीर्वाद रहे जवना में मंगल के भावना सन्निहित रहे। घरे अइनीं। इतिहास भूगोल पत्नी से कहनीं। आपन गुरु जी के अमृत वाणी के बयान कइनीं। पत्नी गुरुदेव जी के विचार से सौ प्रतिशत आपन सहमति जतवली। गुरु जी के सलाह से हमरा बहुत बल मिलल आ हमार काम बिगड़े बिगड़े से बन गइल। देवतुल्य गुरुदेव के पावन चरनन में बारंबार नमस्कार।

पूर्व अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

डॉ. इन्द्र नारायण सिंह

प्रोफेसर नंदकिशोर तिवारी हमार मानसपिता

जिनगी में समय कबो-कबो अइसन चउराहा पर ले आके ठहरा देला, जहाँ ई फैसला लिहल बड़ा मुस्किल हो जाला कि डेग कवना राहे बढ़ावल जाय। तब त आउरो, जब दिमाग में मंजिल के कवनो थाह ठेकाना ना होखे। सभकुछ धुंध कुहेस में धुंधराह!

बीतल आठवाँ दशक के आखिरी बरिसन में हम एगो अइसने चउराहा पर ठहरल रहीं, जहाँ भूतकाल पीछे छूट चुकल रहे आ खाली किंकर्त्तव्यमूढ़ वर्तमान संगे खड़ा रहे। इन्टरमीडिएट सेकेन्ड क्लास से पास कके बाबूजी आ घरे के सभका इच्छा के खिलाफ सासाराम के शांतिप्रसाद जैन कॉलेज में सत्र 1979-81 के बी.ए. में एडमिट हो गइल रहीं। घर में सभे हमरा से नाराज रहे। बात-बात में लोग टिहुक देसु "सभे पढ़े खातिर बनारस-पटना जाला, आ ई साहेब बाड़न कि बनारस से लवटिके घरे पढ़े अइले हाँ।" बनारस के उदयप्रताप कॉलेज में बी. कॉम. के पहिला साल बेकार गइल रहे। जैन कॉलेज में आना-जाना सुरू हो गइल रहे। अनजान शिक्षक लोग। प्रो. रामेश्वर सिंह कश्यप उर्फ लोहा सिंह प्राचार्य रहीं। 'लोहा सिंह' नाट्य श्रृंखला के चलते रेडियो पर उहाँके नाम बराबर सुनत रहीं।

सुरुआती दिनन में एक दिन व्याख्यान कक्ष में एगो शिक्षक आवते कहलें "हम कुछ बोलबि, अपना-अपना कापी में लिखिह लोग। लगभग चार मिनट के डिक्टेशन के बाद सभकर कापी उनका टेबुल पर जमा हो गइली स। जाँच के बाद सभकर कापी वापस करत कहले रहलें- "आपन-आपन लिखल देखऽ लोग; जे-जे पाँच भा जादे (पूर्णांक 10) पवले बा, वोही लोग के हिंदी (प्रतिष्ठा) कोर्स में सामिल कइल जाई- बाकी लोग पासकोर्स से बी.ए. करी। सहपाठी लोग के आपसी कनफुसकी से मालूम भइल कि धोती-कुर्ता-अचकन आ सिर पर टोपी पेन्हले इहाँका डॉ.. नन्दकिशोर तिवारी जी हईं, जे सासाराम के बगल के गाँव बिरुकहीं के निवासी बानी। पहिलके दरसन में सामनेवाला के मन-मिजाज पर आपन धाक जमा लेवे वाला एह व्यक्तित्व के जवन जादुई असर हमरा पर

परल, त ऊ ना लगातार जारी रहल, बलुक समय के साथ आउरो गहिर होत गइल।

हमहूँ हिंदी (प्रतिष्ठा) के विद्यार्थी बनि गइल रहीं। तब प्रो. चन्द्रशेखर सिंह विभाग के अध्यक्ष रहीं। बाकी शिक्षकन में डॉ.. शुकदेव सिंह, डॉ.. नन्दजी दूबे आ डॉ.. बद्रीनाथ तिवारी रहीं। प्रिंसिपल रहला के बावजूद प्रो. रामेश्वर सिंह कश्यप सप्ताह में आनर्स के दू-तीन गो क्लास जरूर लेइए लेत रहीं।

एक दिन विषय से जुड़ल कवनो सवाल के बारे में विभागीय कक्ष में गुरुदेव डॉ. नन्दकिशोर तिवारी जी से मिललीं, त उहाँके कहलीं "आपकी हिंदी अच्छी है, मिहनत करेंगे, तो प्रथम श्रेणी मिल जाएगी। विगत कई सत्रों से विभाग में किसी को प्रथम श्रेणी नहीं प्राप्त हो सकी है। इसी तरह लगे रहेंगे, तो आपको मिल जाएगी। हाँ, जब भी जरूरत हो, शहर के मेरे आवास पर भी आकर विषय से सम्बद्ध जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।" मैट्रिक (सायंस) आ इन्टरमीडिएट (कामर्स) के जीमनवाला हमरा जइसन के ई आसीरवाद आ भरोसा मनोबल बढ़ावेवाला रहे।

कॉलेज के अलावा गुरुदेव के सासाराम के 'बिजली शहीद' मुहल्ला के घर पर हमार आवाजाही सुरु हो गइल रहे। इम्तहान के नतीजा में हम अपना मगध विश्वविद्यालय में अव्वल अइलीं। आज के वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय तब मगधे विश्वविद्यालय के अन्तर्गत रहे।

एम.ए. खातिर मगध विश्वविद्यालय (सत्र 1981-83) के मुख्यालय बोधगया पहुँचलीं त विभागाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ.) वासुदेव नन्दन प्रसाद का साथे प्रोफेसर (डॉ.) पूर्णमासी राय, डॉ. ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन', डॉ. वंशीधर लाल, डॉ. रामविनोद सिंह आदि वाला संपन्न हिंदी विभाग मिलल। बाद में डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा' भी इहवें आ गइल रहीं। अतना के बावजूद हमार अध्ययनशील मन के जरि-सोर सासाराम के 'निराला साहित्य मंदिर से ही रस-पानी-खुराक पावत रहि गइल। आठवाँ पत्र खातिर जब हम लघुशोध-प्रबन्ध के चुनाव कइलीं, त हमरा रुचि के धेयान में राखिके गुरुदेव डॉ. तिवारीए जी पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के गजलन पर काम करेके सलाह देलीं। उहें के प्रेरणा से डॉ. वंशीधर लाल जी के निर्देशन में 'गजलकार निराला' शीर्षक हमार लघुशोध-प्रबन्ध तइयार भइल। सत्र लेट चलत रहे। सन् 1985 में एम.ए. के रिजल्ट के तुरन्त बाद गुरुदेव डॉ. तिवारी के निर्देशन में पी-एच.डी. खातिर रजिस्टर्ड हो गइल रहीं। हिंदी गजल : उद्भव और विकास विषय तब परम्परागत विषयन से एकदम जुदा रहे। एही से एह शोध-विषय पर सामग्री के काफी अभाव रहे। अपना गाँवे के वित्तरहित कॉलेज में सेवा के चलते हम कहीं बाहर जाये-आवे आ सन्दर्भ-ग्रन्थन के खरीदे में असमर्थ रहीं। एकर ठीक उलट, गुरुजी प्रायः बनारस, इलाहाबाद आदि के सफर के दौरान विषय से सम्बद्ध किताबन आ पत्र-पत्रिकन के खरीदके हमराके उपलब्ध कराईं आ भरपूर मार्गदर्शन कइल करीं। तब हम जनलीं कि 'निराला साहित्य मंदिर' का उनकर निजी पुस्तकालय दुर्लभ ग्रन्थन के भंडार कइसे बन गइल रहे।

तबे हम ईहो जनलीं कि माता-पिता का होलें। अपना घर में पहिला बेर बाबूजी के बाद अब दूसरा बेर बूझलीं कि माता-पिता आ परिवार के प्रति पुत्र के कर्त्तव्य

का होला, भाई-भतीजा आ कुल्ह आश्रितन के प्रति संयुक्त परिवार के मुखिया के आपन जिम्मेवारी कइसे निभावेके चाहीं। तब आजी (गुरुजी के माई) जीयत रही। गुरुजी कबो बनारस, त कबो गया-बोधगया से अक्सर रात वाली ट्रेन से लवटीं। तब ले आजी मच्छरदानी में बइठल-लेटल जागले रहत रही आ जब-तब हमरा से पूछसु "का हो कासी, अबे बचवा ना अइलन? तहरा मालूम बा कि कहाँ गइल बाड़न?" आ फिर कवनो लोक-भजन के अन्तरा अपना पोपला-तोतला आवाज में गुनगुनाए लागसु। कुल्हिए दाँत टूट गइल रहले स। पोपला मुँह खाली पाकुर-पाकुर चलावसु आ बतियावसु। गुरुजी के परिवार आ मित्र लोग हमरा के हमार पेननेम 'आसिफ' से ही पुकारसु भा संबोधित करतु। इहे 'आसिफ' उच्चारण लाघव आ मुखसुख के कमाल से आजी के कासी' बन गइल रहे। गुरुजी आईं त सबसे पहले सीधे उनुके लगे जाईं, बइठीं। आजी उहाँके हाथ आ चेहरा छुवसु-टोवसु आ फिर एगो संतोस भरल आस्वस्ति के साथ सिरिफ पाँच से दस मिनट में नीन के गोदी में समा जासु। सपूत गुरुजी उनकर बिछावन, चादर आ मच्छरदानी के जॉचल-सरियावल कब्बो ना भुलासु।

इ दुर्लभ वात्सल्य आ मातृ-प्रेम हमरा रोज-रोज के जिनिगी के हिस्सा बन गइल रहे। सारा दिन गाँव के कॉलेज आ घर के अझुरहट से निकलके कवनो बस भा ट्रेन से साँझी खानि 'निराला साहित्य मंदिर आ जात रहीं। शोध विषय पर काम करत रात में कब नीन लाग जाय, पते ना चलत रहे। भोर में तीन-चार बजे नींन खुले, त अपना के हम मच्छरदानी में पावत रहीं। देह पर एगो चादर आ सिरहाने तकिया। ई सभ करामात गुरुजी के रहे।

सन् 1985 में अपने गाँव के वित्तरहित 'जगदेव नेमोरियल कॉलेज में बतौर व्याख्याता बहाल हो चुकल रहीं। बिहार कॉलेज सेवा आयोग के अनुशंसा पर उहवें सन् 1997 में विभागाध्यक्ष आ फिर सन् 2000 में प्रधानाचार्य बन चुकल रहीं। चूँकि गुरुदेव आ अपना पुरुखन के नेक संस्कारन के चलते ईमानदार प्राचार्य बनल रह गइलीं, एकर नतीजा भइल कि अर्थाभाव के घुटन में भी एक तरह के आनन्द बराबर साथे रहल।

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष होके उहाँका जब आरा गइलीं त आपन खड़खड़िया साइकिलो लेते गइलीं। एकरे पर सवार होके शांतिप्रसाद जैन कॉलेज (सासाराम) आवत-जात रहीं। अब आरा में किराया के फ्लैट में अकेले रहत वोही साइकिल से हरप्रसाद दास कॉलेज स्थित यूनिवर्सिटी हिंदी डिपार्टमेंट जाईं-आईं। बीच-बीच में बतौर प्रिंसिपल हम विश्वविद्यालय मुख्यालय जाईं, त अपनो पड़ाव उहवें होखे। साँझ बेरा किरासन तेल वाला स्टोव पर मिलके रोटी बनाईं स। दिन में भात-दाल भा कुछुओ चले। ईहो सब हमरा भा हमरे जइसन कवनो आउरो शिक्षक चेला-चपाठी के रहले प बने। बाद-बाकी दिन आ रात उहाँके आपन रहे- दूनो बेर दूध में खउलल तइयार साबूदाना के खीर। भास के कुल्हि संस्कृत नाटकन के भोजपुरी अनुवाद उहाँके एही अकेल आरा-प्रवास के पुण्य अवदान ह। हर हफ्ता माई के सुधि लेवे सासाराम पहुँचल उहाँके जारी रहे।

बिहार विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अनुशंसा पर चयनित होके जब हम सन् 2003 में पटना विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में अइलीं, त उहाँका अवकाश प्राप्त करिके वापस सासाराम आ गइल रहीं। गौरव के भाव से लबरेज होत हमरा पीठ पर हाथ फेरत कहीं "दरभंगा हाउस (हिंदी विभाग) के जवना व्याख्यान-कक्षन में अपना गुरुजन प्रोफेसर नलिन विलोचन शर्मा, आचार्य केसरी कुमार वगैरह के व्याख्यान (एम.ए. में अध्ययन के दौरान) सुनलीं, अब तहरा में समाके वोही कक्षन में हमहीं नु पढ़ाइला हो। उहवों के शिक्षके बनेके साथ आज तहरे रूप में पूरा हो गइल।"

बाकिर, पटना विश्वविद्यालय में उहाँके विद्यार्थी-जिनिगी वाला ऊ गौरवशाली हिंदी विभाग अब कहाँ बा! अब त विभागाध्यक्ष का कक्ष में पूर्व विभागाध्यक्ष लोग के दीवार में टांगल नामपट्ट मात्र वोह अतीत के दर्शन करा जाला। वरिष्ठता आ विभागाध्यक्षी खातिर आपसी महाभारत में लीन स्वयंभू विद्वान् बौना-ठिंगना पठारन-पहाड़ियन अस अपना सीनियर्स पर जब-जब नजर जाला, एह लोग के बीच गुरुदेव के हिमालय अस पाइलें। सन् 1981 के पहिला मुलाकात से लेके आज तक के 45 बरिस के लमहर अन्तराल के उनकर संग-साथ के इयाद रोआँ-रोआँ के पुलकित करत मन-परान, आत्मा के अजगुत टटकापन, ताजगी से लबरेज करि देला। एह पटना के ऊँच-ऊँच, आसमान के चूमत कंक्रीट आ लोहा के अपार्टमेंट वाला जंगल में बेचैन होके जेने तेने भागत-दउरत मानव रोबोट, फर्राटा भरत गाड़ियन के सोरगुल आ करिया-उज्जर जहरीला धुओं में उजबुजात हमार मनपंछी बेर-बेर उड़ उड़ के कैमूर पर्वत के तलहटी का एकांत में योगी अस धेयान में लीन अपना एस.पी. जैन कॉलेज के हाता में हरियर-हरियर फेड़न के डाढ़-पात, व्याख्यान कक्षन, चन्दन शहीद के पावन मजार, माँ ताराचंडी धाम, बिजली शहीद के चउकठ, स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ के मंदिर के सीढ़ियन आ निराला साहित्य मंदिर में पनाह, सुकून पावेला- जहाँ आजो स्वर्गीया आजी के पुकार 'ए कासी बचवा, गूँजत रहेला, जहाँ मानसपिता गुरुदेव के हाथ निढाल सुतल आसिफ के सिरहाने आहिस्ता से तकिया राखिके चादर आ मच्छरदानी से ढाँकत रहेले स।

जी, हम आ हमरा अस उहाँके हजारों शिष्य, शुभचिंतक आ नातेदार रिश्तेदार लोग अहोभागी बानी जा कि गुरुदेव लगभग पंचानबे के लाँघत उमिर के शतकीय पारी का ओर सही-सलामत बढ़ि रहल बानी। अपना माता-पिता अस आपन शिक्षक मानसपिता के अपना बीच साक्षात् आ जीवंत अस्तित्व से बढ़ि के आउर कवन सुख हो सकेला भला!

सकरी, पोस्ट- कुदरा, जि. कैमूर (बिहार)

विद्या शंकर विद्यार्थी

डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी : एगो महान स्तंभ

डॉ. नंदकिशोर तिवारी जी हमार गुरुवर हईं, हमरा साहित्य के दीया के लौ बार देलीं त बरत बा। इहँाके महानता के बखान इहें से कइल जा सकता, दोसरा से ना। एक बेर बात-बिचार का क्रम में कहलीं- बबुआ एह घरवा दुअरिया खातिर बेटवा पतोहिया इयाद करिहँ सन आ समजवा के जवन दिहल जाई तवना खातिर ऊ अपना जेहन में बसवले रही, इहे संसार ह। ई दूनों दिहल अपना-अपना जगह पर महान बा, कृति कबो ओराला ना। तब से हमार आँख खुल गइल। ई बात बिसमभोर होखे ओला नइखे। आ आज ले हम एह ज्ञान अमृत से तृप्त रहींला। गुरुवर जी आत्म ज्ञानी हईं, एक बेर हमरा उत्पन्न बिसम पारिवारिक स्थिति पर बात बिचार के दौरान उहँाके कहलीं तोहरा अबहीं ई ना बुझाइल कि शोध का ह। भक्त प्रह्लाद अपना बाबूजी के छोड़ दिहलन, मतलब सत्य के गहन कर लिहलन, आउर तूँ बाड़ऽ कि अबहीं तक चाचा चाचा के रट लगइले बाड़ऽ, एतना सुनते हमरा आँख के सोझा जइसे भक से अँजोर हो गइल। जइसे मुंधी में बाझल हाथ निकल गइल आ हमरा राह मिल गइल आ हम निश्चिंत हो गइलीं। तब से हम राहत के सांस लेत बानीं, आपन सतुआ आ आपन पानी।

गुरुवर हमरा चित्त में रमींला। हम चरन के सरन लिहींला त उहँा के हमरा कपार पर हाथ धर दिहींला। संस्कृत के महाकवि भास के सब रचनन के भोजपुरी में अनुवाद कइले बानीं, आ भोजपुरी ललित लिखले बानीं, सब ललित निबंध 'बतकही' नाम से किताब के रूप में आइल बा। गुरुवर के लिखल "पत्थर के मेहरारू" पढ़े जोग कृति बिया। गीत लिखे के क्रम में एगो गीत हमार आइल आ फेर लोग हमरा साथे अव्यवहारिक रजनीत करे लागल। ई बात हम कहलीं त गुरुवर हमार आँख में छिपल लोर के पढ़ लिहलीं आ कहलीं- तोहरा अंदर का बा लोग नइखे जानत हो, तोहरा खातिर हम पत्रिका निकालत बानीं, एही के देन ह कि सुरसती भोजपुरी पत्रिका निकले लागल आ हमरा के गुरुवर सहायक के रूप में रखलीं

आ हमार रचना छपे आवे लागल। अइसे त उहाँके हमार पहिला रचना के जगह एह से बहुत पहिले हृदय संदेश में दे चुकल रहीं, बाकि सुरसती ठेकान के ठेहा हो गइल। हमरा नाटक में जले गुरुवर के बिचार ना आवे तले हमरा संतोख ना होखे। गुरुवर के साहित्य सदन के नाम महाकवि निराला जी पर निराला साहित्य सदन बा। हृदय संदेश, प्रत्याभिता आ सुरसती वजन के पत्रिका ह। गुरुवर अउर संपादक से जादे सिरिजन के काम कइले बानीं, साहित्य में साहित्यकार के दिशा दिहले बानीं। अब तक हम एक दूगो संपादक (नाम खोलल जरूरी नइखे) लोग के बड़ छोट के नापाक भावना में बहत पवले बानीं तवना भावना से गुरुवर के बिल्कुल अछूता पवले बानीं। सान के दुनिया में सान पर पानी बा त आपन पानी बा। गीता घाट के बाबा के छाप बा आ एह तपस्वी के छाप गुरुवर पर परल बा। साँच कहल जाए त संत के छाया बा त विद्वान के समुंदर जस गहराई। जवन कबो नपले ना नपाई। गुरुवर रोहतास जिला के संत आ साहित्यकार किताब छाप के महान काम कइले बानीं। अफसोस के बाद ई बा कि जवन सम्मान इहाँ के मिले के चाहत रहे तवन अबहीं तक मिलल ना, ई बात लेके इहे कहल जाई कि व्यवस्था के दूगो आँख बा। एगो अनदेखा करे के आ एगो देखे के। आ व्यवस्था एह अनदेखे के आँख से देखत बा अब तक। बाकि एह घीव के दीया के केहू से कवनो शिकायत नइखे आ ना मरम पर चोट बा। काहे कि सासाराम महान नगरी के महानता के प्रभाव जे लिहले समेटले बा। गगरी त ऊ छलकेला जवन अधजल रहेला, भरल पूरल ना।

सँझवत के संस्करण गुरुवर पर आधारित बा, बहुत खुशी के बात बा आ दू बात लिखे के मौका हम आपन भाग्य मान रहल बानीं। गुरुवर के चरन में सादर नमन।

रामगढ़, झारखंड।

संस्मरण

कन्हैया सिंह 'सदय'

इयादि के ऊ पल

जेकरा कथन में चिंतन, मनन आउर मूल्यांकन के दृष्टि होला, जेकर व्यवहार अउर आचरण विद्वता का अहंकार से मुक्त होला, जेकर सहृदयता हर आदमी के आत्मीयता से अभिनंदित करेले, जेकर विनयशीलता आ सरलता अनुकरणीय होले, आउर जेकर सत्संग अउरी सान्निध्य सभे खातिर शुभदायक होला, अइसन शलाका पुरुषन में एगो नाम बा- प्रोफेसर (डॉ.) नंदकिशोर तिवारी। ओइसे त उनका सृजनशीलता, शोधपरकता आ विशिष्टता से हम पहिलहीं से परिचित रहनी बाकिर, हमनी के पहिल मुलाकात दिनांक 24-12-2005 के जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के स्वर्ण जयंती समारोह का अवसर पर, तुलसी भवन, बिष्टुपुर जमशेदपुर में भइल रहे। परिचय अउर अभिवादन का बाद ऊ अपना लगे बइठे के आग्रह कइलन। फेर, हमनी के बात-चीत शुरू भइल। ओही दौरान हम साहित्य से जुड़ल कई गो समस्या पर उनकर ध्यान खींचे के कोशिश कइनी। उनका सभे विचार आ सुझाव के उल्लेख त संभव नइखे, तबहुँओ कुछ जरूरी विमर्श के सार-संक्षेप अपना शब्दन में पिरोवे के प्रयास कर रहल बानी।

ऊ कहलन - "... मनुष्यता के बचावे खातिर सत्-साहित्य के सृजन जरूरी बा। सच्चा साहित्यकार हमेशा निरपेक्ष होला। ऊ सृजन आउर निर्माण में बाधा डालेवाला तत्वन के विरोधी भी होला। बाकिर, आजु के सबसे बड़ विडंबना ई बा कि हमनी का जेकरा खातिर साहित्य लिखींले जा, ओकरा तक ऊ पहुँच नइखे पावत। फेरु, बदलाव के लहर कइसे दउरी? संप्रेषण का बिना साहित्य के सृजन बेकार बा। ई जिम्मेदारी साहित्यिक संस्था के ह। बाकिर, आजु-काल्हु ओहिजा राजनीतिक गुटबाजी हो रहल बा। व्यक्तिगत पद-प्रतिष्ठा का लोभ में संस्था बनत-बिगड़त बाड़ी स। आजु, ज्यादातर संस्था अपना उद्देश्य आ आदर्श के पालन नइखी स कर

पावत। साहित्य खातिर समर्पित कवनो साहित्यकार इहनी से बाँचे के कोशिश करेला...।"

साहित्यिक गोष्ठी अउर सम्मेलन का औचित्य से जुड़ल हमरा सवालन के जवाब देबे का क्रम में ऊ कहलन- "...एकर औचित्य तबे बा जब तय कइल गइल उद्देश्य के पावे खातिर पहल कइल जाउ। बाकिर, अइसन होत नइखे। कुछ लोग आपन वर्चस्व बनावे अउर खुद के महिमामंडित करे का उद्देश्य से अइसन कार्यक्रमन के आयोजन करेलन। कार्यकर्ता घर पहुँचत-पहुँचत अपना जिम्मेदारी के भूल जालन। ई एगो दुखद स्थिति बा।"

'भोजपुरी-साहित्य निर्माण के क्षितिज' विषय पर भइल संगोष्ठी के अध्यक्षता करत घरी ऊ कहलन - "....आज का बदलत परिवेश में साहित्य-निर्माण के बहुआयामी क्षितिज खुलल बा। एकरा के छुए खातिर साधना, संकल्प आउर सार्थक प्रयास करे के जरूरत बा। ऊ समय आ गइल बा जब हमनी के क्षेत्रीयता का संकीर्णता से बाहर आके साहित्य-सृजन करे के परी। भोजपुरी, अब अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकल बिया...।" अइसन सौम्य व्यवहार वाला, गंभीर अउरी परिष्कृत विचारन का स्वामी से मिलके हम खुद के गौरवान्वित महसूस करे लगलीं।

डॉ. तिवारी से हमार दोसरकी मुलाकात भी कम विलक्षण ना रहे। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 21वाँ अधिवेशन के आयोजन उनुके शहर सासाराम (रोहतास) में दिनांक 04/5 नवम्बर 2006 के रामेश्वर सिंह 'कश्यप' नगर, संत पॉल विद्यालय में भइल रहे। हमहूँ ओहमें एगो प्रतिनिधि का रूप में शामिल रहनी। ओह अधिवेशन में, हिन्दी-भोजपुरी के गौरव-स्तंभ अउर विद्वता के बोधिवृक्ष डॉ. तिवारी के ना देखिके हमरा अचरज भइल। दर्शन के अभिलाषा जागल। स्नेह आ आशीर्वाद पावे का इच्छा से भरल हमार मन दिनांक 05-11-2006 के साँझि खा हमरा के उनुका घर तक खींच ले आइल। हम केवड़ी खटखटवनी। एगो अनजान लइका बाहर आइल। हम आपन नाँव बतवलीं आ तिवारी जी से मिले के इच्छा जाहिर कइनी। ऊ हमरा के साथे लेके ऊपर वाला तल्ला पर गइल। देखलीं कि तिवारी जी अपना छात्रन के कुछ समझावत रहलन। तबे हम प्रणाम कइनी, उनकर ध्यान टूटल। ऊ उठ के खड़ा भइलन आउर हाथ जोड़त लगे आ के कहलन- "हमार धन भाग सदय जी! रउरा आ गइनीं... आवहीं के रहे...।" आउर ऊ हमरा के अपना बाँह में भर लिहलन। हमार आवाज रुक गइल... आँखि भर आइल। कुछ देर हमनी का ओही स्थिति में खड़ा रहनी। बिना पलक झपकवले एक-दोसरा के देखत रहनी। फेर, जब सहज भइनी त ऊ बइठे खातिर कहलन। तबले हमार पुरान याद ताजा हो चुकल रहे... उनका अधिवेशन में भाग ना लेबे के कारन हमरा मालूम हो गइल रहे। एही से एह बारे में पूछल ठीक ना बुझनी। ऊ हमरा मना कइला के बावजूद बजार से नाश्ता मँगावे खातिर एगो लइका के भेजलन। समाचार जाने-सुने के सिलसिला शुरू भइल।

नाश्ता कइला के बाद ऊ रामचरितमानस में आइल शबरी-प्रसंग के छेड़ दिहलन। ऊ कहलन- "...शबरी नीच जाति के रहली। तबो, श्री रामचन्द्र जी उनुका से

मिले गइलन... उनकर दीहल रसीला, स्वादिष्ट कंद-मूल आ फल, प्रेम से बड़ाई करत खइलन अउरी उनुका के 'भामिनी' कहि के संबोधित कइलन।

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे।।

शबरी नवधा भक्ति के सिद्धि पा लेले रहली। बिना प्रेम के भक्ति ना पैदा होखे आउर बिना भक्ति का भगवान के कृपा ना मिले। प्रभु श्रीराम के त शबरी का घरे जाएहीं के रहे। कहल जाला कि एह नवो भक्ति में केहू के जो एको के सिद्धि मिल जाई त ओकरा के भगवान के कृपा मिल जाई। पता ना, हमार कवन भक्ति सिद्ध भइल बा कि रउरा हमरा आश्रम में पधारे के कृपा कइनीं आउर हमरा के धन्य कइनीं...!" सुन के हम दंग रह गइनी। भाव में बहिके ऊ का-का कह दिहले रहलन। हम उनुका के रोके अउरी बात बदले के कोशिश कइनी। फेरु, साहित्यिक चर्चा शुरू भइल आउर दू घंटा के समय बुझाइल कि दू मिनट में बीत गइल। हम अधिवेशन वाला जगह पर जाए के इच्छा बतवनी। हमरा के विदा करत घरी उनुकर आँखि भर आइल रहे; लागल जइसे बेटी के विदाई कर रहल होखस। अइसन संस्कार अउर संस्कृति के बढ़ावेवाला संत के हमार शतशः नमन!

डॉ. तिवारी के अपने से बनल व्यक्तित्व, सादगी अउर शालीनता से भरल बा। ऊ भाषा आ साहित्य के जानकार, प्रतिभाशाली शोधकर्ता अउर मौलिक चिंतक हउवन। ऊ खुद एगो तेज बुद्धिजीवी आउर शुद्ध साहित्यकार हउवन। एकरा साथे ऊ साहित्यकारन अउर बुद्धिजीवियन का निर्माण के काम भी कइले बाड़न। भोजपुरी साहित्य का विकास में उनुकर योगदान बेजोड़ अउर तारीफ का काबिल बाटे। उनुकर बाकी जीवन लमहर होखे, ऊर्जा आउर आनंद से भरल रहे, इहे हमार कामना बा।

कार्तिक नगर, रणडीहाकार एस.एस. ऑटोमोटिव सर्विस सेंटर के लगे पो. टेल्को वर्क्स जमशेदपुर - 831004

संस्मरण

रामरक्षा मिश्र विमल

हमार गुरुदेव

गुरुदेव डॉ. नंदकिशोर तिवारी के हम रोजे याद करींले। एह काम खातिर हमरा कुछ सोचे-बिचारे के ना परे, ई अनासे होत रहेला। बाकिर आजु जब इयादि का कुछ बिंदुअन के अंकित करे बइठल बानी त बुझात नइखे कि शुरुआत कइसे करीं। कुर्ता -धोती के रोब वाला ठाट, माथ पर गांधी टोपी, सफाचट दाढ़ी-मूँछ, चमकदार आँखि, दुरिए से रहला के पता चलि जाइ- अइसन ठठाके हँसे के एगो विशेष अंदाज, निःस्वार्थ भाव से सभके सहयोग वाला बॉडी लैंग्वेज अउर अथाह ज्ञान का बादो व्यवहार में तनिको घमंड ना, बालसुलभ जिज्ञासा आ अद्भुत सहनशक्ति। गुरुदेव का रेखांकन के ई बिंदु हमरा अल्प बुद्धि के प्रतिबिंब बाटे, बाकिर एकर उपयुक्त विस्तार का हो सकेला, ई उहेंका बता सकतानी- सोइ जानेउ जेहि देउ जनाई।

जब हम मगध विश्वविद्यालय, बोधगया का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में अध्ययनरत रहीं, ओही दौरान सासाराम का एगो विशेष यात्रा में गुरुदेव से मिललीं। उहाँका पहिल दर्शन के प्रभाव आजुओ दिलोदिमाग पर ताजा बाटे। ओही साँझि एगो कवि सम्मेलन में उहाँका सङे गइलीं आ कई गो कवि लोगन से परिचय भइल। फेरु त समय-समय पर श्रोता लोगन का ताली अउर शुभाकांक्षी लोगन का टिप्पणी से उत्साह बढ़त गइल आ पते ना चलल कि कब हम एम.ए. कइ लिहलीं अउर नोकरियो में आ गइलीं।

गुरुदेव के प्यार त मिल जात रहे बाकिर उनुकर समय ले पावल संभव ना रहे। उहाँका आपन पढ़े-लिखे के काम त अपने दू-अढ़ाई बजे जागि के पूरा कर लेत रहीं, बाकिर उहाँसे सहयोग प्राप्त करेवाला आ मिले वाला लोगन के भीड़ अतना लमहर होत रहे कि हमरा अस संकोची विद्यार्थी के आपन काम करावे खातिर पसेना छूट जात रहे, जबकि हम उनका प्रियपात्र लोगन में से एक रहीं। एक दिन हम उहाँका सङे सासाराम से गया लवटत रहीं। हम अनुरोध कइलीं कि भाषा विज्ञान के एगो पुस्तक अपना सङे राखि लीं। भाषा विज्ञान के ऊ अध्याय, जहाँ हम रुक जात रहीं, गुरुदेव ट्रेने में सुस्पष्ट क दिहलीं। जतना विद्वान ओतने नीमन शिक्षको। ई गुण सभमें ना होखे। कबहुँओ कुछुओ पुछले बानी, ई कहल ढेर ठीक रही कि आजुओ कुछ पूछींले त उत्तर ओसहीं मिलेला जइसे प्रश्न पूर्वज्ञात होखे आ उत्तरो जइसे बिल्कुल कंप्यूटराइज्ड, जेकर पूरा अवधारणा पहलहीं से होखे।

आजु एसएमएस आ ई मेल के सहज उपलब्धता अउर नेट का सर्वसुलभता से पत्र-लेखन का धैर्य के नींव हिल गइल बा। एकर फल ई भइल कि आजु जबकि पत्र-लेखन के परंपरा ना के बराबर रहि गइल बा, तबो गुरुदेव का पत्र-लेखन में कमी नइखे आइल। गुरुदेव के पत्रोत्तरे हमार मार्गनिर्देश करत रहल आ हम विपरीत परिस्थितियन से

जूझत लक्ष्य का ओर बढ़त रहीं। इयाद आवतारे सन ऊ दिन जब एम.ए. के कक्षा चलत रहे। तब सपनो में एके बात होखे- विश्वविद्यालय का स्नातकोत्तर विभाग में प्राध्यापक भइल। बाकिर, जवना दिन परीक्षाफल के पता चलल, हम त सीधे जमीन पर आ गइलीं। अब त एम.ए. भी हो गइल, अब का करीं? गुरुदेव के चिट्ठी लिखलीं कि बड़ा पेशोपेश में बानी आ परेशानो बानी कि अब का करीं। तत्काल जबाब आइल- तुरत हमरा भीरी चलि आव। हमरा बहुत राहत मिलल। अब उहाँ का सासाराम स्थित आवास पर रहल, उहाँ का विशाल पुस्तकालय में अध्ययन कइल, शोध निबंध लिखल, कभी-कभार उहाँका कॉलेज में लेक्चर दिहल हमार मनोनुकूल काम हो गइल रहे। ओइजा अनिल, सुनील आ शेखर हमरा छोट भाई नियन रहन, लागत रहे जइसे अपना एगो अउर परिवार में रहऽतानी।

एक दिन एगो अजीब परिस्थिति हमरा सामने आ गइलि। गुरुदेव का आवास पर ओइसे त रोजे भोरे-भोरे सब केहूँ नियमित रूप से अपना से बड़ के प्रणाम करत रहे आ हमहूँ एह परंपरा में जुड़ि गइल रहीं, बाकिर एगो घटना त हमरा जीवने के धारा बदल दिहलसि। ओइजा पति अतवार के भोरे-भोरे भरपूर सफाई होत रहे। जब हम देखलीं कि एगो लैट्रिन के सफाई खुद गुरुदेवे करे जा रहल बानी त हम ई काम उहाँ के कइसे करे दिहितीं? एहसे, ओह काम के हमहीं ले लिहलीं उहाँ से। बाकिर साँच त ई रहे कि हमरा जीवन के एह तरह के ई पहिला काम रहे। एकरा पहिले ई काम माने लैट्रिन के सफाई हम ना कइले रहीं। जाड़ा के दिन रहे आ तनिके में हम पसेना से भींजि गइलीं। गुरुदेव देखलीं आ कहलीं कि एह पारी छोड़ि द, हम कर लेतानी, अगिला बार तूँ क लीह। ओह दिन गुरुदेव एह काम के उपयोगिता समुझवलीं। बतवलीं कि एह तरह का काम से (जेकरा के तूँ सबसे छोट मानतारऽ) अहंकार सहजे में नष्ट होखे लागेला। विद्या प्राप्त करे खातिर अहंकार के विसर्जन बहुत जरूरी होला। अगिला सप्ताह एह तथाकथित निकृष्ट काम के हम बड़ा मन से संपन्न कइलीं आ आजुओ घर में खुशी-खुशी करींले।

गुरुदेव हमरा पिता समान बानी। बाकिर उहाँ से डर बाबुओ जी से अधिका लागेला। हमार मए दोस्त बी.एड. खातिर आवेदन करत रहन स। समय बीतेवाला रहे, हम अपना द्वंद्व से उबर ना पावत रहीं काहेंकि गुरुदेव पहलहीं मना कर चुकल रहीं। उहाँका ना चाहत रहीं कि हम टीचर बनीं, उहाँका हमरा के लेक्चरर का रूप में देखे के चाहत रहीं आ हमरा खातिर अपना कमजोर आर्थिक स्थिति का चलते कवनो ना कवनो रूप में कमाऊ पूत बनल अब बहुत जरूरी हो गइल रहे। एहसे हम सभसे लुकाके चुपचाप बी.एड. खातिर आवेदन कर दिहलीं आ हमार गया स्थित एगो राजकीय महाविद्यालय में एडमिसनो हो गइल। बाकिर उहाँ के कवनो स्रोत से पता चलिए गइल आ उनुकर चिट्ठी आ गइल। हम डेराइल रहलीं, बाकिर एह चिट्ठी से कुछ राहत मिलल आ साहस भी।

“इधर हिंदुस्तान टाइम्स में प्राध्यापक के अनेक पद निकले हैं। कभी संघर्ष से भागने की चेष्टा न किया करो। इसके लिए भी वैसा ही समय निकालना, प्रयत्न करना है, जैसा

कभी एम.ए. की परीक्षा के लिए किया करते थे। बी.एड. का परिणाम सुनकर प्रसन्नता हुई पर भविष्य के लिए कष्ट हो रहा है। कहीं तुम इसी क्षेत्र में रहने को ही अपने जीवन का लक्ष्य न बना लो। यह सही है कि तुम बड़े पद पर भी जा सकते हो, पैसा भी मिलेगा, जिसका किसी चीज से कम महत्त्व नहीं, किंतु तुम्हारी प्रतिभा का शायद उपयोग नहीं हो पाएगा। अब तक किसी का हुआ नहीं। कोई विरला ही शायद हो। अतः चाहूँगा कि ऐसी सभी नियुक्तियों का विज्ञापन देखा जाय, भरा जाय, अंतर्वीक्षा में जाया जाय और रचना, प्रकाशन आदि के माध्यम से योग्यता को परिपूर्ण बनाया जाय। तैयारी नहीं रोकनी चाहिए। तैयारी एक दिन में नहीं होती। जनम लग जाता है। अतः लक्ष्य, परम लक्ष्य और जीवन लक्ष्य पर ध्यान रखो।" (बिना तिथि के पत्र)

ई बात अलग बा कि केंद्रीय विद्यालय में तुरंते हमार नौकरी लागि गइल आ हमरा आपन एडमिशन रद्द करावे के परल। हम अपना मित्रन के अपना नौकरी का बारे में बता दिहलीं, बाकिर गुरुदेव के बतावे के हिम्मत ना भइल। बाकिर, तबो गुरुदेव के जबाब आ गइल-

" तुम्हारे पत्र विजय को मिले थे। प्रसन्नता हुई कि चाकरी मिल गई। तुम्हारे कंधों का भार घटा भी और बढ़ा भी। उत्तरदायित्व सँभालना कठिन होता है। संसृति अच्छी लगी। संकल्प का का एक चरण पूरा हुआ और वैतनिक सफलता के प्रथम सोपान पर पदारूढ़ हुए। प्रभु कृपा करें, सारे संकल्प ऐसे ही पूरे होते रहें। आसिफ का काम लगभग पूरा हो चला है, टंकण लेखन के साथ-साथ। पहला अध्याय टंकणाधीन है। मेरे अर्जुन मन ने ८६ के दिसंबर तक इन दोनों थीसिसों का सुवध कराना चाहा था। एक का होगा, एक का नहीं, यही पीड़ा सता रही है। ...स्वास्थ्य और अध्ययन दो ही जगत के मूल तत्त्व हैं।" (०४.११.८६ के पत्र)

कवनो तरह के असंतोष का स्थिति में गुरुदेव के एगो चिट्ठिए हमार पीड़ा दूर करे खातिर काफी होत रहे- "आज तुम्हारी असली चिट्ठी मिली। भार को अकस्मात् ढोनेवाला इसी तरह की मानसिकता को जीता है। तुम भाग्यशाली हो जो रोटी कमाकर खाते हो। बड़े लोगों का जीवनारंभ ऐसा ही हुआ है। तुम इसी पंक्ति में हो। श्रम का मूल्य कहीं नहीं जाता। हाँ, यह अवश्य है कि जिसने सर्वप्रथम धन खोजा होगा, उसी ने सारे दुःखों को खोज लिया होगा, लेकिन उसे पता नहीं होगा जीवन भर। हमलोगों का भी यही हाल है। हम अपने परिचय का विस्तार तो कर लेते हैं पर उसे ढो नहीं पाते। खूब काम करते रहो। जीवन इसी तरह चलता है। कहीं पद है तो प्रतिष्ठा नहीं, प्रतिष्ठा है तो पैसा नहीं। हर आदमी असंतोष के पारावार में डूबता उतराता रहा है। संतोष कर लें तो कहीं कुछ नहीं- मूदहुँ आख कतहुँ कछु नाहीं। केवल विनम्र रहकर प्रभु के सभी रूपों में उन्हें देखा जाय तो पग-पग पर उनके आशीर्वाद की वर्षा होगी।"(बिना तिथि का पत्र)

जब कबो हम अपना अस्वस्थता के बात लिख देत रहीं त उहाँका दुखी आ चिंतित त होते रहीं, बाकिर अइसना में हमरा का करे के चाहीं आ कइसे रहे के चाहीं- एह सवालन के अइसहीं ना टाल देत रहीं।

"स्वास्थ्य पर ध्यान देना। जब कभी असंयम जीवन में आता है तो इंद्रियाँ उसे बर्दाश्त नहीं कर पातीं। संयम का नाम ही जीवन है। पति-पत्नी उसे साथ रहकर मर्यादित करते हैं। संयम लाना ही विवाह का उद्देश्य रहा होगा । ...स्वस्थ व्यक्ति ही समाज और परिवार का हित कर सकता है। अतः पत्र लिखो कि मैं स्वस्थ हूँ और १८ घंटे काम करने की शक्ति रखता हूँ।" (बिना तिथि के पत्र)

गुरुदेव का पत्रन में प्रेम का सङे-सङे व्यंगो के प्रसाद कबो-कबो मिल जात रहे, खास कर तब जब उहाँ के लागत रहे कि हम लिखे में कोताही करतानी। एक बेरि हम अपना पत्र में विद्यालय के व्यस्तता, बच्चन के पढ़ाई आदि 'गृह कारज नाना जंजाला' के चर्चा कइलीं। जबाब मिलल- "इधर सुरसती भोजपुरी में और प्रत्याभिता हिंदी में निकल रही है। आपकी रचनाएँ इनमें प्रकाशित होकर पत्रिका का उपकार करेंगी। यदि बच्चों को ही ठीक ढंग से पढ़ा सकें तो यह कार्य बहुत बड़ा है। कहीं काम करें, पूर्ण लगन के साथ। सुविधा की ओर से मन को हटाए रखें। सुविधापूर्ण जीवन को संतों ने अभिशप्त माना है, महापुरुषों ने तो विदाप्राप्त दुःख को बुलाकर घर में बैठाया है।" (१८.७.२००२ के पत्र)

थकान अउर आराम के बात शायद उहाँ खातिर बनले नइखे। "कुछ लिखना-पढ़ना चलते रहना चाहिए। एक क्षण भी बेकार न जाय, यह ध्यान रहे। समय प्रभु की कृपा का सर्वाधिक सहज वरदान है। इसको बेकार करना, गप में लगाना उस वर पर लात मारना है। अतः काम करते जाओ। शरीर भी उसी प्रकार का हो जाएगा।" (५.२.९२ के पत्र)

हम उहाँके कामे करत देखले बानी। उहाँ के सूतल अगिला घंटन खातिर ऊर्जा ग्रहण करे से ज्यादा कुछ ना रहे। हम जब रात में कबो पानी पिए खातिर उठत रहीं त देखत रहीं कि उहाँका चाहे पढ़त रहीं भा लिखत रहीं। समय बेकार कइल उहाँ के पसंद ना रहे। उहाँका हमेशा हमरा के कुछ ना कुछ लिखे खातिर प्रेरित करत रहलीं। चिट्ठी लिखल त केहू उहाँ से सीखे। निस्चे उहाँ के प्राप्तकर्ता का सभे जिज्ञासा के बोध रहत रहे।

"प्रसाद पर परिषद् पत्रिका के लिए लिखो । विशेषांक निकलने जा रहा है। लिखना-पढ़ना बंद मत करना। सुनील बाबू परीक्षा देने डिहरी गए हैं। आने पर पत्र लिखूँगा। कैसा किया है, नहीं जानता पर हृदय कहता है कि अच्छा करेंगे। पढ़ा भी है और पुण्य भी है। अनिल बाबू तैयारी में हैं। भैया का शोध जमा हो गया है। अभी उनकी भी मौखिकी नहीं हुई है। यहाँ लगभग सब ठीक ही है।" (६.३.८९ के पत्र)

एक बेर गुरुदेव के पत्र बहुत दिन तक हम प्राप्त ना कर सकलीं। बहुत चिंता होत रहे। फेरु डरो लागत रहे कि जो खिसिया गइलीं तब? बाकिर एही में सोचते-सोचत हम उहाँ के पत्र लिख दिहलीं आ डरते-डरत उहाँका नाराजगियो के जिक्र कइ दिहलीं। फेरु का! स्पष्टीकरण का साथे उहाँके पत्र आ गइल एकदम पहलहीं वाला अंदाज में।

"परमप्रिय विमल, शुभाशीर्वाद। तुम्हारे पत्र मिलने के पहले तुम्हारी बहुत याद आ रही थी। सोचा, अभी पत्र लिखूँ। दिन में चार बजे हैं। अभी शेखर जी अन्य पत्रों के साथ

आपको भी दे गए। तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं तुमसे नाराज हूँ। प्रेम जगत में नाराजगी होती है, शिकवा शिकायत भी पर उससे तो उसमें इजाफा ही होता है। हड़ताल के चलते कोई काम अभी तक नहीं हुआ।...बच्चे तुम्हें याद करते हैं। बहू का क्या हुआ ? तुम्हारा पत्र में किसी दिन कुछ निकला था। आजकल सुनील जी की कविताएँ छप रही हैं। हिन्दुस्तान में अच्छा लिख लेते हैं। भूकम्प ने प्रभु का कुछ क्षण तक आभास कराया था। धन्य हैं वे, पृथ्वी को हिला दिया। जो नहिं देखा नहिं सुना। तुम दोनों को आशीर्वाद।" (२८.८.८८ के पत्र)

जइसे हम गुरुदेव का नाराजगी से डेरातऽनी ओइसहीं साइत उहों का हमरा नाराजगी के मान राखींला। वात्सल्य जब अपना युवा संतान खातिर कवनो उदाहरण खोजल चहले होई त जरूर हमरा गुरुदेव भीरी आइल होई।

"आज तबीयत खराब है अतः माँ ने नहीं जाने दिया। मैं तुम्हारी चिट्ठी की प्रतीक्षा में रोज आकर ढूँढ़ता था। सोचा बीमार है या कहीं बाहर गया है, सो सही निकला। तुमको कुछ चिंता होती है तो उसका असर यहाँ होने लगता है। तुमसे नाराज होने का प्रश्न नहीं उठता। मैं खुद तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मुझे डर तो तेरी नाराजगी से रहता है।...किसी भी क्षण घबड़ाओ नहीं, अपने को सामना करने के लिए तैयार रखो। यह जीवन कुछ नहीं, अज्ञात की चुनौती है। वही फिर सहायता भी करता है, जैसे लड़ानेवाला अखाड़े में गिरने पर उठाता भी है और पटकता भी।" (२७.७.९० के पत्र)

एक बार गुरुदेव के जीवनी लिखे के हमार मन भइल। हम एकरा खातिर उहाँ से अनुमति चहलीं। बाकिर जबाब ऊहे मिलल जवन हमार मन पहिलहीं से जानत रहे।

"मेरे गुरुदेव ने अपनी जीवनी जीवन काल में नहीं लिखने दी। मैं सोचता हूँ कि कैसे हामी भरूँ। अतः तुम भी मेरे जीवन के बाद ही ये सब करो तो ठीक है। मैंने अपने को अच्छी तरह समझा है। अब अपने लोभ, काम, क्रोध का पता चल जाता है। प्रवाह में बहा नहीं जाता। अतः अपनी गलतियों को देखने में लगा रहता हूँ। इससे एक कार्य तो अवश्य सधता है कि अहंकार में इजाफा नहीं हो पाता। स्वामी जी ने मुझे अहंकार के प्रति सावधान किया था। अतः अपनी बात उठते ही सावधान होना पड़ता है या गुरुजी सावधान कर देते हैं।" (बिना तिथि के पत्र)

हम गुरुदेव के अपना पत्रिका 'संसृति' के प्रवेशांक भेंजलीं। प्रतिक्रिया में २२.७.८५ के उहाँ के जवन पत्र आइल, ऊहे हमरा पत्रिका के कंठहार बन गइल आ हम ओकरा के 'संसृति' का दोसरा अंक में 'स्वस्ति श्री पत्री लिखी सासाराम से' शीर्षक से छापि के धन्य हो गइलीं।

"आज गोस्वामिपाद याद आ गए। बड़े विचित्र हैं, मेरे हर विचार पर अपनी मुहर लगा देने के लिए तैयार रहते हैं। 'संसृति' का अर्थ बताना शुरू किया कि भाई, मैंने संसृत भी लिखा है और संसृति भी। मैंने कहा कि प्रभु यही तो आपकी प्रभुता का गुर है कि आप गुरु की जगह गुर लिखते हैं और लोगों को चक्कर में डाल देते हैं। आप जैसा सहज प्रेम का अभिलाषी प्रचारक असहज चमत्कार का फेरा क्यों डालता रहता है ? उन्होंने कहा- यही तो संसार है और मेरे लिए संसारू- होइहिं सब उजार संसारू। और तब ते जीव भए

संसारी। मैंने इसका प्रयोग संसारा के रूप में किया। पेट नहीं भरा तो संसार- 'संसार कंतार अति घोर' और 'ना जानूँ कछु और कभारू'। मैंने संसृति का ह्रस्व इकार समाप्त कर संसृत करके एक अतिरिक्त अर्थ पा लिया- संसृति मूल सूलप्रद नाना । चूँकि बुद्ध को उत्तर देना था, वैराग्य का हनन करना था, गृहस्थाश्रम में ही मेरे प्रभु को सच्चे अर्थ में समझा जा सकता था। 'मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी' बनकर उनको ही भूलने लगेंगे। अतः मुझे उनके अज्ञानी बालक के समान होने की भी चर्चा करनी थी। बुद्ध ने कहा था न! पिसो पड़े हो इसमें जब तक, क्या अंतर आया है तब तक। सहें अंततोगत्वा कब तक हम इसकी गति वक्र। मैंने कहा- बेटा, जब तक जिओगे तब तक सिओगे। यही संसृति है। जहाँ आवा है, वहीं गवा भी, जहाँ जन्म है, वहीं मरण भी। और यही है संसार अर्थात् सम्यक् सारभूत। जन्म-मरण का सार जैसे पत्नी का भाई सार। कितना मनमोहक कितना निःसार पत्नी सापेक्ष भाव से। गीतावली में कहा हमने- कियो कृपालु अभय कालहुँ ते गह संसृति सांसति धनी। अब संसृति का दुःख कहाँ, जहाँ कृपालु ही मिल गए। तो आपकी संसृति, मानसिक संसृति और पत्रिका (पत्ती) में उसके नाम का अर्थ यदि नहीं निकले तो पत्रिका क्या निकलेगी?"

हमार कई गो तबादला भइल बाकिर ओहमें से एगो हमरा मित्र लोगन का नजर में बहुत खतरनाक रहे। लोगन का बात से हमरो मन डोलत रहे। गुरुदेव के पत्र लिखलीं। फेरु त जवन जबाब आइल, ऊ हमरा सोच के दिसे बदल दिहलसि आ हम आँख मूदि के जाए खातिर तेआर हो गइलीं।

"परमप्रिय विमल जी, शुभाशीर्वाद। आपका ६.९.२००० का अंतर्देशीय मिला। आपके तबादले का समाचार शेखर जी से मिल गया था। मैं इसे ईश्वर कृपा समझता हूँ। मेरी अपनी कामना भी कभी नहीं थी कहीं जाने की। अंतिम समय में आरा जाना पड़ा। भूखे रहता हूँ। केवल सहायक प्रभु हैं, सखादि सभी। अतः सुनकर सोचा, इसमें कुछ मंगल है। आप अपना मंगल देख नहीं सकते क्योंकि अहंकार है, साहाय्य की आशा है। सारा देश-दर्शन होगा सेवाकाल में ही। तीर्थों की, भारतभूमि की परिक्रमा हो जाएगी। भ्रमोच्छेदन होगा। नई आत्माओं की पहचान होगी। अतः सोचा, अच्छा हुआ।...नौकरी कभी घर में नहीं मिलती, नहीं होती। किसी से मत कहिए। तू पहले अकेला बनो फिर राम तेरे साथी होंगे। आपका पहला अध्यात्म ज्ञान अब विकसित होना चाहिए। बच्चों को माताजी सहित आशीर्वाद। चिंता से चिंतन उच्च कोटि का रचनात्मक कार्य है।"(९.९.२००० के पत्र)

योग्यता बढ़ावे के बात अक्सर उहाँ का चिट्ठियन में होत रहे।

"मेरे नाम की भी चर्चा तुमलोगों के माध्यम से हो जाती है। अतः योग्य बनने की कोशिश बराबर रहनी चाहिए।...परिस्थिति कुछ नहीं है, मन ही सब कुछ है।" (१९.६.९० के पत्र)

बचपन में एगो कहानी में पढ़ले रहीं कि भगवान जवन कुछ करेले, ठीके करेले। ई सूक्ति आजो हमरा मानस पटल पर अंकित बा आ साइत हमार आचार भी एहसे अनुशासित होला। आज ओहमें अउर भी कई गो विचार जुड़ गइल बा, बाकिर

जब आत्मानुभव विचार का रूप में आवेला त ओकर प्रभाव कई गुना अधिक बढ़ जाला। हमरा ऊपर अइसने प्रभाव पड़ल गुरुदेव का एह चिट्ठी के-

"मुझे इधर की व्यस्तता और चिंता ने बहुत सताया। अतः कहीं पत्र नहीं लिख पाता था। मैं किसी पर नाराज नहीं हो सकता। कारण, प्रभु प्रसन्न होते हैं तो सभी प्रसन्न हैं। फिर कोई कैसे नाराज हो ? प्रभु को ही क्यों न प्रसन्न किया जाय। मुझे जो भी प्राप्त है, वह उसी की कृपा से; जो नहीं मिला, कमी दिखती है। वह मेरे कर्मों का दोष है, संस्कारों का दोष है। किसी का भी कोई दोष नहीं। प्रभु ही समय के संचालक हैं, फिर दूसरे को क्यों कहें ? रोज तो यही समझाता हूँ तो आपने समझा क्या ?...लिखते-पढ़ते रहने से विद्या की कमाई में जंग नहीं लगता। सब ठीक रहता है। तुम तो संस्कारी हो अतः कहने की क्या जरूरत।...एक पंक्ति तुम्हारे लिए-

पीर पीकर महा
दुःख जिसने सहा
आह भी न कहा
ओह भी न कहा।"

तुम्हारा वैसा ही
नन्दकिशोर

अब हमरो व्यस्तता बहुत बढ़ गइल बा, जिम्मेदारियन के बोझ पहाड़ के रूप ले लेले बा। अइसना में गुरुदेव से संवाद मोबाइल आदि से ही हो जाला आ चिट्ठी-पत्री लिखे के काम त लगभग खतमे हो गइल बा। बाकिर गुरुदेव के चिट्ठी आजो हमरा खातिर थाती से कम नइखे। जब मन परेशान होला त ओही में समाधान खोजींले आ तब लागेला जइसे गुरुदेव हमरा माथा पर हाथ रख के कुछ समझावत बानी, करुणा आँखि के भिंजा रहल बिया आ मन सहज आ शांत होत जा रहल बा।

संपादक, सँझवत।

कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे चाहीं

डॉ. नंदकिशोर तिवारी से रामरक्षा मिश्र विमल के बातचीत

डॉ. नंदकिशोर तिवारी हिंदी आउर भोजपुरी के स्थापित विद्वान आ साहित्यकार हईं। इहाँके लेखनी साहित्य का हर विधा में चलल बिया बाकिर शोध, समीक्षा, ललित निबंध आ (अनूदित) नाटक का सङहीं संपादनो का क्षेत्र में राउर केहूँ सानी नइखे। चार-चार पत्रिकन के नियमित संपादन कइल आसान ना होखे, बाकिर बिना थकले आजुओ राउर सक्रियता जारी बा।

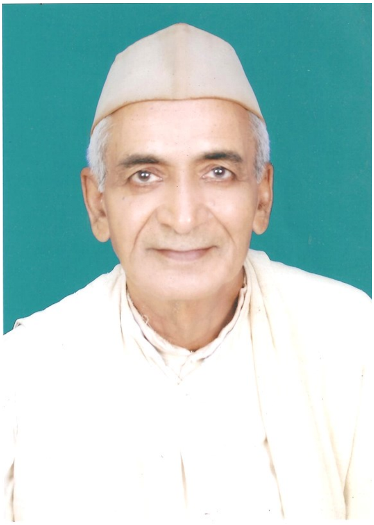

रउआँ एगो भाषा-वैज्ञानिक हईं। 'सुरसती' पत्रिका में अपने के द्वारा कइल गइल भोजपुरी शब्दन के व्युत्पत्यात्मक, विवेचन पत्रिका के विशेष आकर्षण होखल करेला। इहाँका वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के अध्यक्ष रह चुकल बानी। अपने के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना आउर भोजपुरी अकादमी, पटना का सङे सुरुए से जुड़ल रहल बानी। भोजपुरी में इहाँके 13 गो अनूदित नाटक प्रकाशित बा, जवन संस्कृत के नाटककार भास का नाटकन के अनुवाद हटे। 'पत्थल के मेहरारू' नामक राउर एगो मूल भोजपुरी नाटको प्रकाशित बाटे। आपके 8 गो शोध ग्रंथ प्रकाशित बाड़े सन। एकरा अलावे इहाँका 16 गो किताबन के संपादन कइले बानी। वर्तमान में रउरा संपादन में हिंदी के तीन गो पत्रिका- इयत्ता,प्रत्याभिता आ हृदय संदेश निकल रहल बाड़ी सन आउर सन् 2000 से भोजपुरी त्रैमासिक पत्रिका 'सुरसती' के संपादन कर रहल बानी। अपने का व्यक्तित्व आउर कृतित्व पर पी.एचडी. खातिर एगो आ एम.फिल. खातिर 4 गो शोध कइल जा चुकल बा। राउर जन्म बिहार में रोहतास जिले का बेरुकहीं गाँव में 1939 में भइल रहे। 2001 में अपने का विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त भइल रहीं आ आजुओ पूर्ववत लेखन, संपादन आउर शोध कार्य में सक्रिय बानी।

प्रस्तुत बा उहाँ से भइल बातचीत ।

वर्तमान में भोजपुरी के मानकीकरण नइखे भइल आ निकट भविष्य में ओकर कवनो गुंजाइश नइखे लउकत। अइसना में भोजपुरी व्याकरण के रचना कतना सार्थक प्रयास कहाई?

भोजपुरी भाषा से ज्यादा बोली ह। बोली आपन-आपन होला। माने जतना ओह क्षेत्र में आदमी बाड़न उनकर सुभाव, सिच्छा परिवारिक संस्कार आउर गाँव घर के संस्कृति के ओकरा ऊपर बहुते प्रभाव रहेला। एगो गाँव से दूसरा गाँव के जाति-बिरादर के आधार पर ओहमें भिन्नता आ जाला। अगर रउरा गाँव के बगल में अनपढ़ भाई लोग के गाँव बा, त उनकर भाषा भी दोसरे बा। बस रवाँ उनुकर बात के समुझत बानी आ ऊ राउर बात समुझत बाड़न। भोजपुरी के क्षेत्र बहुते बाड़ा बा। काशी, आरा, रोहतास, चंपारन, हजारीबाग, छत्तीसगढ़, गोरखपुर के भोजपुरी भासियन के बोले चाहे लिखे में जवन अंतर बा, ऊ स्वन के अंतर ह। ई भाषा के बहुते छोट इकाई ह। ई सिच्छा, संस्कार पर निरभर बा। गोस्वामी तुलसीदास जी संसकिरित के जानकार रहीं। एह से उहाँ के एकरा में बहुते सावधान बानी। कवन सबद कइसे बोले नीअन लिखाए के चाहीं। काहेंकि संसकिरिते एगो भाषा बा जवना के मानकीकरण के प्रस्न नइखे उठत। पूरा भारत के लोग एके संसकिरित बोली। लेकिन रूसी बोलिहन त ओहमें थोरिका उनुका भासा के गंध आ जाई। अंगरेजी हर देश के आपन अंगरेजी हो गइल बा। वर्तनी में भी भेद आइल बा। अमेरिकन इंगलिस के आपन ठाट बा, आपन वर्तनी बा। हिंदी में कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण आ किशोरीलाल के हिंदी शब्दानुशासन में बहुते भेद के पच्छ उभरल बा। एहसे हिंदी के विद्वान भोजपुरी लिखेके फेरा में ना पड़लन। आपन बात हिंदी में कहलन। ओहिजा अतना काहें कि ना रहे। भोजपुरी व्याकरण लिखात रहे के चाहीं। कवनो प्रयास भाषा आ साहित्य में बेकार ना होखे। बनते-बिगड़ते कवनो भासा के इतिहास रचाइल बा। अदिमी के मन जतना बिगड़त बा, ऊ त भासा के आईना में लउकबे करी। जब भासा अभिव्यक्ति ह त ऊ मनवे से ना उपजी! मन कल्पना प्रधान होला। भासा एगो साँचा में ढलल बात खोजेला। मन के कल्पना अनेक तरह के तरक देके काट-कूट करत रहेला। भासा ओकरो के बदरी के पानी अइसन ढोवेला आ ढोवत रहेला। जहँवा अवसर अनुकूल देखी, उहँवा बरिसि जाई। किरोध के राग के, द्वेष के, मनुहार के, रूसल-मनावन के, शादी-बिआह के, सराध के भासा का अभिव्यक्ति में अंतर आइल सुभाविक बा। अध्यातम के बात अलगे होला। एकरूपता भावना के अनुसार लिखे में आवेके चाहीं। एहिजा मानकीकरण के प्रश्न अनर्गल लागेला। बेकती के भाव-भासा में जब अंतर बा त एक तरह के उच्चारण ना हो सके। भासा में बिलगाव “तीन डेग पर पानी आ तीन कोस पर बानी” पहिलहीं से मानल बा। सिच्छित गाँव के लइकन के बोली आ अनपढ़ टोला के लइकन के बोली में अजबे अंतर दिखाई देला। स्वर, स्वन, कॉनोटेसन में एके साथे सभ में। एहसे मानकीकरण के बात लिखे में होला, बोले में ना।

आजु भोजपुरी गायन के क्षेत्र में अश्लीलता के बहुत चरचा बा। लोग-बाग चाव से सुनतो बा आ परेशानो बा। ई का हो रहल बा? का होई एकर परिनाम? का करेके चाहीं?

एहिजा एगो शास्त्रीय बात उठ गइल। अश्लील आ श्लील केकरा के कहल जाला। का साहित्य में अश्लीलता होला? समय अहथान आ व्यक्ति के साथे अश्लीलता के प्रश्न उठेला। पहिले होली आवे के दिन से पनरह दिन पहिलहीं गारी आ अश्लील

वातावरण बन जाई। बाप आ बेटा सभे ओह में भाग लेत रहन। जतना गारी के बात बा भोजपुरी में, सभमें अश्लीलता रवाँ दिखाई पड़ सकेला। साधू-संत भी अपना पदन में गारी लगा के आपन बात कहले बाड़न। 'छिनरी' के प्रयोग कबीर दास जी कइले बानी। त्रिदंडी साथी अपना प्रवचन में महिला लोग के, बाबू लोग के गारी देके बात कहत रहीं। खाकी बाबा के मुँह से गारी हम खूदे सुनले बानी। भोजपुरी में बिना गारी के अपना बात में बल, फोर्स आइए ना सके। बड़ी शक्तिशाली भाषा ह ई। इ कवनो जरिया से अपना बात के बलपूर्वक राखे के सक्ती रखेला। एह से गायन के क्षेत्र में एकर प्रयोग हो रहल बा। लेकिन ओकर बिंब पर रउआँ बिचार करब तब पाता चली कि ऊ अनुपम बा। ओहिजा एह भाषा के कवनो जवाब नइखे। भोजपुरी संगीत परधान भाषा ह। 'ए गंगा मइया तोहके पियरी चढ़इबो' आउर 'लागी नाहीं छूटे रामा' फिलिम के गीत आजो अपना जगह पर ओइसहीं बा। ई क्लासिक के लच्छन ह। हँ, बस में, ऑटो में, सार्वजनिक जगह पर ई गीतन के परचार ना करे के चाही। ई गीत ओह ट्रक वाला लोगन के कतना उपकार करत बा। जंगल में रात-दिन गाड़ी चलावत बाड़न अपना परिवार से महिनवन अलगा रहिके। बस ओही गीतन के बल बा उनका पास। एह क्षेत्र में भी कतना, कइसन लोग सोचत बा, एहू पर बिचार करे के चाही। एगो खास वर्ग बा जेकर भोजन अइसने चाही। रउआँ केकरा-केकरा के रोकबि। एकर परिनाम कवनो बुरा नइखे होखे जात। सृष्टि आ समाज अइसहीं चलत रहेला।

भोजपुरी भाषा त बहुते विकसित भाषा ह, तबे त एकरा में तत्सम शब्दन के अभाव बा। ई का हो रहल बा? का होई एकर भविष्य? का होखे के चाहीं? अइसना में एह तरह के चलन पर रउआँ का सोचतानी?

भोजपुरी भाषा बहुत शब्द के ममिला में धनी बा। ई अपना भाषा में कवनो सब्द के ले आके प्रयोग कइले बा। जे भाई लोग अरबी-फारसी के सबद ले आवत बा, ऊ फरिके से अटपट बुझा जात बा। ओह में सरलता ना आ सके एहसे सहजता भी ना आई। तत्सम के बेवहार करेके गुर सीखे के होखे त गोसाईं जी से कवि लोग के सीखे के चाहीं, भिखारी ठाकुर से सीखे के चाहीं। उर्दू के प्रयोग शैदा जी से सीखे के चाहीं। कुछ गजलन में किसान खातिर 'दहकान' के प्रयोग भइल बा। दरअसल गजल भोजपुरी के चीज़ हइए ना ह। कुछ लोग खाँटी भोजपुरी में भी नीमन प्रयास कर रहल बाड़न। गोसाईं जी संस्कृत के पूरा शब्दावली भी भरि के आपन बात कहत बानी। परभाव कहाँ कम भइल बा? 'इदमित्थं' कहि जाइ ना सोई। एहिजा 'इदमित्थं' के प्रयोग भोजपुरियों से सरल, सीधा बा। 'कहि जाइ न सोई' के साथे ओकर संगीत ओह में आ गइल बा। इदम्=ई, 'इत्थ' अतने बा। एथुआ सबद 'इत्थं' से ही बनल बा। कहे के मतलब ओतने बा। फारसी आ उर्दू के दस प्रतिसत सबद मिलल बा भोजपुरी में। गाँव के औरतो बोलत बाड़ी लेकिन जानत नइखी कि ई उर्दू ह कि भोजपुरी ह। हमनी के पढ़ल-लिखल लोग खातिर ई भेद–विभेद सब्दन के बा। जवन बहुत दिन से बाप भाई के मुँह में आपन अहथान बना लेलस, ओकरा के का कहे बा। ओकर प्रयोग रोकल भी ना जा सके। जब आदमी जान-बूझ के अपना अहंकार के पुहुट करे के फेरा में सबद जुटावे

लागेले, त सभसे बड़हन संकट ओही घरी परगट हो जाला। कविता में अटपट भाव आ सबद ना चल सके। अनकसाउर लागेला। कविता सहज भाव के बानी ह। जइसन पानी सहज बा। पीर के बेरा ओहमें कुछऊ पड़ल होखे त गरदन तक जाए में ओकरा से अनकस बरे लागेला। कविता के सहज होखे के चाही। शब्दकोष से देखल सबद के उतारल रूप ओहमें बरदास्त से बाहर हो जाला। अङेजाय ना। सज्जन, सहदय लोग सहज भाव आ सबद के जादा आदर करेलन। कवनो भाषा आदिमी के भावे परगट कइले बा, करेला। अटपट भाव आ भाषा आवेस के कारक होला। काव्य में ओकरो व्यंजना के जगह बा लेकिन हर समय नइखे। गीत आ मुक्तक में भावावेस के छनन के बहुत महातम बा लेकिन किरोध आ कामावेस के कतहूँ अवकास नइखे। ई असत् विकार ह। सत् विकारे के जगावल कविता के काम ह।

जवन बात रउआँ सोचत आ कहत बानी, ऊ आदर्श के बात ह। गंगा में भी मुरदा बहेलन आ नाला के पानी ओकरा के गंदा करेके कोशिश करेला। अरबी-फारसी के जाने वालन के सासन एहिजा बहुत दिन रहल बा। एहसे बहुत सबद त भोजपुरी के बोलचाल में बहुते दिन से फेंटा गइल बा। आउर ओह भासा-भासियन से भी बात करत, चाहे ऊ लोग के खुस करे खातिर अरबी-फारसी के सबदन के प्रयोग जदि आ गइल त कवनो बेजाँ नइखे। लेकिन जवन भीतर रचल-बसल नइखे, ओकर जान-बूझि के प्रयोग अनुचित कहल जा सकेला। लेकिन एह अनुशासन के माने वाला के बा ? सीखल त केहू चाहत नइखे। सभे सिखावल चाहता। साहित्य सबकर चारा जुटावट बा एहीके पोंछ पकड़ि के सभे बैतरनी पार करत बा। जतना प्रयोग बा ऊ साहित्ये करेला। एह से एह में गुबार उठेला आ धुआँ सगरो फइलेला। एकरा पर लगाम देबे वाला ऊ जमाना चल गइल, जब महाबीर प्रसाद दिवेदी जी रहीं। उहाँ के बाद सुरसती भी चल गइली आ कविओ लोग आपन पाट बदल देल। फिर ओही में छायावादी लोग के नीमन कविता निकलल। एह से साहित्य में आछा आ बुरा कुछऊ ना होखे। सभ अछे खातिर होला।

भोजपुरी साहित्य पर शोध का दिर्शाईं एगो सवाल बहुत उठता शोध के स्तर के लेके। कहानी गीत, गजल आदि में जे तीसों बरिस से लिख रहल बा आ पत्र-पत्रिकन में छपि रहल बा, अइसनो लोग छूट रहल बाड़े। एह लापरवाही पर का सोचल जाउ? ई लापरवाही ह? जान-बूझि के छोड़ल जाता आ कि डिग्री लेबे खातिर काम कइके आपन पिंड छोड़ावल जाता?

सोध आ आलोचना लिखल साहित्य के अनेक विधन के पीछा करत रहेला। नीमन साहित्य लिखाई त आलोचना आ सोध के दिसा भी बदली। सोध के स्थिति त डिगिरी के साथ जुड़ गइल बा। रउआँ हिन्दी के एने के सोध आ पुरनकन सोध के स्तर देख लीहीं। अन्तर अपने बुझा जाई। सोध के मतलबे ह कि जवन कोई के सामने ना आइल होखे ओकरा के उपरा दिहल जाव। ओहके बारे में पूरा विवरण दिआव आ दोसरो के रहता साफ कर दिआव। काटल, छाँटल, जोड़ल, उपरावल- सभ एकरा भीतर आवेला। भोजपूरी में अतना घटिहा सोध हो रहल बा, ऊ हिन्दिओ के मात कर देले

बा। बस पंजीयन करा लीहीं आ छछलोल गाइड बनाके जतना अनरथ करे बा करीं। रउआँ भी प्रसन्न आ गाइड भी। रोवत बाड़न त विसविदालय, भाषा, साहित्य आदि। ना कहानी कहे के ढंग बा ना शिल्प के गेयान। रउआँ छपे के बात उठवले बानी। अगर कवनो चीझ छपला के साहित्य मान लिहल जाव त कुल्ही अखबारो साहित्य ह आ विज्ञापनो साहित्य ह। कुल्ही कहावतो कविता ह। लिखे वाला तीस बरिस से लिखे चाहे पचास बरिस से। ऊ का लिखत बा, कइसन लिखत बा एपर जादा धेयान चाहीं। बहुत सा भाषा में एगो-दूगो कहानी लिखके लेखक मरि गइलन लेकिन संसार के भासा भासियन खातिर ऊ गौरव बनलन। भासा आ साहित्य एगो देस आ भासा के पूँजी ना होखे। ऊ भगवान के दीहल बरदान ह। जइसे विद्वत्ता जनम-जनम के संस्कार से आवेला, ओइसहीं रचनाकार भी कबो-कबो जनमेलन। प्रकृति उनका प अपना के नेवछावर कर देले। भोजपूरी में प्रकासको नइखन तइयार होत। कोई पढ़ेवाला भी नइखे। प्रकासक तनी पाठकन के धेयान से सोचेला। लेकिन आपन लिखS आपन छापS। एहसे साहित्य के रहता आउर कँटीला हो जाला। भासा में का लिखाइल, ई जरूरी बा। बँगला के लोग कतना भासा के संपर्क में आके तब बँगला में रचना कइलस। अंग्रेजी, लैटिन, संसकिरित के ऊ लोग जादा संपरक में रहे। कला के ओरे जादा झुकाव रहे। संगीत के साधना रहे। बड़ लोग के साथ रहे। अपना भासा आ संस्कृति पर गरब रहे। सीखे के उतसाह रहे। एक रचनाकार के दोसरा खातिर परेम आ सरधा रहे। भोजपूरी में त ठीक एकरा उलटा सभे लउकत बा। बस हम ही सभ विधा के प्रनेता हईं। हमहीं कहानी लिखलीं, एकांकी आ सभ विधा में पहिलका रचना हमार ह। हम हाला कइके भोजपूरी के संविधान के अनसूची में करवा देब। ई कोई नइखे सोचत कि हम कतना पढ़ले बानी कि हम लिखब का। हिन्दी के लेखन के अनुबाद कइल खाली भोजपूरी में बा। अब समुझि में आइल कि हिन्दी के सभ बड़ लेखक भोजपूरी छेत्र के रहलन लेकिन लिखलन ऊ हिन्दी में। काहें अइसन भइल? एह से कि न त एहिजा पढ़ेवाला बाड़न ना सेवा भाव से साहित्य के सेवा करेवाला। हिन्दी सेवा के बल पर अतना बड़ा स्वरूप के पवलस। ओहिजा आपन काम के भी दोसरका के गिनावे में गरब होत रहे। भोजपूरी में दोसरका के नीचा देखा के अपना के बड़ा बनावे में अदिमी लागल बाड़न।

कई कॉलेज, विश्वविधालय आदि खातिर भोजपुरी के पाठ्यक्रम निर्माण पर कुछ अइसनो सुने में आइल कि साहित्यकार के नाम आ विधा के चुनाव पहिले भइल आ बाद में उनुका से कुछ लिखवा के डलवा दिहल गइल। का एही से भोजपुरी के कल्याण होई?

प्रश्न से राउर जानकारी बेलकुल ठीक बा सत-प्रतिसत। कई कालेजन में पढ़ाई सुरू भइल लेकिन पढ़ावे वाला ईहो नइखे जानत कि हम का पढ़ाइब आ केकरा के पढ़ाइब। जे बा से आपन कवनो रचना लगावत बा। भाई, भतीजा, जात, बेरादर ओकरा ऊपर बा। ओकरे के जगह देबे के बा। कुल्ही विसविदालय में हिन्दी में भी पहिले अइसहीं होत रहे। जे कमिटि में रहे, ओकरे किताब प्रकासक छापत रहे। पइसा देत रहे। पहिले शीर्षक स्वीकार होखे, तब किताब छपे। प्रांतीयता बीचे आ गइल। बिहार,

उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश के लेखक लोग जादा भइलन। एहसे बिहार कहे कि हमरा के लगाव ना त तोहरो किहाँ के लेखकन के हम ना लगाइब। ई सब साहित्य के ना, छोट विचार आ संकुचित हृदय के पहिचान ह। लोभ, मात्सर्य के प्रदरसन ह। अब एह से मुकुती मिले के नइखे। भोजपूरी के कलेआन करे के पहिले अपना कलेआन के बात सोचे के चाही। दोसर चीझ ई बा कि प्रकाशकीय केन्द्र कवनो शहर में नइखे एह से लेखकन के चीझ भी केहू के भेंटात नइखे। भीतर ईमानदारी नइखे। सभे आपन काम से जादा अपना नाँव होखे के जोगाड़ में लागल बा। ओहिजा तेआग के जरूरत बा आ आपन नाँव देखल ऊ सोहाग-भाग मानत बा। राजनीति सगरो व्याप्त हो गइल बिआ। भासा आ साहित्य, देश आ जाति तेयाग के बल पर आपन स्वत्व के राछा करेला, ई भाव हमनी में हइए नइखे। दोसर बात कि हिन्दी के रच्छक पहिले राजा-महाराजा लोग रहन। अबके वातावरन बदलल बा। प्रान्त में कइएगो भासा बाड़ी। एगो अकादमी बनल त दोसरो के बने के चाही। एगो के दोसरा से परेम नइखे। लंगी मारे वाला आदत जाई ना। अकादमी बइठे के जगहा आ नोकरी दूनों के दे देलस। आजु के आदमी के एकरा से जादे का चाहीं।

भोजपुरी में साहित्य सृजन के वर्तमान से रउआँ संतुष्ट बानी ?

हम साहित्य के सेवक हईं। साहित्यकारन के जिनिगी भर गोड़ पोंछे वाला। सेवक धरम में सेवा से संतोख जहाँ भइल कि सेवा गइल। धरमे बिगड़ जाई। मतारी कतनो लइका के खिआवे, ओकरा कहवाँ संतोख होला। लेकिन भाई लोग जे आपन रचना किरिपा कइ के भेज देला, देख लीहींला। लागेला अउर बढ़ियाँ लिखा सकत रहे। छपे के ओह में रचना के अतमा मू जाला। भाषा के संस्कृति ओकर अभेयास ह, बोलीं चाहे लीखीं। रात दिन के गुनावन ह, घंटा भर के नाहीं। बड़ लेखकन के रचना के पढ़ला से भीतर से अच्छा बात के गुच्छा निकले लागेला। या त खूब पढ़िके चिंतन करी, धेआन करीं। कुल्ही सवारथ के ओकरा पर नेवछावर कर दीहीं, तबे कवनो बात अइसन निकली जे सबकर हृदया में बइठ सकेला। अपना सवारथ के परमारथ बनावले रचना करम ह। एहमें अपना प्रति आ समाज के प्रति सात्विक निष्ठा होखल जरूरी बा। साँच अतमा के गुन ह। ओकरा पाछे सभ साँच बा। ओकरे से परपंचो में सँचाई झलकेला। भिखारी ठाकुर में ऊ सँचाई उतरल बा। अबो उनकर जवाब कोई ना दे सके। किरन, कुंजन में उहे सचाई, सहजाई बन के चमकत बा। आसिफ के गाँव-घर वाला गजलन में कुछ ऊहे सचाई बा। विमल में थोरिका टेढ़िआ के ओकरा व्यक्त कइल गइल बा। हमरा जवन लउकत बा, ओकरा के अउर साफ करिके कहीं त जइसन भोजपुरी भासा के सरूप आ सकती बा, ओकरा के उतारल सधारन प्रतिभा के कवि से संभव नइखे। सभको से एह भासा में लिखल भी संभव नइखे। एकर गँवई रूप भोजपुरी से जादा हिन्दी में चित्रित भइल बा। प्रेमचन्द, जायसी जी अइसन लेखक भोजपुरी के मिललन। ऊ लोग एह संस्कृति से हिन्दी भासा के प्रभावित कइलन। भोजपुरी संस्कृति भी वीरता के कदर करेवाला ह, टेक के राखे वाला, भगती से सभकर पाँव पूजेवाला, आस्तिक समाज के उपज ह। एकर कवनो आहट कवनो रचना में हमरा कम देखेके मिलल।

एकरा में हास्य व्यंग्य त बात के डेगे-डेगे कउचत रहेला। कवनो बेपढ़ल अदिमी से बतिया के देखीं, ओकरा समुझे में तनिको देरी ना लागी। उ बड़े-बड़े पढ़ल-लिखल के बात में छाका छोड़ा दीही। हमार माई के अछर-ग्यान ना रहे लेकिन हर बात में एगो मुहबरा आ कहाउत परसंग में मढ़ देत रहे। हमरा बुझाय कि हमरा से नीमन कहनी कहि सकेले। अतना सटीक बात कि ओकर कवनो जवाबे ना जूरे। हितोपदेस के सुरुए में एगो असलोक आवेला। ओकर अरथ ह कि कुपुत्र पग-पग पर कलेस देवे वाला होला। माई कहे अपना भाषा में 'पुतर-कुपुतर भइले दुखित सरीरा। बिनु आगी काठी के भसम सरीरा॥' अब एकरा कथ से संसकिरित के पंडितन के कथ के मिला लीहीं। एह से अपना अनुभव के पका के कुछ लिखाई तबे ऊ कवनो भाषा के सिंगार बनी। भोजपूरी के साहित्य सृजन में रोआवे, हँसावे, रँभावे, कउआवे के क्षमता एने भेंटात नइखे। तबो सेवा होखत रहे के चाहीं। दादा अपना नाती से जादा चहिहें, अपना नीअन ओकरा से आसा रखिहें त छोभ होई, संतोष नाहीं। हमरा समने संसकिरित आ हिन्दी के बिसाल साहित्य बा, ओकर बूनो भर भोजपूरी में खोजब त कलेस होई कि संतोख? एहसे सभ ठीके कहे के चाहीं। लेकिन हर समया पर ई सभ खोजाई त का मिली, एकरो धेआन रखे के चाहीं।

भोजपुरी में पाठकन के अभाव काहें बाटे ?

भोजपुरी में पाठकन के अभाव आजुए नइखे, बराबरे बनल रही। एहसे कि पढ़े में एह भासा के कठिनाई बा, बोले में आसानी बा। पढ़हीं नइखे आवत लोगन के। कवनो सास्तर के बातो एह में लोग नइखे लिखत। भोजपूरी में भासन भी सभका देबे ना आवे। जे लोग अखबारन में स्तंभ लिखत बा कबो-कबो ओहमें न व्यंग बा न हास्य आउर ना कहे के चातुरी। लोहा सिंह के संवाद बात के बतंगड़ रहे, लालू ओकरा के दोहरा के लीडर हो गइलन। जगजीवन में भी भोजपुरी बोले के अद्भुत छमता रहे। लोग सुनत रहे। लेकिन लोहा सिंह जब सिनेमा बनवलन त ऊ एको दिन चलल? रेडियो में ऊ संवाद ठीक रहे। उनकर बोले के कला भी अलग रहे। एह से पढ़ेवाला लोग से सुनेवाला लोग भोजपुरी में ज्यादा बाड़े। पढ़े वाला काम शिक्षित विद्वान लोग जादा करेला। अइसन लोग मैथिली, बँगला में जादा बा। ऊ लोग अपना भाषा के प्रति जादा समरपन भाव रखेला। ऊ लोग अंग्रेजी, हिन्दी से जादा बँगला, मैथिली के अखबार पढ़ेला। सास्तर में दूनो भासा भासियन के समान गति बा। अइसन बात भोजपूरी इलाका में नइखे। ई लोग राजनीति से जादा जुड़ल बा। जातवाद जादा बा। भाषावाद कम बा। इसकूल-कवलेज अपना-अपना जात के बा। ऊ लोग एक दूसरा से द्वेष करेला। साहित्य में एकरा के टिकाऊ बनावे के जुगुत में पाठकन के अभाव रहेला। रउआँ विद्वान हईं त भोजपुरी मत बोलीं। मैथिली आ बँगला में घरे-बहरी सभ विद्वान मैथिली आ बँगला छोड़िके हिन्दी में बातें ना करिहें। एह से भोजपुरी में पाठकन के अभाव होखल सुभाविक बा। रचना छापे में, रचना के समझे में, रचना पर आपन निस्पच्छ प्रतिक्रिया देबे में भोजपूरिया लोग संकुचित मनोभाव के बाड़न। ना नीक के नीक कह सकस ना बाउर के बाउर। नीक के बाउर सिद्ध करे में ऊ आपन दिल-दिमाग

के जादा जोर से लगावेलन। दलबंदी में भोजपुरी भाइयन के जादा विश्वास बा। जइसन लाठी के जोर, ओइसने भोट के जोर। सवारथ आपन-आपन जोर मरले रहेला। आँखि खोलि के एह 'अवध के लूट' के बिसविदालय में देखलीं। प्रसाद, पंत, अज्ञेय, गुप्त जी के रचना हटवा के अपना लोगन के सड़ियल रचना मेमर लोग जे सिलेबस के मालिक रहे, ऊ लइकन से जोर-जबरदस्ती कइके पढ़वावल। भोजपुरी पाठ्य सामग्री मँगवा के देख लीहीं, ओह में का पढ़े के बा। असली बंसवाद त ओहिजे देखाला। हम सेवा में नइखीं त हमार पढ़ावल, बइठावल त ओहिजा बा। जवन चाहब तवन करब। नेत के नावें नइखे, ओहिजा बस कुनेते-कुनेते। परसंसा समाज में आछा के होखे के चाहीं आ कुमारगियन के नीना होखे के चाही। जात में पहिले कुजात छँटात रहन। समाज में उनकर हूका-पानी बन हो जात रहे। अब कुजात, कोई रहिए ना गइल। सभे ब्रह्म भाव से बराबर बा। तब पढ़ेवाला आउर सुनेवाला दूनों के महातम रहे। ऊहो परंपरा खतम हो गइल। सभे बकता हो गइल, स्रोता कतहीं खोजले पर नइखन मिलत। ओकरा खातिर दस गो भेख धरे के परत बा। रावनी भेख, जती के भेख धइला प सांति के सीता के रथ पर बइठा के ले जाइल जा सकेला, घर में राखिके घरनी ना बनावल जा सके। राजनीति के धुरंधर 'रैली' आ 'रैला' कइके भीड़ लोग जुटा सकेले लेकिन आपन एगो मत ना बना सकस। एगो मत बनावे खातिर भीतर-बाहिर एक होखे के परी। एक दिन के भोजन मिल जाए से पूरा जीवन ना कटि सके। भोजपुरी के पाठक बनावे खातिर रसगर भोजन परोसे के परी। पाठकन के रुचि पर साहित्य लिखाला आ साहित्य पाठकन में रुचि पैदा करेला। दूनों के जीवन बनल बा एक दोसरका के खातिर। भोजपुरी में लिखल ना कोई किताब खरीदे के नाँव पर पइसा खरचत बा ना उतसाह बढ़ावे खातिर परकासने करावे में मदद करत बा। एह से एकरा साहित्य के परचार नइखे हो पावत जतना चाहीं।

संस्कृत नाटकन के अनुवाद में राउर अतना रुचि काहें बाटे ?

संसकिरित के नाटक साहित्य भारथे नाहीं विश्व साहित्य के धरोहर ह। ओह में एके साथे सब कुछ बा- संगीत, नृत्य, साहित्य, कथ्य, संवाद, अभिनय, लोक, सास्तर आ वेद। कथन भंगिमा अतना कवित्वपूर्ण बा कि ओकर सानी दोसरा भासा में खोजलो प नइखे मीलत। जब हिन्दी में एगुड़ो नाटक ना लिखाइल रहे त एह भासा के नाटकन के बड़ा दिल-दिमाग लगा के विद्वान लोग एकर अनुवाद कइल। कुछ लोग आधार बना के मौलिक नाटक लिखल। चंडकौशिक के तर्ज पर 'सत्य हरिश्चन्द्र' भारतेंदु जी लिखलन। ओइसन रुचिकर, संस्कार के बनावे वाला, बहुत कम नाटक हिन्दी में लिखाइल। हमरा मन में ईहे भाव आइल कि ननदी भउजइया, विदेशिया, बेटी बेचवा, बिधवा बिआह जइसन नाटक से अकेले भोजपुरी के कलेआन ना हो सके। एह से संसकिरित के नाटकन के अनुवाद कइके देखल जाव कि ऊ भोजपुरी में उतरत बा कि ना। बड़ा नीमन लागल ऊ अनुवाद। एकरा में समेसया ई परल कि संसकिरित के नाटकन के संवाद में जगह-जगह पर सलोक (कविता) आइल बा। सलोक वर्णिक बा, ओकर अनुवाद एकदमे भोजपुरी में कठिन बा। ओकर चुनौती के लेकिन स्वीकारहीं के

रहे। भास सभसे पुरान नाटककार रहन। उनुकर नाटक दरजन में रहे। कुछ छोट कुछ बड़। जब अनुवाद सुरू कइलीं त ओकरा संवाद के भोजपूरी कविता में करे लगली बड़ा मेहनत करे के परल। ठेठ में कुछ तत्सम के सहायता से जब काज पूरा होखे लागल त बुझाइल कि कालीदास भास सभे भोजपुरिहे रहे। सोचत रहे लोग भोजपूरी में, कविता बनावत रहे संसकिरित में। एह से भोजपूरी नाटकन के पढ़िके जवन परिवेश के छाप मन पर पड़ल रहे ऊ अनुवाद से कुछ हलुक हो गइल। नाटक खातिर इतिहास के घटना वर्तमान से जादा मुफीद आ पुरजोर होला। प्रसाद जी नाटक खातिर इतिहास के घटना के चुनलीं। आजादी के समय ओकर बहुते जनता पर प्रभाव पड़ल। अब नाटक के अस्थान टी. वी. ले लेलस। नाटक श्रव्य आ दृश्य दूनो विधा के मुकुट ह। ओकर अस्थान रेडियो नाटक में श्रव्य हो गइल आ टी.वी. सिनेमा के बदला में दृश्य। तबो अबहिना टी.वी. पर भोजपूरी गीतन के पूरा शोर बनल बा।

हवलदार त्रिपाठी जी के भोजपूरी मेघदूत के अनुवाद वाला काम बहुते आछा बा लेकिन ओकर परचार कहाँ भइल? हमरे नाटक के परचार कहाँ भइल? के पढ़ल, के ओकरा पर दूगो सबद के टिपनी भेजल। हम खुस बानी कि भोजपूरी खातिर कुछ काम कइलीं। कुछ संसकिरित के बिदवान लोग एह काम के सराहल। ओही में एगो नया नाटक लिखा गइल- 'पत्थल के मेहरारू'।

रउरा मोताबिक स्टैंडर्ड भोजपुरी के क्षेत्र कौन होई ?

मानक भोजपूरी के क्षेत्र त आरा बक्सर ससराम के कहल जा सकेला लेकिन खाँटी भोजपूरी के क्षेत्र छपरा, सिवान आ चंपारन भी बा। मानक कवनो एगो के कइसे कहल जा सकेला? अंतर त सभन में थोर-जादा बड़ले बा। बनारसी भोजपूरी के आपन ठाट बा। 'ऊ कहलन, ऊ कहलँ' में का अंतर बा? अनुनासिकता त दूनो में समान बा। लेकिन खाली कहे में एगो में कोसली के गंध बा आ दोसरका में भोजपूरी के। मानकीकरण खातिर अगर प्रयास भी होखे त ऊ पूरा तवर पर ना हो पाई। ई हर भासा के सामने समस्या बा। अंग्रेजी में भी बा। अमेरिकन अंग्रेजी के आपन स्पेलिंग आ बोले के ठाट बा। एहसे एकरा खातिर 'ईहे होखे, ईहे हो सकेला' के भाव ना आइले मानकीकरण कहाई। रउआँ लिखीं, मानकीकरण हिन्दी में कहाँ आइल ? दक्खिन भारत के हिन्दी अलग पहचान बनवले बा। एहसे एह बात पर जादा सोचें के काम नइखे बुझात। कवनो एक क्षेत्र के भोजपूरी के मानक कहल कठिन बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य का भविष्य पर राउर विचार जानल चाहतानी।

भोजपूरी भासा आ साहित्य के भविष्य बहुते नीमन कहल जाई। नीमन जबून त अपना भीतर के भाव होला, वस्तुस्थिति भविष्य के केहू जानल ह ना। गुणात्मक रूप आ संख्यात्मक रूप दू गो चीझ ह। गाँधीजी त युग में केहू एगुड़े हो सकेला। लेकिन जनसंख्या भी राष्ट्र के सबलता खातिर जरूरी बा। एहसे रचनाकार भी आछा-बुरा बराबरे रहल बाड़न सभे तुलसी पत्ता ह। को बड़ छोट कहत अपराधू। काल सभसे बड़ा सत्य ह। दूध के दूध आ पानी के पानी ऊ परगट कर देला। आछा-खराब संसार में सगरो बा, जवन नीमन लागे। लोग के रुचि में विभिन्नता ओकर प्रकृति ह। ओकरा के कइसे

हटावल जा सकेला ? समय आ परिस्थिति भी एकरा में आपन पार्ट अदा करेला। आजु के अखबार साहित्य के निकाल के कइसे जी रहल बा। ओकर आपन साहित्य बन रहल बा। ओकर असर त जन-मानस पर होइबे करी। असिच्छित मेहरारू भी अंग्रेजी के सबद बोलत बाड़ी आ बिगड़ल हिंदी। हवा चल रहा है, लइकी सीट पर लुढ़क गइल। एहसे भासा साहित्य के भविष्य कवनो राष्ट्र के जीवन लेखा होला। ओकर अलगे जीवने बा। जवन चलत होखे, ऊहे ठीक ह। ना चलले ही चेतना के कमी कहल जाला।

भोजपुरी में भिन्न-भिन्न मुख्य विधन जइसे कहानी, कविता, निबंध, उपन्यास, जीवनी, नाटक, आत्मकथा, एकांकी आदि में संख्या आ स्तर- दूनो का हिसाब से सामग्री के स्थिति कइसन बा ?

भोजपूरी में देखा-देखी साहित्य के विधा लिखात बाड़ी सन। हिन्दी में जवन बा ऊ एहू में होखे के चाहीं एह भाव से। कोई समाज के बिसेसता के एह में आग्रह नइखे बुझात। कविता कहानी के बात लीहीं त केहू के प्रयास सराहनीय नइखे लागत। भाव आ कथ्य दूनो बड़ा छोट स्तर पर खड़ा लउकत बा। कई गो विश्व के अइसन भासा बा जवना के नाँव लोग नइखन जानत लेकिन ओह भासा के अनुवादित कहानी कविता पढ़िके लागेला कि रचना कवनो बड़-छोट भासा के बाँदी ना ह। ऊ जनमजाते महरानी हीय। जीवनी त कम लिखाइले बा। निबंध बहुत कम लिखाइल बाड़ सन। हिंदी के अनुवादित अंस के गंध ओह में सगरो बा। आपन चिंतन के कमी बा। उपन्यासन में गहराई से समस्या पर विचार नइखे आइल। लागत बा खाली गंदगिए के ढेर पर भोजपूरी समाज भइठल बा। लेखक ओकरे के उसका के, खोदि-खोदि के देख रहल बाड़न। आत्मकथा के त एकदमे अभाव बा। एकरा के लिखल कठिन काम ह। जीवन के सत्य के सही-सही कहल-लिखल बहुते कठिन ह। एहसे एह विधा में रचना भइल भी कठिन बा। एकांकिअन के भी खस्ता हाल बा। एकांकी आ नाटक के शोहरत ओहनी के मंचन से होत रहेला। अब कुल मंच टूटिके एगो राजनीति के मंच रह गइल। टी.वी. घरे-घरे आ गइल। एह संक्रमण काल में साहित्य के नास त होइबे करी। एकांकी के एगो दोसर रूप पनपल बा जवन टी. वी. पर आवत बा। एकांकी के जवन रूप हिन्दी में रामकुमार वर्मा आउर अश्क में मिलल ओइसन कहाँ केहू भोजपूरी में देखात बा? सारगर्भित संवाद होखे चाहे कारुणिक भाव पैदा करेवाला। भोजपूरी में 'सीता के लाल' में देख लीहीं, करुना भाव कइसे व्यक्त कइल जाला। हास्य देख लीं एके साथे। किरन जी में वीर रस देख लीहीं, सब्दसक्ती के तीनों रूप एके साथे। ओइसन कम देखे के मिली। कश्यप जी के कहानी 'मछरी' जइसन क गो कहानी लिखाइल? जतन करे के चाही, ओही में से केहू के माध्यम से सुरसती माई किरिपा करिबे करिहन। जइसन लेखक के संस्कार होई, ओइसन छबि उतरबे करी।

भोजपुरी साहित्य में आलोचक के स्थिति का बा ?

भोजपूरी में जतना मरियल स्थिति आलोचना के बा ओइसन कवनो बिधा आ कवनो भाषा के नइखे। लेखक लोग में कृति पढ़े के आउर ओकरा विषय में लिखे-सोचे के मद्दे बुझात नइखे। ऊ लोग जादा पढ़ल-लिखल नइखे। भोजपुरी के कवनो रामचन्द्र

शुक्ल त मिलिहन ना। अगर समीक्षा भी एकह गो किताब के लोग लिखित त धरियावे में आसानी होइत। रचना के उमिरि आलोचना से बढ़ेला। कइसन बा के कान्ही पर कइसन होके के चाहीं के फूल खिलावल जाला। जइसे गीत के मरम कवनो नीमन गाए वाला चाहे संगीत के जानकारी रखे वाला भीरी नीमन से पकड़ा जाला, ओइसही, पूरा साहित्य के विधन के मरम आलोचक जानेला। ओकर गुन आ दोस के सूची दूनो ओकरा भीरी टाँगल रहेला। ऊ जब रचना पर टूटेला त लेखक आ पाठक दूनो के मोहभंग करत ओकरा गतर-गतर के चीर-फार के रख देला। आलोचक साहित्य के पाया ह। ओकरा अभाव में सभ लेखक मनमाना लिखि के, छपा के बिना बनवले बादसाह हो जाला, बेलकुल स्वयंभू बादसाह। रचना के प्रति उनका मन में जनमजात मोह रहेला। ओकरा ऊपर जल्दी ऊ ना जा सकस। आलोचक, उनुका के चले सिखावेला, आ जल्दीबाजी से रोकेला, धीरज धरावेला, अउरी मेहनत, अभेआस करे के सिखावेला। अछाई के समने लावेला, जेकरा से लेखक अपनहू वाकिफ ना होखस। रचना सँगे अनकर रचना के सामने ले आके तुलना करेला। भोजपुरी में अब ले आलोचना के नाव पर जवन लिखाइल छपाइल बा ओकरा में तीन गो बात के जरूर जिकिर बा, जवन आलोचक के सोभा ना ह। पहिलका ई कि एह विधा के शुरूआत हमरा घर के फलनवाँ से भइल बा आ ओकर विकास हमरा भाई गोतिया आउर हमरा मित्रन द्वारा। दोसर ई कि एह रचना के पहिले फलनवाँ एह विषय पर लिख चुकल बाड़न। तीसर ई कि एकरा के ऊ अपने छपले बाड़न, अखिल भारतीय भोजपुरी से ओकर मंजूरी नइखन लेले। चउथा ई कि ओह संस्था के सदस्यन से भूमिका नइखन लिखववले। पाँचवा ई कि इनिकर सदस्यता शुल्क कतना दिन से बाकी बा, एह से एह पर आलोचना, समीच्छा ना लिखाई। कई गो कृति में आलोचना के नाँव पर गाली-गलौज, पुतरा-भतरा, तू छिनरा-छिनरी के गारी के तरज पर आलोचना के नाँव दरज बा। ई कवनो भासा खातिर कलंक मानल जाई। तंदुरुस्त दिमाग अपना जीवन के तुच्छ मान के चलेला आ देस, भासा, साहित्य के सेवा के आपन सरीर आ परान के ओकरा खातिर बराबर भेंट करे खातिर उतसाहित रहेला। आलोचक के कवि हृदय खूब पढ़ल-लिखल आ रचना के मरम तक पइठेके बउसाव होखे के चाहीं। पछपात मन में होखे त ओकरा के बिसार के बात कहे के चाहीं। ना त रचना बा आउर ना आलोचना। मानस ना रहित त सुकुल जी से आलोचना भी ना लिखाइत। रचना आलोचना दूनो एक-दूसरा के पूरक होला। भोजपूरी के रचनाकारन में गाड़ी छूटे वाला जल्दबाजी में रचना करे के आदत बा। ऊ लोग गिनती में, गिनावे में जादा बिसवास करेला। कइसन बा ई जादा महत्व के नइखे, कतना बा उनुका खातिर जादा मन के तुहुट करे वाला बा। ई हमार आपन अनुभव ह। चालीस-पचास बरिस के। छपनो प्रकार के भोजन जब मुँह में जाके पच जाला त ओकर रूप मले के रूप में परगट होला।

भोजपुरी भाषा में 'भी' आ 'ही' के प्रयोग होखे के चाहीं कि ना ?

'भी' आ 'ही' दूनों निहचय करे खातिर लगावल जाला। कुछ विद्वान लोग हिन्दी में एकर प्रयोग आछा ना माने। लेकिन एकर प्रयोग निहचय जरूर करेला जइसे

'हम भी जाएँगे' के भोजपूरी में दू तरह से लोग कह सकेला। पहिलका हमहूँ जाइब। हम भी जाइब। हमरो से पुछाइल। हमसे भी पुछा सकल। भोजपुरी कम में काम चला लेला । तोहरो से कहल रहे। मतलब, आपसे भी कहा गया था। एहिजा 'आपसे भी' के अरथ अपनहीं द्योतित हो जाता। हिंदी में दू गो सबदन के जोरे के काम समुच्चयबोधक कहल जाला। ई दू सबद चाहे वाक्यन के जोड़े के काम करेला। जइसे मोहन देरी से अइलन तवनों पर (तो भी) बुला लिहल गइलन। भोजपुरी में ही, हू, भी सभ एके काम करेला। ऊहो अइलन माने 'वे भी आए'। संसकिरित में 'हि' भी निश्चयात्मक ह। जइसे गीता में "ये हि संस्पर्शजा भोगाः दुःख योनव एव ते।" एहिजा भी 'हि' निस्सन्देह खातिर प्रयुक्त भइल बा। जतना भोग बा ऊ निस्सन्देह दुख के कारण ह। संसकिरित में एव, अपि आदि सबद 'भी' के अरथ में आवेला। ऊ कुल्ही निहचय से नजदीक आ जुड़ल बा। जइसे संसकिरित में एगो जुड़वाँ सबद चलेला 'एवमस्तु' एकर माने ह- 'ऐसा ही हो'। एहिजा भी 'ही' बिचारे जोग बा। गोसाईं जी अरण्य कांड में नारद जी के परथना पर असीस देत बाड़न - एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ। अब एहमें तनिको संदेह के जगहा नइखे। भोजपुरी में एकर अरथ कहल जाई- 'अइसने होई'। एहिजा 'भी' के जरूरत नइखे लेकिन निहचयता से कवनो अंतर आवेके नइखे। अब ऊहो कहलन के बदला में कोई कहे- ऊ भी कहलन, ऊहो कहलन, का अंतरे बा ? संसकिरित नियन भोजपुरी में भी नामधातु जइसन संज्ञापद से क्रियापद बनावे के छमता बा। जइसे-'आत्मनः फलं इच्छति' खातिर 'फलीयति' से काम चलि जाला। ओइसहीं भोजपुरी में भी 'भी' आ 'ही' के काम चलि जाला आ ओहू से भी काम लिहल जाला।

रउआँ सुरसती के एक-एक इंच के बहुत उपयोग करींले। खासकर भाषा विज्ञान का क्षेत्र में सुरसती सबसे अलग आ विशिष्ट बिया। रउआँ एकरा के कवना मामला में अन्य पत्रिकन से अलग देखींले ? रउआँ का सोचिके सुरसती के संपादन शुरू कइलीं आ अभी तक लक्ष्य मिलल कि ना ?

'सुरसती' निकाले के एगो खास परोजन रहे। पहिलहकी बात ई रहे कि भासा के सरूप आ भोजपूरी के प्रकृति पर केहू के धेआन ना रहे। जे जइसे लिखत रहे ओकरे के लिखे खातिर सभका के रहता बतावत रहे। भोजपूरी में बोलल आ लिखल दूनो कठिन काम रहे। भोजपूरी में खाली हिन्दी के सबदन के ले आके क्रियापद बदल लिहल भोजपूरी मानल जात रहे। भासा के सबद के कोई भीतर से जानकार होखे तब नु भासा के प्रकृति बुझाई। लिखेवाला लोग शहर में बसि गइल रहन बाबा-दादा के समया से। गाँव छूटि गइल रहे। जे लिखे ओकरा के कहल जाय कि हिंदी के भोजपुरियावल बा। ई मनोवृत्ति ठीक ना लागल। फिर चलल कि देवनागरी ना भोजपूरी के लिपि कैथी होखे के चाहीं। भोजपूरी माई के रंथ के कुल्ही घोड़ा अपना-अपना दिसा में लेके भागल चहलन। हर भासा के पासे सबदे ओकर पहचान ह। ऊ बहुते दिन से रगड़ात-फगड़ात अपना रूप में आइल बा। अब जे भासा के प्रकृति आ बा ऊ कुल्ही भासा के अलगा-अलगा बा। भासा विज्ञान के नियम-कानून के छोड़िके अपना लेखन से ओकर नेम के

ढाहे सुरू कर देलन। अँगरेजी के सबदन के भी लोग खुल के परयोग करे लागल। सधारन बात बा कि भोजपूरी श्लिष्ट भासा ना ह। संयुक्त सबद एह में ना होखे। लोग लिखे लागल। लोग कबीर के, तुलसी के आपन कवि मानत बा लेकिन उनकर भासा के रूप के अनुकरन नइखे करत। 'शब्द' के कबीर 'सबद' काहें लिखलन। शब्द लिखतन त केहू मारे लागित का? नाहीं, हर भासा के आपन प्रकृति होला। मरद के जब मेहरारू के 'रोल' करे के होला तब ओकरा बनावटीपन देखार ना होखे, बरबरे इयाद रहेला। कवनो कवि के पहचान ओकर भसे बनेला। ओकरा काल, जात, वातावरण, संस्कार सभकर सीसा भसे ह। भासा के प्रकृति के पहचान बहुते कवियन के पढ़ला पर लउके लागेला। भासा विग्यान ओकरे छानबीन के सास्तर ह। कबीर नीअन कुल्ही संत साधक अपना चित्त के अनुभूति के गहराई भासा में गोंथ दिहलन। ना समुझे वाला के ऊ बात अटपट लागेला। जे अरथ के बूझि जाला ऊ उनका के महान भासा के जानकार मानेला। पहुँचल अदिमी के रहता के दुख कबो बुझइबे ना करे। सुरसती के परकासित कइके संपादकन के सूची लमहर करे खातिर हमार उद्देस ना रहे। लोग समुझो एह भासा के सकती के। नजदीक रहेवाला आदिमी के ओकर बिसेसता जलदी समुझ में ना आवे। चंदन के जंगल में रहेवाली भीलनी ओही के जलवना बनाके तापेले। हम खाली कविता कहानी छापल पत्रिका के उद्देस ना मानीं। पहिले के हिंदी जब अइसने इस्थिति से गुजरत रहे, ओकर इतिहास बतावत बा, कि भासा पर जरूर लिखात-पढ़ात रहे। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी खुल के बहस करावत रहीं, खड़ी हिंदी कइसन होखे के चाहीं। ई अनुसासने भासा के सरूप बनवलस। हम भासा के संसकार के हर समय ओकर जरूरत मानींला। पन्ना कमे रहे। ओकर सरूप आपन चिन्हानी खुदे होला। हीरा आपन भाव अपने ना बतावे। जौहरी जानेला आ बतावेला। हमरा लक्ष के पाता नइखे। हम त अपना भोजपूरी के सकती-समरथाय के दरसन कर लेलीं, दोसरका का करी, हम कइसे कह सकत बानी। एही पत्रिका के बल पर लेख, समीक्षा, कविता आ आलोचना लिखिके आपन बूता अजमवलीं आ पवलीं कि ई खाली बोली ना ह, भासा के कुल्ही गुन एकरा में बा। बोली त एहसे ह कि बोलेवाला लोग जादा बा, लिखेवाला लोग कम बा। भासा बनिके बोली संसकारित हो जाले, जवन काम भोजपूरी में ना भइल। मैथिली के संसकिरित के विद्वान संसकारित कइले। बोलेवालन से जादा लिखेवाला लोग भइलन। भासा बन गइल। संखेआ के बल पर कवनो दरजा दिआला, ऊ बहुत टिकाऊ ना होखे। जइसे लोकतंत्र में कवनो जात के आधार प सरकार बनाके, साले भर में दू गो चुनाव करावल जरूरी हो जात बा। भासा बोलला से ना बने, लिखला से बनेला, ओकर सरूप निरधारित होला। हमार लच्छ मिले के मतलब सभे के लच्छ मिलो। लच्छ ना मिलला पर आदमी के बस पच्छ मिलेला, पछपात करेला। हाला करी, हंगामा करी, अहथान मांगी आ अहथान पुछला पर जगहे ना बताई। एहसे जरूरी बा एह भासा के मजबूत करे के। ऊ आछा साहित्त देले पर मजगूती बुझाई। संत लोग के साहित्य, उनकर बात भिखारी के रचनन में कइसन फइलल बा। कोई पढ़े आ धेआन दे। कवना रूप में आके, ऊ जादा जनता के नजदीक गइल। एह से आगे बढ़े के चाही, आउरी चले के चाही। कुछ दूर बा हिमालय, हिम्मत करे चाही।

(सँझवत, अंक-1, अप्रैल-जून, 2019 से)

भोजपुरी साहित्य मण्डल बक्सर के बैनर तले भोजपुरी पत्रिका 'सँझवत' का हुआ लोकार्पण

न्यूज विजन। बक्सर

भोजपुरी साहित्य मण्डल बक्सर के बैनर तले डॉ० रामरक्षा मिश्र विमल द्वारा संपादित भोजपुरी पत्रिका 'सँझवत' का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर 'सँझवत' पर बतकही विषय पर साहित्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। सभा की अध्यक्षता करते हुए भोजपुरी साहित्य मण्डल, बक्सर के अध्यक्ष प्रो० अरुण मोहन भारवि ने कहा कि 'सँझवत' भोजपुरी की ऐसी पत्रिका है जो निरंतर भोजपुरी साहित्य को समृद्ध कर रही है। यह पत्रिका नवलेखन को जन्म दे रही है। सँझवत भोजपुरी का भविष्य तय करने वाली पत्रिका है।

इस अवसर पर मंच का संचालन भोजपुरी साहित्य मण्डल के महासचिव डॉ० वैरागी प्रभाष चतुर्वेदी ने किया। डॉ० वैरागी ने कहा कि सँझवत भोजपुरी की सतत निकलने वाली एक ऐसी पत्रिका है जो भोजपुरी साहित्य के बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक है 1 यह पत्रिका अपने संपादन और गंभीर लेखन के लिए वर्तमान समय में भोजपुरी की एक महत्वपूर्ण पत्रिका बन गई है 1 पत्रिका के संपादक डॉ० रामरक्षा मिश्र विमल ने इस पत्रिका के निरंतर प्रकाशन करने और भोजपुरी भाषा साहित्य के प्रति अपने को संकल्पित रखने की बात कही। सभा में उपस्थित वक्ताओं में डॉ० विष्णुदेव तिवारी ने कहा कि साहित्य प्राणिमात्र की संवेदना का विकास है। शिवबहादुर पाण्डेय प्रीतम ने कहा कि सँझवत भाषा के सुधार और विकास की पत्रिका है।

गणेश उपाध्याय ने आभार ज्ञापन किया और भोजपुरी के विकास के लिए शुभकामनाएं दी। श्री धन्नुलाल प्रेमातुर, श्री भगवान पाण्डेय, श्री उमेश कुमार पाठक रवि एवं श्री संजय गुप्त सागर ने भी अपनी बात रखी। इस अवसर पर भोजपुरी साहित्य मण्डल के संरक्षक कवि धन्नुलाल प्रेमातुर, कवि रामेश्वर मिश्र विहान, मनोज चौबे, राजरमन पाण्डेय, धनंजय गुड़ाकेस, राकेश कुमार, रामेश्वर मिश्रा विहान, कौशल शर्मा, उमेश पाठक रवि, बृजेश कुमार शर्मा, रामेंद्र मिश्र, शशि भूषण मिश्र, फारुख सैफी ने अपनी बात रखी।

शशिकमल पुस्तकालय की एक साहित्यिक गोष्ठी में 'सँझवत' का लोकार्पण।

बतकही भाग-2
(ललित निबंध-सँगरह)
नन्द किशोर तिवारी
अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर समर्पित
अभिनन्दन ग्रन्थ
प्रो. नन्द किशोर तिवारी
हृदय-सन्देश
पँच्यल के मेहरारू
डॉ० नन्दकिशोर तिवारी
अभिषेक
डॉ० नन्दकिशोर तिवारी
दूतवाक्यम्
डॉ० नन्दकिशोर तिवारी
महाकवि भास रचित
प्रतिमा नाटकम्
डॉ० नन्दकिशोर तिवारी
रोहतास जिला भोजपुरी परिषद्
स्वप्नवासवदत्तम्
सपन-सुनरी
सुरसती
प्रत्याभिता
नाटकरतनमाला
मालविकाग्निमित्र
स्वप्नवासवदत्ता
विक्रमोर्वशी
अभिज्ञान शाकुन्तल
नागानन्द
नन्द किशोर तिवारी
कर्णभार
एवम्
मध्यम व्यायोग
डॉ. नन्दकिशोर तिवारी
उरुभंग
डॉ० नन्दकिशोर तिवारी
रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद्
निरगुनिया संतों का माया-दर्शन
नन्द किशोर तिवारी